हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुलफ़ा-ए-किराम के अल्लाह से संबंध के वृत्तान्त

प्रकाशक

नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान

TALLUQ BILLAH

AUR

Hazrat Masih-e-Maūd[as] Aur Khulafā-e-Kirām

Key Waqi'āt

(in Hindi)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
और
ख़ुलफ़ा-ए-किराम के अल्लाह से संबंध के वृत्तान्त

प्रकाशक
नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान

नाम पुस्तक : हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और खुलफ़ा-ए-किराम के अल्लाह से संबंध के वृत्तान्त
संकलन कर्ता : मौलवी मन्सूर अहमद साहिब मसरूर एडीटर साप्ताहिक बद्र क़ादियान, मुकर्रम मौलवी अब्दुर्रशीद साहिब मुरब्बी सिलसिला आफ़ शूरत-कश्मीर
अनुवादक : डाक्टर अन्सार अहमद, एम.ए., एम.फिल, पी एच,डी, पी.जी.डी.टी., आनर्स इन अरबिक
टाइप, सैटिंग : महवश नाज़
संस्करण : प्रथम संस्करण (हिन्दी) मार्च 2019 ई०
संख्या : 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Compiler : Maulvi Mansoor Ahmad Masroor Editor The Weekly BadrQadian, Maulvi Abdurasheed Murabbbi Silsila Shoorat, Kashmir
Translator : Docter Ansar Ahmad, M.A., M.Phil, Ph.D, P.G.D.T., Hons in Arabic
Type Setting : Mahwash Naaz
Edition : 1st Edition (Hindi) March 2019
Quantity : 1000
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

मौलवी मन्सूर अहमद साहिब मसरूर एडीटर साप्ताहिक बद्र क़ादियान और मुकर्रम मौलवी अब्दुर्रशीद साहिब मुरब्बी सिलसिला आफ़ शूरत कश्मीर द्वारा संकलित इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद डाक्टर अन्सार अहमद साहिब ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रीव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए, मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य, मुकर्रम इब्नुल मेहदी एम. ए और मुकर्रम मुहियुद्दीन फ़रीद एम. ए. ने इसका रीव्यू किया है। अल्लाह तआला इन सबको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

व अला अब्दिहिल मसीहिल मौऊद

प्रस्तावना

इस्लाम में इबादत का मूल उद्देश्य यह है कि मानवीय जीवन अल्लाह तआला की ख़ुशी और उसके आदेशों के अनुसार व्यतीत हो और ख़ुदा का आत्मज्ञान प्राप्त हो। अत: एक मोमिन के लिए आवश्यक है कि वह अपने पैदा होने के उद्देश्य को समझने और अल्लाह तआला से सच्चा संबंध पैदा करने की कोशिश करे। और यही उद्देश्य मनुष्य की पैदायश का भी है कि वह अल्लाह तआला से सच्चा संबंध पैदा करे। तो जब भी कोई ख़ुदा का अवतार दुनिया में आता है तो उसके आने का मूल उद्देश्य यही होता है कि लोगों का ख़ुदा तआला से संबंध पैदा किया जाए। अल्लाह तआला का अस्तित्व दूर से दूर है। मानवीय बुद्धि स्वयं उस तक नहीं पहुँच सकती। क्योंकि पवित्र आयत-

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿۱۰۴﴾

(सूरह अल अन्आम-104)

में ख़ुदा की मारिफ़त (आत्मज्ञान) का मामला बड़े ही उत्तम और जामिअ शब्दों में वर्णन किया गया है। अल्लाह तआला की मारिफ़त और ख़ुदा से संबंध के बारे में मारिफ़त का पहला माध्यम अल्लाह तआला के "अनलमौजूद" (मैं मौजूद हूं) की गवाही देना है। जैसा कि अल्लाह तआला ने कायनात (ब्रह्माण्ड) को पैदा करने के कारण हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के

बारे में फ़रमाया -

(सूरह ज़ुहा - 8) وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى

अर्थात् हे रसूल मक़्बूल हम ने तुझे अपनी तलाश में संसार और सांसारिक संसाधनों से विमुख पाया तो हमने आगे बढ़कर स्वयं मार्ग-दर्शन के सामान किए।

इसी प्रकार ग़ैब की अभिव्यक्ति और क़ुदरत के प्रदर्शन का अवलोकन, अध्ययन, ख़ुदा के विशेष गुणों और महान कार्यों का प्रकटन और आकाशीय पिण्डों पर वास्तविक उपास्य का ज़बरदस्त कंट्रोल ये सब अल्लाह तआला की मारिफ़त (पहचान) की प्राप्ति का माध्यम हैं और ख़ुदा से संबंध पैदा करने के उत्तम और उच्चतम माध्यम हैं। और फिर जो लोग ख़ुदा की मारिफ़त में उन्नति करते हैं और अपने पैदा होने का मूल उद्‌देश्य-

(सूरह अज़्ज़ारियात - 57) وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنَ

को पूरा करते हैं, अल्लाह तआला उनका अभिभावक और कारसाज़ होता है। और उनकी मान्यता के निशान दुनिया पर प्रकट करता है और उनको दुआ की स्वीकारिता का चमत्कार प्रदान करता है, हमेशा अपनी सुरक्षा के घेरे में रखता है, उनके हाथ को अपना हाथ ठहराता है। जैसा कि फ़रमाया -

और (सूरह अल अनफ़ाल 18) مَارَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى

مَنْ عَادَلِىْ وَلِيًّا فَقَدْ اٰذَنْتُهٗ بِالْحَرْبِ

अर्थात् जो मेरे वली का दुश्मन हो मैं उसको कहता हूं कि अब मेरी लड़ाई के लिए तैयार हो जा।

सय्यिदिना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल

अज़ीज़ की ओर से मान्यता प्राप्त मज्लिस शूरा 2015 के प्रस्ताव के तहत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और खुलफ़ा-ए-किराम के ख़ुदा से संबंध के वृत्तांतों के विषय पर इस पुस्तिका को नज़ारत नश्र-व-इशाअत क़ादियान की व्यवस्था के अन्तर्गत तैयार किया गया है। इस पुस्तिका के लिखने में मुकर्रम मौलवी मन्सूर अहमद साहिब मसरूर एडीटर साप्ताहिक बद्र क़ादियान और मुकर्रम मौलवी अब्दुर्रशीद साहिब ज़िया प्रचारक दावत इलाल्लाह शुमाली हिन्द ने सहयोग किया है। अल्लाह दोनों को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तिका में जमाअत के दोस्तों के ईमान में वृद्धि के लिए सय्यिदिना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुल्फ़ा-ए-अहमदियत के कुछ ईमान में वृद्धि करने वाले सुनहरी वृत्तांतों का उल्लेख किया गया है। इन वृत्तांतों से शिक्षा प्राप्त करके हमें ख़ुदा के सानिध्य की प्राप्ति में प्रगति करने के प्रयास में जुट जाना चाहिए। अतः इसके लिए नमाज़ों और ख़ुदा के ज़िक्र की आदत डालनी चाहिए और अल्लाह तआला के बताए हुए आदेशों के अनुसार अमल करना चाहिए ताकि उसके मार्ग पर चलकर हम जीवन के वास्तविक उद्देश्य को पाएं और उस के द्वार के भिक्षु बन कर उसके सानिध्य प्राप्त बन जाएं। जब हम ख़ुदा तआला के सानिध्य प्राप्त बन जाएँगे तो कोई चीज़ हमारी उन्नति में रोक नहीं बन सकती। इंशाअल्लाह

(नाज़िर नश्र-व-इशाअत क़ादियान)

ख़ुदा से संबंध

(तिरयाकुल क़ुलूब पृष्ठ-1,
संस्करण 1902 ई० के परिशिष्ट से उद्धृत)

कभी नुसरत नहीं मिलती दरे मौला से गंदों को
कभी ज़ाए नहीं करता वह अपने नेक बन्दों को

वही उसके मुकर्रब हैं जो अपना आप खोते हैं
नहीं रह उसकी आली बारगाह तक ख़ुद पसन्दों को

यही तदबीर है प्यारो कि मांगो उससे कुर्बत को
उसी के हाथ को ढूंढो जलाओ सब कमन्दों को

(दुर्रे समीन)

परिचय

सय्यिदिना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम का जन्म क़ादियान दारुल अमान में 13 फ़रवरी 1835 ई. जुम्अः के शुभ दिन नमाज़ फज्र के समय हुआ। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार अल्लाह तआला ने आपको इस युग का इमाम, मसीह और महदी बना कर अवतरित किया।

यहां यह बताना आवश्यक है कि जमाअत अहमदिया की आस्थानुसार मसीह-व-महदी दो अलग-अलग अस्तित्व नहीं हैं जैसा कि हमारे ग़ैर अहमदी भाइयों की आस्था है, अपितु एक ही अस्तित्व को अल्लाह तआला ने दो हैसियतों के कारण दो नाम प्रदान किए हैं। जैसा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

لَاالْمَهْدِیُّ اِلَّا عِیْسٰی

कि ईसा और महदी एक ही अस्तित्व हैं। आप को अल्लाह तआला ने मसीह का नाम इसलिए दिया कि आप अलैहिस्सलाम ने ईसाइयों से विशेष तौर पर मुक़ाबला करना था और उनकी आस्थाओं की ग़लती उन पर सिद्ध करनी थी। और महदी का मतलब है अल्लाह तआला से हिदायत पाया हुआ। महदी का नाम इसलिए दिया कि आप अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से हिदायत पाकर मानव जाति का मार्ग-दर्शन करना था।

आप अलैहिस्सलाम अल्लाह के नबी थे। अल्लाह तआला ने

आप को नबी के उपनाम और उपाधि से सम्मानित किया। न केवल आप को नबी के महान रूहानी पद से सम्मानित किया अपितु आप को कुछ नबियों के नाम प्रदान किए इसलिए कि उनकी विशेषताएं आप में मौजूद थीं। अतः अल्लाह तआला ने आपको इल्हाम द्वारा फ़रमाया-

جَرِیُّ اللّٰہِ فِیْ حُلَلِ الْاَنْبِیَآءِ

इस का मतलब यह है कि यह अल्लाह का पहलवान है जो नबियों के लिबास में है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

मैं कभी आदम कभी मूसा कभी याकूब हूं
नीज़ इब्राहीम हूं नस्लें हैं मेरी बे शुमार

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पूर्ण ग़ुलामी, पूर्ण अनुकरण के परिणाम स्वरुप अल्लाह तआला ने आपको नुबुव्वत के पद से सम्मानित किया। आप आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण कर्ता नबी थे। आपको आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी पर गर्व था। अल्लाह तआला ने आपको आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण करने वाले नबी के तौर पर अवतरित किया ताकि आप के द्वारा अन्तिम युग में पतनशील इस्लाम को जीवित किया जा सके। अतः अल्लाह तआला ने अपने धर्म इस्लाम की सेवा ऐसे शानदार रंग में की कि जिस का उदाहरण पिछले चौदह सौ वर्ष में नहीं मिलता।

जब आप अलैहिस्सलाम मामूर हुए उस समय अन्धकार अपनी चरम सीमा पर था। आप ने एक अत्यन्त नेक और पवित्र जमाअत की नींव रखी। यह नेक और पवित्र जमाअत धीरे-धीरे बढ़ कर अब

दुनिया के 207★ देशों में फैल गई है जो अपने संयम, कुर्बानियों और इस्लाम के प्रचार-प्रसार के कारण मुसलमानों के दूसरे समस्त फ़िर्क़ों से अलग है।

26 मई 1908ई० को आप अलैहिस्सलाम का स्वर्गवास हुआ। आप के स्वर्गवास होने के पश्चात जमाअत अहमदिया में ख़िलाफ़त का सिलसिला आरम्भ हुआ। यह ख़िलाफ़त का सिलसिला भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के ठीक अनुसार स्थापित हुआ। आप के ख़ुल्फ़ा-ए-किराम के नाम इस प्रकार हैं-

(1) हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन खलीफ़तुल मसीह प्रथम[रज़ि०]

(2) हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद खलीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि०]

(3) हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद खलीफ़तुल मसीह तृतीय[रह०]

(4) हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद खलीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०]

(5) हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ सन 2003ई० में आप अलैहिस्सलाम के पांचवे ख़लीफ़ा निर्वाचित हुए। इस समय आपकी ख़िलाफ़त जारी है।

ख़िलाफ़त अल्लाह तआला की एक प्रतिष्ठित नेमत है। जमाअत अहमदिया में नेकी, संयम, एकता और सहमति, बेजोड़ कुर्बानी, इस्लाम की व्यवस्थित रंग में पूरी दुनिया में दावत, प्रचार और मानवता की सेवा सब कुछ इसी ख़िलाफ़त के कारण है जिससे आज दूसरे मुसलमान वंचित हैं।

★**नोट -** इस समय जमाअत अहमदिया कुल 212 देशों में स्थापित हो चुकी है। (प्रकाशक)

इस पुस्तिका का शीर्षक "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आदरणीय ख़लीफ़ाओं के ख़ुदा से संबंध के वृत्तान्त" है।

इसलिए इसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के ख़लीफ़ाओं के ख़ुदा से संबंध के वृत्तान्त वर्णन किए जाते हैं।

(नज़ारत नश्र-व-इशाअत क़ादियान)

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद

अल्लाह तआला जिनको लोगों के सुधार के लिए नबी बनाकर भेजता है वे दुनिया में सर्वाधिक प्रेम अपने स्रष्टा, मालिक और अपने भेजने वाले से करते हैं। सय्यिदिना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी अपने स्रष्टा, मालिक और अद्वितीय ख़ुदा से असीम प्रेम था। हम आपके निबंधों और भिन्न-भिन्न घटनाओं को पढ़कर केवल एक अनुमान लगाते हैं कि आप अपने ख़ुदा से असीम प्रेम करते थे। परन्तु वास्तविकता यह है कि आपके हृदय में अल्लाह तआला का कितना अधिक प्रेम था? और आप के हृदय में प्रेम की कैसी-कैसी भावनाएं मौजें मारती थीं? इस का सही-सही अनुमान लगाना किसी के बस की बात नहीं। आप अलैहिस्सलाम ने जीवन पर्यन्त अल्लाह तआला के आदेशों का अनुकरण किया। आप उन समस्त बातों से बचे जिनसे बचने का अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुर्आन में आदेश दिया है और समस्त उन आदेशों का पालन किया जिन के पालन करने का अल्लाह तआला ने आदेश दिया है। अपने ख़ुदा पर पूर्ण भरोसा करने वाले थे। किसी मनुष्य पर एक पल के लिए भी और किसी सांसारिक समान पर भरोसा नहीं किया और न किसी को ख़ुदा के अतिरिक्त अपना सहायक और मददगार समझा। जब आप अलैहिस्सलाम के पिता श्री हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब का स्वर्गवास हुआ तो आपके दिल में विचार गुज़रा कि पिता श्री गुज़र गए जो मेरे लिए सहारा थे। यह एक स्वाभाविक विचार था इस का यह मतलब नहीं कि इस अवसर

पर अल्लाह के अस्तित्व या बरकतों का विचार आप के मस्तिष्क में नहीं था। आप तो बचपन से ही अपने ख़ुदा के प्रेम में गुम थे और उसी के होकर रह गए थे। जब यह विचार गुज़रा तो तुरंत अल्लाह तआला की ओर से इल्हाम हुआ-

اَلَیۡسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبۡدَہٗ

कि क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं। इस इल्हाम ने आप अलैहिस्सलाम को अल्लाह के प्रेम में और भी बढ़ा दिया और यह प्रेम का संबंध और सुदृढ़ हो गया। अल्लाह तआला से आप के प्रेम की तो यह अवस्था थी कि अल्लाह तआला आप का हो गया था और आप अल्लाह तआला के हो गए थे। अल्लाह तआला ने आप को जरियुल्लाह की उपाधि से गौरवान्वित किया। अर्थात अल्लाह का पहलवान। और आप ने अपने आप को ख़ुदा का शेर कहा। अतः आप अपनी एक काव्य पंक्ति में अपने विरोधी को संबोधित करते हुए फ़रमाते हैं-

जो ख़ुदा का है उसे ललकारना अच्छा नहीं
हाथ शेरों पर न डाल ऐ रूबए ज़ारो निज़ार

ख़ुदा तआला से आप अलैहिस्सलाम के प्रेम का अनुमान निम्नलिखित लेख से लगाया जा सकता है कि आप अलैहिस्सलाम के हृदय में कितनी तड़प थी कि जो ख़ुदा मुझे मिला है काश दुनिया उसको पहचाने, उस से दिल लगाए और उस पर विश्वास कर ले। अतः आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

"क्या दुर्भाग्यशाली वह इन्सान है जिस को अब तक
यह पता नहीं कि उसका एक ख़ुदा है जो प्रत्येक चीज़

पर सामर्थ्यवान है। हमारा स्वर्ग हमारा ख़ुदा है, हमारे उच्चानंद हमारे ख़ुदा में हैं क्योंकि हमने उसको देखा और प्रत्येक सुन्दरता उसमें पाई। यह दौलत लेने योग्य है यद्यपि प्राण देने से मिले और यह लअल खरीदने योग्य है यद्यपि सम्पूर्ण अस्तित्व खोने से प्राप्त हो।

हे वंचितो! इस झरने की ओर दोड़ो कि वह तुम्हें सैराब करेगा। यह जीवन का झरना है जो तुम्हें बचाएगा। मैं क्या करूं और किस प्रकार इस ख़ुशख़बरी को दिलों में बिठा दूं। किस ढफ़ली से मैं बाजारों में मुनादी करूं कि तुम्हारा यह ख़ुदा है! ताकि लोग सुन लें और किस दवा से मैं इलाज करूं ताकि सुनने के लिए लोगों के कान खुलें।

यदि तुम ख़ुदा के हो जाओगे तो निश्चित समझो कि ख़ुदा तुम्हारा ही है। तुम सोए हुए होगे और ख़ुदा तुम्हारे लिए जागेगा। तुम दुश्मन से लापरवाह होगे और ख़ुदा उसे देखेगा और उसके षड्यंत्र को तोड़ेगा। तुम अभी तक नहीं जानते कि तुम्हारे ख़ुदा में क्या-क्या कुदरतें हैं और यदि तुम जानते तो तुम पर कोई ऐसा दिन न आता कि तुम दुनिया के लिए बहुत शोकग्रस्त हो जाते। एक व्यक्ति जो एक ख़ज़ाना अपने पास रखता है क्या वह एक पैसे के व्यर्थ होने से रोता है और चीखें मारता है और मरने लगता है। फिर यदि तुम को उस खज़ाने की सूचना होती कि ख़ुदा तुम्हारा प्रत्येक आवश्यकता के समय काम आने वाला है तो तुम दुनिया के लिए ऐसे बेसुध क्यों होते। ख़ुदा

एक प्यारा खज़ाना है उसकी क़द्र करो कि वह तुम्हारे प्रत्येक क़दम में तुम्हारा सहायक है तुम उसके बिना कुछ भी नहीं और न तुम्हारे सामान और उपाय कुछ चीज़ हैं।"

(कश्ती नूह, पृष्ठ-19,20, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-19, पृष्ठ-21,22)

आप अलैहिस्सलाम के अल्लाह तआला से संबंध के कुछ ईमानवर्धक वृतान्त निम्नलिखित हैं-

नमाज़ से प्रेम

आप अलैहिस्सलाम को बचपन से ही नमाज़ से प्रेम था। नमाज़ का प्रेम भी वास्तव में अल्लाह से प्रेम के परिणाम स्वरूप ही पैदा होता है। आप अलैहिस्सलाम दिन भर मस्जिद में ही पड़े रहते और इस्लामी पुस्तकों के अध्ययन में डूबे रहते। अधिकांश समय मस्जिद में गुज़ारने के कारण लोगों में 'मसीतड़' मशहूर थे। बहुत ही कम आयु में नमाज़ से इश्क और प्रेम की एक घटना वास्तव में आपके ख़ुदा से संबंध का मार्ग दर्शन करती है इस प्रकार से है-

हज़रत अक्दस अलैहिस्सलाम को आरंभ से नमाज़ के साथ गहरा सम्बन्ध और स्वाभाविक लगाव था जो आयु के अंत तक जैसे एक नशे के रूप में आपके हृदय और मस्तिष्क पर छाया रहा। जमाअत अहमदिया के प्रथम इतिहासकार हज़रत शेख़ याक़ूब[रज़ि०] अली साहिब इरफ़ानी ने आप की प्रारंभिक जीवनी में यह अदभुत घटना दर्ज की है कि जब आप की आयु बहुत कम थी तो उस समय आप अपनी सम आयु लड़की से (जो बाद में आप से ब्याही गई) फ़रमाया करते थे- "ना मुरादे दुआ कर कि ख़ुदा मुझे नमाज़ नसीब करे।" यह वाक्य

देखने में बहुत ही संक्षिप्त है परन्तु इस से ख़ुदा से प्रेम की लहरों का पता चलता है जो विलक्षण रूप में आरंभ से आप के अस्तित्व पर उतर रही थीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने इन्हीं स्वाभाविक रुझानों का चित्रण करते हुए एक स्थान पर लिखा है-

اَلْمَسْجِدُ مَكَانِيْ وَالصَّالِحُوْنَ اِخْوَانِيْ

وَذِكْرُ اللّٰهِ مَالِيْ وَخَلْقُ اللّٰهِ عَيَالِيْ

फ़रमाते हैं कि प्रारंभिक काल ही से मस्जिद मेरा मकान, नेक लोग मेरे भाई ख़ुदा का स्मरण करना मेरी दौलत है और सृष्टि मेरा परिवार और ख़ानदान है।

(तारीख़-ए-अहमदियत जिल्द-1, पृष्ठ-53)

कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी नमाज़ को कभी नष्ट नहीं होने देते अपितु हर समय नमाज़ अदा करते। नमाज़ वास्तव में अल्लाह को स्मरण करना है जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है-

(सूरह ताहा - 15) اَقِمِ الصَّلٰوۃَ لِذِكْرِيْ

अर्थात् मुझे स्मरण करने के लिए नमाज़ स्थापित कर। तो नमाज़ को हर हाल में प्राथमिकता देना यह आप अलैहिस्सलाम के ख़ुदा से संबंध की एक बड़ी निशानी है। इस बारे में दो वृतान्त प्रस्तुत हैं-

चूंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने जीवन में विभिन्न अवसरों पर मुक़द्दमों की पैरवी में अदालत में उपस्थित होते रहे। इसलिए निम्नलिखित दो वृतान्त ऐसे ही अवसरों के हैं अहमदियत के इतिहासकार मौलाना दोस्त मुहम्मद शाहिद साहिब (स्वर्गीय) लिखते हैं-

मुक़द्दमे चाहे कितने पेचीदा, अहम् और आप के अस्तित्व या

ख़ानदान के लिए दूरगामी परिणामों के चरितार्थ होते आप नमाज़ की अदायगी को हर स्थिति में प्राथमिक रखते थे। अतः आप का रिकार्ड है कि आप ने इन मुक़द्दमों के दौरान कभी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होने दी। बिल्कुल कचहरी में नमाज़ का समय आता तो इस पूर्ण संलग्नता तथा रुचि और शौक़ से नमाज़ में व्यस्त हो जाते कि जैसे आप केवल नमाज़ पढ़ने के लिए आए हैं कोई और कार्य आप की दृष्टि में नहीं है। कभी ऐसा होता कि आप ख़ुदा तआला के सामने खड़े होकर विनय और निवेदन कर रहे होते और मुकद्दमे में पुकारा जाता परन्तु आप की लीनता, ख़ुदा पर भरोसा और हार्दिक उपस्थिति की यह अवस्था थी कि जब तक वास्तविक मौला की चौखट पर जी भर कर विनय और गिड़गिडाना न कर लेते उसके दरबार से वापसी का विचार न लाते। अतः आप अलैहिस्सलाम स्वयं फ़रमाते हैं-

> "मैं बटाला में एक मुक़द्दमे की पैरवी के लिए गया। नमाज़ का समय हो गया और मैं नमाज़ पढ़ने लगा। चपरासी ने आवाज़ दी परन्तु मैं नमाज़ में था प्रतिवादी प्रस्तुत हो गया और उसने यक तरफ़ा कार्रवाई से फ़ायदा उठाना चाहा और इस बात पर बहुत बल दिया, परन्तु अदालत ने परवाह न की और मुक़द्दमा उसके विरुद्ध कर दिया। और मुझे डिग्री दे दी। मैं जब नमाज़ से निवृत्त होकर गया तो मुझे विचार था कि शायद हाकिम ने क़ानूनी तौर पर मेरी अनुपस्थिति को देखा हो। परन्तु जब मैं उपस्थिति हुआ और मैंने कहा कि मैं तो नमाज़ पढ़ रहा था तो उसने कहा कि मैं तो आपको डिग्री दे चुका हूं।"

अदालत से अनुपस्थिति के बावजूद आप के पक्ष में फ़ैसला हो जाना एक बड़ा ख़ुदाई निशान था जो आपके चरमोत्कर्ष की विनय और गिड़गिड़ाने के परिणामस्वरुप प्रकट हुआ।

(तारीख़ अहमदियत जिल्द-1, पृष्ठ-77)

यह लड़का नुबुव्वत के योग्य है

जैसा कि वर्णन किया गया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बचपन से ही नितान्त पवित्र स्वभाव और संयम का आचरण रखते थे। आपकी ख़ुदा दिखाने वाली आदतों का प्रत्येक शालीन व्यक्ति आशिक था। निम्नलिखित घटना आप के बचपन से ही नेक और संयमी होने पर भली-भांति प्रकाश डालती है-

मियाँ मुहम्मद यासीन साहिब अहमदी टीचर बलोचिस्तान की रिवायत है कि

> "मुझे मौलवी बुरहानुद्दीन[रज़ि॰] साहिब ने बताया कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मौलवी ग़ुलाम रसूल साहिब किला मियां सिंह के पास गए और उस समय हुज़ूर अभी बच्चे ही थे। उस मज्लिस में कुछ बातें हो रही थीं। बातों-बातों में मौलवी ग़ुलाम रसुल साहिब ने जो ख़ुदा के वली और साहिबे करामत थे फ़रमाया कि यदि इस युग में कोई नबी होता तो यह लड़का नुबुव्वत के योग्य है। उन्होंने यह बात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर प्रेम से हाथ फेरते हुए कही। मौलवी बुरहानुद्दीन साहिब कहते हैं कि मैं स्वयं

उस मज्लिस में मौजूद था। मुकर्रम मौलवी ग़ुलाम मुहम्मद साहिब निवासी बेगूवाला ज़िला सियालकोट ने बताया कि मैंने यह बात अपने पिता मुहम्मद क़ासिम साहिब से इसी प्रकार सुनी थी।

(तारीख़ अहमदियत जिल्द-1, पृष्ठ-53)

मैं तो नौकर हो गया हूं

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पिता श्री को आप की बड़ी चिंता रहती कि मेरा छोटा बेटा दिन भर मस्जिद में ही पड़ा रहता है केवल नमाज़ क़ुर्आन पढ़ता है। अन्ततः यह अपनी पत्नी और बच्चों का किस प्रकार पोषण करेगा? घर-गृहस्थी के योग्य किस प्रकार बनेगा? अतः इसी चिंता में एक बार आप के पिता श्री ने आप की सरकारी नौकरी लगाना चाही। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने पिता श्री को उत्तर देते हुए कहा कि मैंने जहां नौकरी करनी थी कर ली है। मैं तो नौकर हो चुका हूं। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए[रज़ि] वर्णन करते हैं कि-

वर्णन किया मुझ से झंडा सिंह निवासी काहलवां ने कि मैं बड़े मिर्ज़ा साहिब के पास आया जाया करता था। एक बार मुझे बड़े मिर्ज़ा साहिब ने कहा कि जाओ ग़ुलाम अहमद को बुला लाओ। एक अंग्रेज़ हाकिम मेरा परिचित ज़िला में आया है उसकी इच्छा हो तो किसी पद पर नौकर करवा दूं। झंडा सिंह कहता था कि मैं मिर्ज़ा साहिब के पास गया तो देखा चारों ओर पुस्तकों का ढेर

लगा कर उसके अन्दर बैठे हुए कुछ अध्ययन कर रहे हैं। मैंने बड़े मिर्ज़ा साहिब का सन्देश पहुंचा दिया। मिर्ज़ा साहिब आए और उत्तर दिया "मैं तो नौकर हो गया हूं" बड़े मिर्ज़ा साहिब कहने लगे कि अच्छा क्या वास्तव में नौकर हो गए हो? मिर्ज़ा साहिब ने कहा हां हो गया हूं। इस पर बड़े मिर्ज़ा साहिब ने कहा अच्छा नौकर हो गए हो तो ख़ैर है।

ख़ाकसार कहता है कि काहलवां क़ादियान से दक्षिण की ओर दो मील के फासले पर एक गांव है और नौकर होने से अभिप्राय ख़ुदा की नौकरी है। और ख़ाकसार कहता है कि झंडा सिंह कई बार यह रिवायत वर्णन कर चुका है और वह क़ादियान की वर्तमान उन्नति को देखकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का बहुत ज़िक्र किया करता है और आप से बहुत प्रेम रखता है।

(सीरतुल महदी जिल्द-1, भाग-1, लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद एम.ए.[रज़ि॰] पृष्ठ-43, रिवायत न.52)

जब आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते गर्मी बहुत है तो वर्षा हो जाती

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए.वर्णन करते हैं कि-

बयान किया हम से क़ाज़ी अमीर हुसैन साहिब ने कि हज़रत मसीह मौऊद का युग विचित्र था क़ादियान में दो दिन गर्मी नहीं पड़ती थी कि तीसरे दिन वर्षा हो जाती

थी। जब गर्मी पड़ती और हम हज़रत साहिब से कहते कि हुज़ूर बहुत गर्मी है तो दूसरे दिन वर्षा हो जाती थी। और सय्यद मुहम्मद सर्वर शाह साहिब ने वर्णन किया कि इस युग में फसलों के बारे में भी शिकायत नहीं हुई। ख़ाकसार ने घर आकर वालिदा साहिबा से इस का ज़िक्र किया तो उन्होंने फ़रमाया कि हज़रत साहिब जब फ़रमाते थे कि आज बहुत गर्मी है तो सामान्यता उसी दिन या दूसरे दिन वर्षा हो जाती थी। और आप के बाद तो महीनों आग बरसती है और वर्षा नहीं होती।

(सीरतुल महदी जिल्द-1, भाग-1, संकलन कर्ता हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद एम.ए.[रज़ि॰] पृष्ठ-51,52 रिवायत न.-70)

हमें कोई आग में डाल कर देख ले

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए.[रज़ि॰] वर्णन करते हैं कि "वर्णन किया मुझ से चौधरी हाकिम अली साहिब ने कि एक बार किसी हिन्दू ने ऐतराज़ किया कि हज़रत इब्राहीम पर आग किस प्रकार ठंडी हो गई। इस ऐतराज़ का उत्तर हज़रत मौलवी साहिब ख़लीफ़ा प्रथम ने लिखा कि आग से युद्ध और शत्रुता की आग अभिप्राय है। उन्हीं दिनों में एक दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम छोटी मस्जिद में बैठे हुए थे और हम लोग आप के पैर दबा रहे थे और हज़रत मौलवी साहिब भी पास बैठे थे कि किसी ने हज़रत साहिब को यह ऐतराज़ और उसका उत्तर जो मौलवी साहिब ने लिखा था सुनाया। हज़रत साहिब ने फ़रमाया इस तकल्लुफ की क्या आवश्यकता है।

हम मौजूद हैं हमें कोई आग में डालकर देख ले कि आग गुलज़ार हो जाती है या नहीं।

ख़ाकसार कहता है कि यह ऐतराज़ धर्मपाल आर्य इस्लाम से मुर्तद ने किया था और हज़रत मौलवी साहिब ने उसकी पुस्तक "तर्के इस्लाम" के उत्तर में "नूरुद्दीन" पुस्तक लिखी थी उसमें आप ने यह उत्तर दिया था कि आग से अभिप्राय विरोधियों की दुश्मनी की आग है परन्तु हज़रत साहिब तक यह बात पहुँची तो आप ने इसको पसंद नहीं किया और फ़रमाया कि इस की तावील की आवश्यकता नहीं इस युग में हम मौजूद हैं हमें कोई विरोधी दुश्मनी से आग के अन्दर डाल कर देख ले कि ख़ुदा उस आग को ठंडा कर देता है या नहीं। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अन्य अवसर पर इस बात को अपने एक शे'र में भी वर्णन किया है-

तेरे मकरों से ए जाहिल मेरा नुक्सां नहीं हरगिज़
कि यह जाँ आग में पड़कर सलामत आने वाली है

और आप का एक इल्हाम भी इसी आशय को व्यक्त करता है जिसमें ख़ुदा तआला आप से फ़रमाता है कि तू लोगों से कह दे कि "आग से हमें मत डराओ आग हमारी ग़ुलाम बल्कि ग़ुलामों की ग़ुलाम है।"

ख़ाकसार कहता है कि चौधरी हाकिम अली साहिब ने इस ज़िक्र में यह घटना भी वर्णन की कि एक बार किसी व्यक्ति ने यह तमाशा दिखाना आरंभ किया कि आग में घुस जाता था और आग उसे हानि न पहुंचाती थी। उस व्यक्ति ने विरोध के तौर पर हज़रत साहिब का नाम लेकर कहा कि उनको मसीह होने का दावा है। यदि सच्चे हैं तो

यहां आ जाएँ और मेरे साथ आग में प्रवेश करें। किसी व्यक्ति ने बाहर से यह बात मुझे पत्र में लिखी और मैंने वह पत्र हज़रत साहिब के सामने प्रस्तुत किया। आप ने फ़रमाया कि यह एक चालाकी है हम तो वहाँ जा नहीं सकते परन्तु आप लिख दें कि वह यहां आ जाए। फिर यदि मेरे सामने वह आग में प्रवेश करेगा तो ज़िन्दा नहीं निकलेगा।

(सीरतुल महदी जिल्द-1, भाग-1, लेखक-हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद एम.ए.[रज़ि॰] पृष्ठ-136 से 138 रिवायत न. 147)

आग आप को जला न सकी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो यह फ़रमाया कि हमें आग में डालकर देखें कि आग गुलज़ार होती है या नहीं। इस दावे की पुष्टि एक अन्य घटना से हो जाती है कि वास्तव में आग आपको जला न सकी। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए.[रज़ि॰] वर्णन करते हैं कि-

"ख़ाकसार वर्णन करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि एक बार का ज़िक्र है जबकि मैं सियालकोट में था। एक दिन वर्षा हो रही थी जिस कमरे के अन्दर मैं बैठा हुआ था उसमें बिजली आई। सारा कमरा धुंए के समान हो गया और गन्धक की सी गंध आई थी परन्तु हमें कुछ हानि न पहुँची। उस समय वह बिजली एक मंदिर में गिरी जो कि तेजा सिंह का मंदिर था और उसमें हिन्दुओं की रस्म के अनुसार परिक्रमा के लिए चारों और पेचीदा दीवार बनी हुई थी

और अन्दर एक व्यक्ति बैठा था। बिजली समस्त चक्रों में से होकर अन्दर जाकर उस पर गिरी और वह जलकर कोयले के समान काला हो गया। देखो वही बिजली आग थी जिसने उसको जला दिया परन्तु हमें कुछ हानि न दे सकी, क्योंकि ख़ुदा तआला ने हमारी रक्षा की।"

(सीरतुल महदी जिल्द-1, भाग-1, संकलन कर्ता हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद एम.ए.[रज़ि॰] पृष्ठ-216 रिवायत न. 236)

अपने सच्चा होने पर पूर्ण विश्वास

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला से संबंध के परिणामस्वरुप अपने आक़ा और अनुकर्णीय हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरह अपने सच्चा होने पर पूर्ण विश्वास था। अतः इस संबंध में निम्नलिखित ईमानवर्धक घटना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद एम.ए.[रज़ि॰] वर्णन करते हैं-

"वर्णन किया हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय अय्यदहुल्लाह ने कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के युग में जमाअत अहमदिया कपूरथला और ग़ैर अहमदियों का वहाँ की मस्जिद के बारे में एक मुक़द्दमा हो गया। जिस जज के पास यह मुक़द्दमा गया वह स्वयं ग़ैर अहमदी था और विरोधी था। उसने इस मुक़द्दमा में विरुद्ध पहलू ग्रहण करना आरंभ किया। इस हालत में जमाअत कपूरथला ने घबरा कर हज़रत मसीह मौऊद

अलैहिस्सलाम को पत्र लिखे और दुआ के लिए निवेदन किया। हज़रत साहिब ने उन को उत्तर लिखा कि यदि मैं सच्चा हूं तो मस्जिद तुम को मिल जाएगी। परन्तु जज ने नियमित रूप से विरोधपूर्ण आचरण क़ायम रखा। अंत उसने अहमदियों के विरुद्ध फ़ैसला लिखा। जिस दिन उसने फ़ैसला सुनाना था उस दिन वह सुबह के समय कपडे पहन कर अपनी कोठी के बरामदे में निकला और अपने नौकर को कहा कि बूट पहनाए और स्वयं एक कुर्सी पर बैठ गया। नौकर ने बूट पहना कर फ़ीता बांधना आरंभ किया कि सहसा उसे खट की सी आवाज़ आई उसने ऊपर नज़र उठाई तो देखा कि उसका आक़ा बेसहारा होकर कुर्सी पर औंधा पड़ा था। उसने हाथ लगाया तो मालूम हुआ मरा हुआ है। जैसे कि अचानक हृदय की गति रुक गई और उसके प्राण निकल गए। उस का स्थानापन्न एक हिन्दू नियुक्त हुआ जिसने उसके लिखे हुए फैसले को काट कर अहमदियों के पक्ष में फ़ैसला कर दिया।

(सीरतुल महदी जिल्द-1 भाग-1 पृष्ठ-57, रिवायत न.-79)

ख़ुदा से संबंध और ख़ुदाई सुरक्षा का ईमानवर्धक वृतान्त

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को 1884 ई. के लगभग सियालकोट में कुछ वर्ष सरकारी नौकरी करना पड़ी। इस नौकरी के कारण आप ने चार वर्ष सियालकोट में गुज़ारे।

प्रारंभ में आप अलैहिस्सलाम को मुहल्ला झंडावाला में एक चौबारे में रहना पड़ा। इस चौबारे के गिरने और चमत्कारिक तौर पर आपके कारण उसके अन्दर के समस्त लोगों के सुरक्षित रहने की घटना आप अलैहिस्सलाम के ख़ुदा से संबंध पर एक स्पष्ट और ईमानवर्धक प्रमाण है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

> "एक बार रात मैं एक मकान की दूसरी मंजिल पर सोया हुआ था और उसी कमरे में मेरे साथ पंद्रह या सोलह आदमी और भी थे। रात के समय शहतीर में टक-टक की आवाज़ आई। मैंने आदमियों को जगाया कि शहतीर भयावह मालूम होता है। यहां से निकल जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि कोई चूहा होगा। भय की बात नहीं। और यह कह कर सो गए। थोड़ी देर के पश्चात् फिर वैसी आवाज़ आई तब मैंने उनको दोबारा जगाया, परन्तु फिर भी उन्होंने कुछ परवाह न की। फिर तीसरी बार शहतीर से आवाज़ आई तब मैंने उनको सख्ती से उठाया और सब को मकान से बाहर निकाला और जब सब निकल गए तो स्वयं भी वहाँ से निकला। अभी दूसरी सीढ़ी पर था कि वह छत नीचे गिरी और वह दूसरी छत को साथ लेकर नीचे जा पड़ी और सब बच गए।

(सीरतुल महदी जिल्द-1 भाग-1 पृष्ठ-216,217 रिवायत न.-236)

सब हैरान थे कि यह क्या माजरा है

ख़ुदा तआला अपने नेक बन्दों की हमेशा लाज रखता है और उन्हें अपमान, बदनामी और दुश्मनों की शत्रुता से बचाता है।

अत: आप अलैहिस्सलाम के ख़ुदा से संबंध की एक रुचिकर घटना निम्नलिखित है-

हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब प्रथम ख़लीफ़ा वर्णन करते थे कि एक बार एक बहस के मध्य हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किसी विरोधी ने कोई हवाला माँगा। उस समय हज़रत को वह हवाला याद नहीं था और न आपके सेवकों में से किसी अन्य को याद था। इसलिये शमामत की आशंका पैदा हुई। परन्तु हज़रत साहिब ने बुख़ारी की एक जिल्द मंगाई और यों ही उसके पन्ने पलटने आरंभ कर दिए और जल्दी-जल्दी एक-एक पन्ना उल्टाने लग गए और अंत में एक स्थान पर पहुँच कर आप ठहर गए और कहा कि लो यह देख लो। देखने वाले सब हैरान थे कि यह (क्या) माजरा है। और किसी ने हज़रत साहिब से पूछा भी। जिस पर हज़रत साहिब ने फ़रमाया कि जब मैंने पुस्तक हाथ में लेकर पन्ने पलटने शुरू किए तो मुझे पुस्तक के पन्ने ऐसे दिखाई देते थे कि जैसे वे ख़ाली हैं और उन पर कुछ लिखा हुआ नहीं। इसलिए मैं उनको जल्दी-जल्दी पलटता गया। अंत में मुझे एक पन्ना मिला जिस पर कुछ लिखा हुआ था और मुझे विश्वास हुआ कि यह वही हवाला है जिसकी मुझे आवश्यकता है। जैसे अल्लाह तआला ने ऐसे तसर्रुफ किया कि उस स्थान के अतिरिक्त कि जिस पर हवाला दर्ज था शेष समस्त

स्थान आप को ख़ाली दिखाई दिया।

(सीरतुल महदी जिल्द-1 भाग-2 पृष्ठ-282 रिवायत न.-306)

हमारा काम भी शिर्क (अनेकेश्वरवाद) मिटाना है

जिस प्रकार ख़ुदा तआला को अपनी तौहीद-व-तफ़रीद (एकेश्वरवाद) अत्यन्त प्रिय है उसी प्रकार नबियों को भी अपने एक और अद्वितीय ख़ुदा के एकेश्वरवाद से अत्यन्त प्रेम होता है। नबी दुनिया में एकेश्वरवाद की स्थापना के लिए ही भेजे जाते हैं। अनेकेश्वरवाद (शिर्क) को समाप्त करना और एकेश्वरवाद को स्थापित करना उनका प्राथमिक कर्तव्य है। इस संबंध में एक दिलचस्प रिवायत प्रस्तुत है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब वर्णन करते हैं-

"क़ाज़ी मुहम्मद यूसुफ़ साहिब पेशावरी ने मुझे पत्र द्वारा सूचना दी कि मैं जब आरंभ में क़ादियान गया तो एक व्यक्ति ने अपने लड़के को हज़रत साहिब के सामने मुलाक़ात के लिए प्रस्तुत किया। जिस समय वह लड़का हज़रत साहिब से हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ा तो सम्मान व्यक्त के लिए हज़रत के पैरों को हाथ लगाने लगा। जिस पर हज़रत साहिब ने अपने मुबारक हाथों से उसे ऐसा करने से रोका और मैंने देखा कि आप का चेहरा लाल हो गया और आप ने बड़े जोश में फ़रमाया कि नबी दुनिया में अनेकेश्वरवाद (शिर्क) मिटाने आते हैं और हमारा काम भी शिर्क मिटाना है

न कि शिर्क स्थापित करना।"

(सीरतुल महदी जिल्द-1 भाग-2 संकलन कर्ता हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद एम. ए.[रज़ि०], पृष्ठ-295 रिवायत न.-319)

केवल एक दो रात दुआ की आवश्यकता थी

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए.[रज़ि०] वर्णन करते हैं कि-

मौलवी शेर अली साहिब ने मुझ से वर्णन किया कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन किया कि हमें यह विचार आया था कि तबलीग़ (प्रचार) के लिए अंग्रेज़ी के सीखने की ओर ध्यान दें और हमें आशा थी कि अल्लाह तआला अपनी विशेष कृपा से हमें उसका ज्ञान प्रदान कर देगा। केवल एक दो रात दुआ की आवश्यकता थी। परन्तु फिर यह विचार आया कि मौलवी मुहम्मद अली साहिब इस काम में लगे हुए हैं और उनकी अंग्रेज़ी की प्रशंसा भी की जाती है। इसलिए हमारा ध्यान इस बात की ओर से हट गया।

(सीरतुल महदी जिल्द-1 भाग-2 संकलन कर्ता हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद एम. ए.[रज़ि०], पृष्ठ-357 रिवायत न.-395)

और डाकू भाग गए

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए.[रज़ि०] वर्णन करते हैं कि-

क़ाज़ी मुहम्मद यूसुफ़ साहिब पेशावरी ने मुझ से पत्र द्वारा वर्णन किया कि ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब से

मैंने सुना है कि मौलवी करमदीन भें वाले मुक़द्दमे के बीच एक बार हज़रत साहिब बटाला के रास्ते गुरदासपुर की ओर रवाना हुए। आप के साथ रथ में स्वयं ख़्वाजा साहिब और मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब (स्वर्गीय) थे और शेष लोग पीछे यक्कों में आ रहे थे। संयोग से यक्के कुछ अधिक पीछे रह गए और रथ अकेला रह गया। रात का समय था, आकाश पर बादल छाए हुए थे और चारों ओर घोर अन्धकार था। जब रथ बडाला से बटाला की ओर आगे बढ़ा तो कुछ डाकू गंडासों और छुरियों से हथियारबंद होकर मार्ग में आ गए और हज़रत साहिब के रथ को घेर लिया और वे आपस में झगड़ने लगे। हर व्यक्ति दूसरे से कहता था कि तू आगे होकर आक्रमण कर परन्तु कोई आगे न आता था और इसी झगड़े में कुछ समय गुज़र गया और इतने में पिछले यक्के आ मिले और डाकू भाग गए। क़ाज़ी साहिब लिखते हैं कि ख़्वाजा साहिब वर्णन करते थे कि उस समय अर्थात् जिस समय डाकू आक्रमण करने आए थे मैंने देखा कि हज़रत साहिब के माथे से एक विशेष प्रकार की रोशनी निकलती थी जिस से आपका मुबारक चेहरा चमक उठता था। ख़ाकसार वर्णन करता है कि क़ादियान और बटाला के बीच की सड़क पर अधिकतर चोरी और डाके की घटनाएँ हो जाती हैं परन्तु उस समय ख़ुदा तआला का विशेष हस्तक्षेप था कि डाकू स्वयं डर गए और किसी

को आगे आने की हिम्मत नहीं हुई। क़ाज़ी साहिब वर्णन करते हैं कि मैंने यह घटना ख़्वाजा साहिब से उन्हीं दिनों में पेशावर के स्थान पर सुनी थी।

(सीरतुल महदी जिल्द-1, भाग-2, संकलन कर्ता हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद एम. ए.[रज़ि॰], पृष्ठ-433, रिवायत न.-454)

हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन साहिब भैरवी ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम[रज़ि॰]

26 मई 1908 ई. को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्वर्गवास होने के पश्चात् अगले दिन 27 मई को आप[रज़ि॰] हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रथम ख़लीफ़ा निर्वाचित हुए। आप[रज़ि॰] हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सबसे अच्छे दोस्त, सबसे बड़े आशिक, सर्वाधिक प्रिय, सर्वाधिक आज्ञाकारी, सर्वाधिक आर्थिक कुर्बानी करने वाले, सब से बड़े सहायक और मददगार थे।

हज़रत प्रवर्तक सिलसिला अहमदिया ने जब मामूर होने का दावा फ़रमाया तो आप हमेशा यह दुआ करते थे- या रब्ब मन अंसारी, या रब्ब मन अन्सारी। अर्थात हे मेरे रब्ब! इस महान कार्य में जो तूने मेरे सुपुर्द किया है कौन मेरी सहायता करेगा। अल्लाह तआला ने कश्मीर से हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन जैसा महान इन्सान भेज दिया।

यह बात वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

> "जब से मैं अल्लाह तआला के दरबार से मामूर किया गया हूं और हय्यो-कय्यूम की ओर से जीवित किया गया हूं धर्म के कुछ सहायकों की ओर से रुचि करता रहा हूं। और वह रुचि उस रुचि से बढ़कर है जो एक प्यासे को पानी की ओर होती है। और मैं रात-दिन ख़ुदा तआला के सामने चिल्लाता था और कहता था कि हे मेरे रब्ब! मेरा कौन सहायता करने वाला और मददगार है। मैं अकेला

और अधम हूं। तो जब दुआ का हाथ लगातार उठा आकाश का वातावरण मेरी दुआ से भर गया तो अल्लाह तआला ने मेरी विनय और दुआ को स्वीकार किया और समस्त लोकों के प्रतिपालक के रहम ने जोश मारा तथा अल्लाह तआला ने मुझे एक निष्कपट सिद्दीक प्रदान किया जो मेरे सहायकों की आंख है और मेरे निष्कपट दोस्तों का ख़ुलासा है जो धर्म के बारे में मेरे दोस्त हैं। उनका नाम उसकी नूरानी विशेषताओं की तरह नूरुद्दीन है। वह जन्म भूमि की दृष्टि से भैरवी और वंश की दृष्टि से क़ुरैशी हाशिमी है। जो कि इस्लाम के सरदारों में से और सुशील माता-पिता की सन्तान में से है। अतः मुझ को उसके मिलने से ऐसी प्रसन्नता हुई कि जैसे कोई पृथक हुआ अंग मिल गया और ऐसा नशा हुआ जिस प्रकार कि हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत फ़ारूक़ के मिलने से प्रसन्न हुए थे।

और जब वह मेरे पास आया और मुझ से मिला और मेरी नजर उस पर पड़ी तो मैंने उसको देखा कि वह मेरे रब्ब की निशानियों में से एक निशानी है और मुझे विश्वास हो गया कि मेरी उसी दुआ का परिणाम है जिसे मैं हमेशा करता था और मेरे विवेक ने मुझे बता दिया कि वह अल्लाह तआला के चुने हुए बन्दों में से है।

(हयात-ए-नूर अध्याय-3 पृष्ठ-113)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आपकी आर्थिक क़ुर्बानियों तथा आपका आज्ञापालन और फ़र्माबरदारी की अत्यन्त प्रशंसा की है

और इच्छा व्यक्त की कि काश मेरी उम्मत का हर सदस्य नूरुद्दीन होता तो क्या ही अच्छा होता। आप की नेकी और संयम तथा बुज़ुर्गी को देखते हुए मोमिनों की जमाअत ने सर्व सम्मति से आप[रज़ि॰] को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का प्रथम ख़लीफ़ा चुन लिया।

आप क़ुर्आन और हदीस तथा इस्लामी ज्ञानों के बहुत बड़े विद्वान और उत्तम शास्त्रार्थी थे। उसके साथ-साथ आप बहुत बड़े निपुण चिकित्सक भी थे पूरे हिन्दुस्तान में आप के तिब्ब की ख्याति थी। यही कारण था कि महाराजा जम्मू ने आपको अपना विशेष तबीब नियुक्त किया। उस युग में आपकी हज़ारों रुपए की आय थी। परन्तु जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मौलवी साहिब आपने दुनिया बहुत देख ली है अब आप यहां ही रह जाएँ। इस आदेश का पालन करने में आप क़ादियान के होकर रह गए और कभी वतन का विचार दिल में नहीं लाया।

आप के ख़ुदा पर भरोसा करने और ख़ुदा से संबंध के उदाहरण दिए जाते हैं। अल्लाह पर अत्यन्त भरोसा करने वाले थे। आप स्वयं फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला को मेरे साथ एक विशेष मामला है।

आप के बड़े-बड़े कारनामों में से एक महान कारनामा ख़िलाफ़त को सुदृढ़ करना है। आप[रज़ि॰] के ख़लीफ़ा बनने के बाद शीघ्र ही नफ़्सानी इच्छाओं में डूबे एक गिरोह ने ख़िलाफ़त की बुनियाद को हिलाने और उसके महल में लर्ज़ा लाने में कोई कसर उठा नहीं रखी। परन्तु आप ने उन्हें कड़ी फटकार लगाई और ख़िलाफ़त को वह दृढ़ता प्रदान की जिसके लिए आप रहती दुनिया तक याद किए जाएंगे।

आप के ख़ुदा से संबंध की कुछ घटनाएँ निम्नलिखित हैं-

स्वप्न की बुनियाद पर कश्मीर का सफ़र

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम ने एक स्वप्न के आधार पर कश्मीर का सफ़र किया। अतः आप फ़रमाते हैं-

"------हुज़ूर (अर्थात् रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (नक़ल करने वाला) हंस पड़े और आप से फ़रमाया कि क्या तू कश्मीर देखना चाहता है। आप ने कहा- हां! हे ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह फ़रमा कर हुज़ूर चल दिए और आप पीछे-पीछे थे। बानिहाल के रास्ते कश्मीर गए।"

(हयात-ए-नूर अध्याय-2 पृष्ठ-97)

भय के कारण मेरा रंग ज़र्द हो गया

हज़रत अक्दस ख़लीफ़तुल मसीह[रज़ि०] प्रथम मदीना मुनव्वरा रहने के दौरान अपनी एक घटना वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं-

"जिन दिनों मैं शाह अब्दुल ग़नी साहिब से शिक्षा प्राप्त करता था। एक दिन ज़ुहर की नमाज़ जमाअत के साथ मुझे न मिली। जमाअत हो चुकी थी और मैं किसी कारण से रह गया। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि यह इतना बड़ा कबीरा गुनाह है कि क्षमायोग्य ही नहीं भय के कारण मेरा रंग ज़र्द हो गया। मस्जिद के अन्दर घुसना भी डर मालूम होता था। वहाँ एक बाबुर्रहमत है उस पर लिखा हुआ है-

قُلْ يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا
مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ

هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۵۴﴾ (सूरह अज़्ज़ुमर - 54)

इसको पढ़कर फिर भी बहुत डरता हुआ और आश्चर्य चकित होकर मस्जिद के अन्दर घुसा और बहुत ही घबराया। जब मैं मिम्बर और पवित्र हुजरः के बीच पहुंचा और नमाज़ अदा करने लगा तो रुकू में मुझे जिस विचार ने बहुत ज़ोर दिया वह यह था कि हदीस सही में आया है कि-

مابَيْنَ بَيْتِيْ وَ مِنْبَرِی روضة من رياض الجنة

और जन्नत तो वह स्थान है जहाँ जो माँगा जाता है मिल जाता है। अतः मैंने दुआ की कि हे ख़ुदा मेरी यह ग़लती क्षमा कर दी जाए।"

(मिर्क़ातुल यक़ीन फ़ी हयाते नूरुद्दीन
सम्पादक-अकबर शाह खान नजीबाबादी पृष्ठ-125,126)

दो सज्दों के बीच मुकत्तआत का विशाल ज्ञान दिया गया

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम स्वयं वर्णन करते हैं कि-

कश्मीर में एक मौलवी अब्दुल कुददूस साहिब रहते थे वह बड़े बुज़ुर्ग आदमी थे और मेरे पीर भाई भी थे, क्योंकि वह शाह जी अब्दुल ग़नी साहिब के मुरीद थे और मैं भी शाह साहिब का मुरीद था। उनका मुझ से विशेष प्रेम था और बुढ़ापे की कमज़ोरी के बावजूद मेरे मकान पर तिरमिज़ी का पाठ पढ़ने आते थे। मैंने एक स्वप्न देखा कि उनकी गोद में कई छोटे-छोटे बच्चे हैं। मैंने एक झपट्टा मारा और सब बच्चे

अपनी गोद में ले कर वहाँ से चल पड़ा। रास्ते में मैंने उन बच्चों से पूछा कि तुम कौन हो? तो उन्होंने उत्तर दिया कि हमारा नाम كهيعص है। मैं अपने इस स्वप्न को बड़े ही आश्चर्य से देखता था। जब मैं हज़रत मिर्ज़ा साहिब का मुरीद हुआ तो मैंने उन से इस स्वप्न की चर्चा की। मिर्ज़ा साहिब ने फ़रमाया कि आप को इसका ज्ञान दिया जाएगा और वे लड़के फ़रिश्ते थे। धर्मपाल ने जब 'तर्के इस्लाम' पुस्तक लिखी तो उस से बहुत पहले मुझे एक स्वप्न दिखाई दिया था कि अल्लाह तआला मौला मुझ से फ़रमाता है कि "यदि कोई व्यक्ति पवित्र क़ुर्आन की कोई आयत तुझ से पूछे और वह तुझे न आती हो और पूछने वाला क़ुर्आन का इन्कारी हो तो हम स्वयं तुम को उस आयत के बारे में ज्ञान देंगे।" जब धर्मपाल की पुस्तक आई और ख़ुदा तआला ने मुझ को उस के उत्तर का सामर्थ्य दिया। मुकत्तआत के अक्षरों के ऐतराज़ तक पहुंच कर एक दिन मग़रिब की नमाज़ में दो सज्दों के बीच मैंने केवल इतना ही सोचा कि मौला! यह क़ुर्आन का इन्कारी तो है यद्यपि मेरे सामने तो नहीं। यह मुकत्तआत पर प्रश्न करता है उसी समय अर्थात् दो सज्दों के बीच अल्प समय में मुझ को मुकत्तआत का विशाल ज्ञान दिया गया, जिस का एक शम: (थोड़ा) मैंने पुस्तक नूरुद्दीन में मुकत्तआत के उत्तर में लिखा है। और उसको लिख कर मैं स्वयं भी हैरान हो गया।

(मिर्क़ातुल यक़ीन फ़ी हयाते नूरुद्दीन पृष्ठ-172,173)

ख़ुदा आप को एक और लड़का देगा

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम वर्णन करते हैं कि-

मेरी एक बहन थी उनका एक लड़का था। वह पेचिश के रोग में रोग-ग्रस्त हुआ और मर गया। इसके कुछ दिन बाद मैं गया। उन्होंने मेरे हाथ से किसी पेचिश के रोगी को अच्छा होते हुए देखा। मुझ से कहने लगीं कि भाई यदि तुम आ जाते तो मेरा लड़का बच ही जाता। मैंने उन से कहा कि तुम्हारे एक लड़का होगा और मेरे सामने पेचिश के रोग में रोग-ग्रस्त होकर मरेगा। अत: वह गर्भवती हुईं और एक बड़ा सुन्दर लड़का पैदा हुआ। फिर जब वह पेचिश से रोग-ग्रस्त हुआ उनको मेरी बात याद थी मुझ से कहने लगीं अच्छा दुआ ही करो। मैंने कहा कि ख़ुदा तआला आप को इसके बदले में एक और लड़का देगा परन्तु इसको तो अब जाने ही दो। फिर वह लड़का मर गया और उसके बाद एक और लड़का पैदा हुआ जो ज़िन्दा रहा और अब तक ज़िन्दा तथा कार्यरत है। यह ख़ुदाई स्वाभिमान था।

(मिर्क़ातुल यक़ीन फ़ी हयात नूरुद्दीन पृष्ठ-199)

ख़ुदा तआला अच्छा बदला देगा

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम[रज़ि॰] वर्णन करते हैं कि-

मेरे बहुत से लड़के मरे। जब कोई लड़का मरता तो

मैं यही समझता कि इसमें कोई कमी होगी। ख़ुदा तआला इस से अच्छा बदला देगा। ख़ुदा तआला की नेमतों से निराश होना तो काफ़िरों का काम है। ख़ुदा तआला की नेमतों की जब कद्र नहीं की जाती तो वे नेमतें छिन जाती हैं अल्लाह तआला की नेमतें जाती ही नहीं परन्तु कृतघ्नता से। जब नेमत चली जाए तो आदमी निराश न हो।

(मिर्क़ातुल यक़ीन फ़ी हयात नूरुद्दीन पृष्ठ-207)

डिप्लोमः पर भरोसा नहीं

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम[रज़ि॰] फ़रमाते हैं-

यह भी एक शिर्क है कि आदमी डिप्लोमः या सनद पर भरोसा करे। एक बार एक व्यक्ति ने जो मदरसों का अफ़सर था और मैं भी पिण्डदादन खां में टीचर था। मुझ से किसी बात पर कहा कि आपको डिप्लोमः का घमंड है। मैंने अपने आदमी से कहा डिप्लोमः लाओ जिसे यह ख़ुदा समझे हुए हैं वह हमारे पास भी एक है। मंगा कर उसे उसी समय टुकड़े-टुकड़े कर दिया। वह आदमी बड़ा हैरान हुआ। मुझ से कहा आप को कोई जोश है? मैंने कहा नहीं। कहा कोई ग़म है? मैंने कहा नहीं आप ने इसे घमण्ड, बड़ा होने तथा जीविका समझा है मैंने इसको टुकड़े-टुकड़े करके दिखाया है कि मेरा इन चीज़ों पर ख़ुदा की कृपा से भरोसा नहीं।

(मिर्क़ातुल यक़ीन फ़ी हयात नूरुद्दीन (पृष्ठ-209)

ख़ुदाई दावत

जनाब अब्दुल क़ादिर साहिब लेखक 'हयात-ए-नूर' लिखते हैं कि अल्लाह तआला की ओर से खाना खिलाए जाने की एक घटना बिरादरम हकीम मुहम्मद सिद्दीक साहिब आफ़ मियानी, ज़िला-सरगोधा ने सुनाई कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह फ़रमाया करते थे।

> एक बार मैं अच्छे उस्ताद की तलाश में देश से दूर चला गया। तीन दिन का भूखा था परन्तु किसी से प्रश्न नहीं किया। मैं मगरिब के समय एक मस्जिद में चला गया परन्तु वहाँ किसी ने मुझे नहीं पूछा और नमाज़ पढ़ कर सब चले गए। जब मैं अकेला था तो मुझे बाहर से आवाज़ आई नूरुद्दीन! नूरुद्दीन! नूरुद्दीन! यह खाना आकर जल्द पकड़ लो। मैं गया तो एक समूह में बड़ा तकल्लुफ पूर्ण खाना था मैंने पकड़ लिया मैंने यह भी नहीं पूछा कि खाना कहाँ से आया क्योंकि मुझे ज्ञान था कि ख़ुदा तआला ने भेजा है। मैंने खूब खाया और फिर बर्तन मस्जिद की एक दीवार के साथ खूँटी पर लटका दिया। जब मैं आठ-दस दिन के बाद वापस आया तो वह बर्तन वहीं लटका हुआ था जिस से मुझे विश्वास हो गया कि खाना गांव के किसी आदमी ने नही भिजवाया था। ख़ुदा तआला ने ही भिजवाया था।

(हयात-ए-नूर अध्याय-1, लेखक-अब्दुल क़ादिर सौदागरमल पृष्ठ-24,25)

वर्षा बंद होने की दुआ

जनाब चौधरी ग़ुलाम मुहम्मद साहिब बी.ए. का बयान है-

"1909ई० के बरसात के मौसम में एक बार लगातार आठ दिन वर्षा होती रही, जिस से क़ादियान के बहुत से मकान गिर गए। हज़रत नवाब मुहम्मद अली खान साहिब (स्वर्गीय) ने क़ादियान से बाहर नई कोठी का निर्माण किया था वह भी गिर गई। आठवें या नौवें दिन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम ने ज़ुहर की नमाज़ के बाद फ़रमाया कि मैं दुआ करता हूं आप सब लोग आमीन कहें। दुआ करने के बाद आपने फ़रमाया कि मैंने आज वह दुआ की है जो हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सारी उम्र में केवल एक बार की थी। दुआ के समय वर्षा बड़े ज़ोर से हो रही थी। इसके बाद वर्षा बंद हो गई और अस्र की नमाज़ के समय आकाश बिल्कुल साफ़ था और धूप निकली हुई थी।"

(हयात-ए-नूर अध्याय-6 पृष्ठ-440,441)

ख़ुदा की सहायता की दो अदभुत घटनाएं

जनाब स्वर्गीय अब्दुल क़ादिर साहिब सौदागरमल लेखक हयात-ए-नूर लिखते हैं-

भोपाल में आप को बहुत सी अदभुत घटनाओं का सामना हुआ। परन्तु चिकित्सा संबंधी दो घटनाएं विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं। प्रथम घटना यह है कि आप ने दो बहुत ही उत्तम सदरियाँ बनवाई थीं

जिनको पहनने की आपको हमेशा आदत थी। उनमें से एक चोरी हो गई। इस घटना का वर्णन करते हुए आप ने जलसा सालाना 1913ई० के भाषण में फ़रमाया-

"शिक्षार्थी होने के युग में एक बार मैंने बहुत ही उत्तम सूफ़ लेकर दो सदरियाँ बनवाई और उन्हें अलग़नी पर रख दिया परन्तु एक किसी ने चुरा ली। मैंने उसके चोरी हो जाने पर ख़ुदा की कृपा से अपने दिल में कोई दुःख महसूस न किया अपितु मैंने समझा कि अल्लाह तआला उससे उत्तम बना देना चाहता है। तब मैंने प्रफुल्लतापूर्वक इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा और सब्र की कृतज्ञता में दूसरी किसी मुहताज को दे दी। इस घटना पर कुछ दिन ही गुज़रे थे कि शहर के अमीरज़ादे को सूज़ाक हुआ। उस ने एक व्यक्ति से जो मेरा भी परिचित था कहा कि कोई ऐसा व्यक्ति लाओ जो प्रसिद्ध तबीब (चिकित्सक) न हो और कोई ऐसी दवा बता दे जिसे मैं स्वयं बना लूं। वह मेरे पास आया और मुझे उसके पास ले गया। मैंने सुनकर कहा कि यह कुछ भी नहीं सदरी है। मैं जब वहाँ पहुंचा तो वह अपने बाग़ में बैठा था। मैं उसके पास कुर्सी पर जा बैठा। तो उसने अपनी हालत को वर्णन करके कहा- ऐसा नुस्खः बता दें जो मैं स्वयं ही बना लूं। मैंने कहा हो सकता है। जहाँ हम बैठे थे वहाँ केले के वृक्ष थे। मैंने उसको कहा कि केले का पानी 5 तोला लेकर उसमें एक माशा शोर कलमी मिला कर पी

लो। उसने तुरंत इसका पालन किया। क्योंकि शोरह भी मौजूद था। अपने हाथ से दवाई बना कर पी ली। मैं चला आया। दूसरे दिन फिर मैं गया तो उसने कहा कि मुझे तो एक ही बार पीने से आराम हो गया है अब आवश्यकता नहीं रही है। मैं तो जानता था कि यह अवसर केवल ख़ुदा की कृपा ने पैदा कर दिया है और स्वयं ही मेरा ध्यान इस इलाज की ओर फेर दिया। मैं तो फिर चला आया। परन्तु उसने मेरे दोस्त को बुला कर ज़रबफ्त कमरव्वाब इत्यादि के बहुमूल्य लिबास और बहुत से रुपए मेरे पास भेजे। जब वह मेरे पास लाया तो मैंने उसको कहा कि यह वही सदरी है। वह हैरान था कि सदरी का क्या मामला है। तो समस्त किस्सा उसे बताया और उसको मैंने कहा कि ज़रबफ़्त इत्यादि तो हम पहनते नहीं। इसे बाज़ार में बेच लाओ। अतः वह बड़ी कीमत पर बेच आया। अब मेरे पास इतना रुपया हो गया कि हज अनिवार्य (फ़र्ज़) हो गया। इसलिए मैंने उसको कहा कि अब हज को जाते हैं क्योंकि हज फ़र्ज़ हो गया है। तो अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने वाले को कुछ भी हानि नहीं होती। हां उसमें दुनिया की मिलौनी नहीं चाहिए अपितु शुद्ध रूप ख़ुदा के लिए हो। अल्लाह की प्रसन्नता अभीष्ट हो और उसकी सृष्टि पर हमदर्दी दृष्टिगत हो।"

दूसरी घटना यह हुई कि ज्वर की तीव्रता ने आप को ख़तरनाक रंग में मुंह से थूक निकलना आरंभ हो गया जिसमें बदबूदार काले रंग

का पानी निकलता था। एक व्यक्ति हकीम फ़र्ज़न्द अली ने आप को राय दी कि यदि आप का देश निकट हो तो आप तुरंत चले जाएं। इस जलाने वाले मवाद से बचने की कोई आशा नहीं। आप फ़रमाते हैं-

> "शाम के समय एक बुज़ुर्ग जो वहाँ विद्यार्थियों के प्रबंधक थे और बहुत ही निष्कपट हालत में थे। कहने लगे मैं बूढ़ा हूं। मेरे मुंह से लुआब आता है। कोई ऐसी चीज़ बताओ जो इफ़्तार (रोज़ा खोलते) समय खा लिया करूं। मैंने कहा मुरब्बा आमला बनारसी, दाना इलायची और चांदी के वर्क से इफ़्तार करें। वह यह नुस्खा मालूम करके गए। तुरंत वापस आए और एक मर्तबान मुरब्बा और बहुत सी इलायचियां और दफ्तरी चांदी के वर्क मेरे सामने ला रखा और कहा कि आप के मुंह से भी लुआब आता है। आप भी खाएं। मैंने उनको खाना शुरू किया। एक आध के खाने से कुछ मिनट के लिए कमी हो गई। फिर जब पानी आने का प्रारंभ हुआ तो एक और खा लिया फिर मुझे याद नहीं कि कितने खा गया। इशा के बाद मुझे बहुत कमी हो गई और मैंने देश जाने की बजाए हरमैन (मक्का-मदीना) का इरादा कर लिया।"

(हयात-ए-नूर अध्याय-1 पृष्ठ-46-48)

रेल के किराए के उपलब्ध होने का अदभुत निशान

बहुत बार ऐसा होता है कि आप किसी तत्काल आवश्यकता के अन्तर्गत बिना किसी तैयारी के सफ़र पर रवाना हो जाते और आप के

पास कोई पैसा न होता। परन्तु आप को अपने ख़ुदा पर पूर्ण विश्वास होता कि समस्त खर्चे और आवश्यकताएँ ख़ुदा पूरी करेगा। ऐसा ही एक घटना का वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं-

"मेरे एक दोस्त मलिक फ़तह खान साहिब घोड़े पर सवार मेरे पास आए और फ़रमाया कि मैं रावलपिंडी जाता हूं क्योंकि लार्ड लिटन ने देहली में दरबार किया है। बड़े-बड़े रईस तो देहली बुलाए गए हैं और छोटे रईस रावलपिंडी में एकत्र होंगे और उन्हीं तिथियों में रावलपिंडी में दरबार होगा। हम रावलपिंडी बुलाए गए हैं। मैंने उनके कान में चुपके से कहा कि मुझ को भी दरबार में जाना है। उन्होंने कहा कि यह घोड़ा है आप इस पर सवार हो जाएँ। उस समय मेरे जितने रोगी थे वे वहीं बैठे रह गए और मैंने घर में भी सूचना नहीं दी। उसी समय सवार होकर चल दिया। फ़तह खान और हम दोनों जब जेहलम पहुँचे तो वहाँ रेल थी। स्वर्गीय मलिक फ़तह खान तो रावलपिंडी चले गए। मैंने कहा मैं तो देहली जाता हूं। मेरे कपड़े बहुत ही मैले हो गए थे। इसलिए मैंने अपने कपड़े उतार कर मलिक हाकिम खान तहसीलदार जेहलम का एक पाजामा, पगड़ी और कोट पहन लिया। जिस के नीचे कुर्ता न था। मैं सैर के लिए निकला और टहलता हुआ जेहलम के स्टेशन पर पहुंचा।

मैंने स्टेशन पर किसी से पूछा कि लाहौर का थर्ड क्लास का क्या किराया है? मालूम हुआ कि पन्द्रह आना।

उस कोट की जेब में देखा तो केवल पन्द्रह आने के पैसे पड़े थे। मैंने टिकट लिया और लाहौर पहुंचा। यहां बहुत भीड़ थी क्योंकि लोग दरबार के कारण देहली जा रहे थे। टिकट का मिलना असंभव था और मेरी जेब में तो कोई पैसा भी न था। एक पादरी जिन से किसी रोग के बारे में तिब्बी मशवरा देने के कारण मेरी पहले से जान-पहचान थी। स्टेशन पर मिल गए। उनका नाम गोलकनाथ था। उन्होंने कहा कि आप कहां जाते हैं टिकट तो बड़ी मुश्किल से मिलेगा। मैंने कहा मुझे देहली जाना है। गोलकनाथ ने कहा। मैं जाता हूं और टिकट का प्रबंध करता हूं। अतः वह गए और बहुत ही शीघ्र एक टिकट देहली का लाए। मैंने टिकट उन से ले लिया और जेब में हाथ डाला तो पादरी साहिब कहने लगे-आप मेरा अपमान न करें। माफ़ करें। मैं इस के दाम न लूँगा। और मैं भी तो देहली जाता हूं। मार्ग में देखा जाएगा। मैं रास्ते में उनको तलाश करता रहा। वह दिखाई न दिए। और देहली के स्टेशन पर भी तलाश करने के बावजूद भी मुझ को न मिले।"

(हयात-ए-नूर अध्याय-2 पृष्ठ-86,87)

हम पर कभी कठिनाइयां नहीं आएंगी

जनाब अब्दुल क़ादिर साहिब सौदागरमल लेखक हयात-ए-नूर लिखते हैं-

जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है आप रियासत में एक उचित

वेतन पाने के अतिरिक्त साल में कई बार बहुमूल्य इनाम व सम्मान से भी सुशोभित किए जाते थे। परन्तु वह समस्त धन राशि आप विद्यार्थियों, विधवाओं, अनाथों और अन्य मुहताज लोगों की भलाई तथा कल्याण के लिए ख़र्च कर देते थे। और सर्वथा ख़ुदा पर भरोसा करने वालों सा जीवन व्यतीत करते थे। जम्मू में हाकिम नामक एक पंसारी रहता था। वह हमेशा आपको नसीहत करते हुए कहता था कि आप हर माह कम से कम एक सौ रुपया बचा लिया करें। यहां कभी अचानक कठिनाइयां आ जाया करती हैं। परन्तु आप उसे हमेशा यही कहा करते थे कि ऐसे विचार लाना अल्लाह तआला पर कुधारणा है। हम पर ख़ुदा ने चाहा तो कभी कठिनाइयां नहीं आएंगी। जिस दिन आपको नौकरी से पृथक होने का नोटिस मिला वह हिन्दू पंसारी आप के पास आया और कहने लगा मौलवी साहिब! शायद आज आपको मेरी नसीहत याद आई होगी। आपने फ़रमाया- तुम्हारी नसीहत को जैसा मैं पहले तिरस्कार से देखता आज भी वैसा ही तिरस्कार से देखता हूं। अभी वह आप से बातें ही कर रहा था कि खज़ाने से चार सौ अस्सी रुपये की एक राशि आप की सेवा में उस चिट्ठी के साथ पहुंचा दी गई कि यह आप का उन दिनों का वेतन है जो इस माह में से गुज़र चुके हैं। उस पंसारी ने अफ़सरों को गाली देकर कहा कि "क्या नूरुद्दीन तुम पर नालिश थोड़ा ही करने लगा था।" अभी वह अपने क्रोध को कम न करने पाया था कि एक रानी साहिबा ने आप के पास अपने जेब खर्च का बहुत सा रुपया भिजवाया और विवशता भी प्रकट की कि इस समय हमारे पास इससे अधिक रुपया नहीं था अन्यथा हम और भी भिजवाते। उस रुपए को देख कर तो उस पंसारी का क्रोध और भी बढ़ गया। आप उस

समय एक लाख पचानवे हज़ार रुपए के कर्ज़दार भी थे और उसे उस कर्ज़ की जानकारी थी। उस क़र्ज़ की ओर संकेत करके कहने लगा कि भला यह तो हुआ जिन का आप को लगभग दो लाख रुपया देना है वे अपना इत्मीनान किए बिना आप को कैसे जाने देंगे। अभी उसने यह बात समाप्त ही की थी कि कर्ज़ देने वाले का एक आदमी आया और बड़े सम्मानपूर्वक हाथ जोड़ कर कहने लगा कि मेरे पास अभी तार आया है। मेरे आक़ा फ़रमाते हैं- "मौलवी साहिब को तो जाना है उनके पास रुपया न होगा। तुम उन के घर जाने का सब प्रबंध कर दो और उनको जितने रुपए की आवश्यकता हो दे दो और सामान को वह साथ न ले जा सकें तो तुम अपने इत्मीनान से सुरक्षा के साथ पहुंचा दो। आपने फ़रमाया कि-

"मुझे रुपए की आवश्यकता नहीं। खज़ाने से भी रुपया आ गया है और एक रानी ने भी भेज दिया है। मेरे पास रुपया पर्याप्त है। अधिक है और सामान मैं सब साथ ही ले जाऊँगा।"

आप फ़रमाते हैं-

मैंने कहा कि अल्लाह तआला दिलों को जानता है। हम उस का रुपया इंशाअल्लाह शीघ्र ही अदा कर देंगे। तुम इन भेदों को समझ ही नहीं सकते।

क़र्ज़ की अदायगी का क़िस्सा

उचित मालूम होता है कि इस अवसर पर उस कर्ज़ की अदायगी का क़िस्सा भी वर्णन कर दिया जाए। जनाब ग़ुलाम फ़रीद साहिब

एम.ए. फ़रमाया करते हैं कि जितना अवसर मुझे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम की संगत में रहने का मिला है इतना अवसर बहुत कम लोगों को मिला होगा। आप ने बहुत बार उस क़र्ज़ की अदायगी की चर्चा की परन्तु यह कभी नहीं बताया था कि वह क़र्ज़ हुज़ूर ने किस प्रकार अदा किया। हुज़ूर का युग गुज़र गया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय अय्यदहुल्लाह का युग आया। उस में से भी बहुत समय गुज़र गया। मैंने जब पवित्र क़ुर्आन की अंग्रेज़ी में तफ़्सीर के छापने के सिलसिले में लाहौर आना आरंभ किया तो एक बार जनाब मलिक ग़ुलाम मुहम्मद साहिब क़सूरी के पास बैठा हुआ था कि उस क़र्ज़ की अदायगी का ज़िक्र चल पड़ा। स्वर्गीय मलिक साहिब ने फ़रमाया कि हज़रत मौलवी साहिब जब राजनीतिक परिस्थितियों के अन्तर्गत महाराजा जम्मू-व-कश्मीर की नौकरी से पृथक किए गए तो बाद में परिस्थितियों के सुधरने पर महाराजा साहिब को ख़याल आया कि मौलवी साहिब एक बहुत बड़े दक्ष तबीब थे। उनको नौकरी से पृथक करने में हम से अन्याय और ज़ुल्म हुआ है उन्हें वापस लाने की कोशिश करनी चाहिए आप से जब कहा गया तो आपने ने फ़रमाया कि अब मैं ऐसी जगह पहुंच चुका हूं कि यदि मुझे समस्त संसार की हुकूमत भी मिल जाए तो मैं इस जगह को नहीं छोड़ सकता। चूंकि महाराजा साहिब को इस अन्याय का बहुत अधिक अहसास था। इसलिए उन्होंने इसका निवारण करने का यह प्रबंध किया कि अब की बार जंगलों का ठेका केवल उसी व्यक्ति को दिया जाए जो लाभ का आधा भाग हज़रत मौलवी साहिब को अदा करे। अतः इसी शर्त के साथ टेंडर मांगे गए। जिस व्यक्ति को ठेका मिला उसने जब वर्ष के बाद अपने लाभ का हिसाब

किया तो ख़ुदा तआला की हिकमत कि उसे ठीक तीन लाख नव्वे हज़ार रुपया लाभ हुआ। जिस का आधा एक लाख पचानवे हज़ार बनता था। और इतना ही हुज़ूर के ज़िम्मे कर्ज़ था। तो जब यह रुपया हुज़ूर की सेवा में प्रस्तुत किया गया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि यह रुपया रियासत में वापस ले जाकर अमुक सेठ साहिब को दे दिया जाए। हमने उसका क़र्ज़ देना है। दूसरे वर्ष महाराज ने फिर उसी शर्त पर ठेका दिया। परन्तु उस वर्ष जब लाभ का आधा रुपया हुज़ूर की सेवा में प्रस्तुत किया गया तो हुज़ूर ने लेने से इन्कार कर दिया और फ़रमाया कि न इस कार्य में मेरी पूँजी लगी, न मैंने मेहनत की मैं उसका लाभ लूं तो क्यों लूं? ठेकेदार ने कहा जनाब! मुझे तो यह ठेका मिला ही इसी शर्त पर था। आप अपना हिस्सा अवश्य लें अन्यथा भविष्य में मुझे ठेका नहीं मिलेगा। हुज़ूर ने फ़रमाया अब चाहे जो भी हो मै यह रुपया नहीं लूँगा। उसने कहा कि फिर पिछले वर्ष क्यों लिया था? फ़रमाया वह तो मेरे रब्ब ने अपने वादे के अनुसार मेरा क़र्ज़ उतारना था। जब वह उतर गया तो अब मैं क्यों लूं। इस पर वह ठेकेदार वापस चला गया।

(हयात-ए-नूर अध्याय-3 पृष्ठ-180-182)

अल्लाह तआला का आप से वादा

स्वर्गीय जनाब अब्दुल क़ादिर साहिब सौदागरमल लेखक "हयात-ए-नूर" अपनी पुस्तक में लिखते हैं।

हज़रत मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब[रज़ि॰] जब 1903-4ई॰ में मौलवी करमदीन साहिब वाले मुकद्दमा के सिलसिले में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ गुरदासपुर जाया करते थे तो उन्हीं दिनों

की एक घटना जनाब मलिक बशीर अली साहिब कुंजाही हाल रब्वाह ने यों वर्णन किया कि-

"मैं हैदराबाद दक्कन में लगभग तेरह वर्ष तक रहा और वहाँ ठेकेदारी का काम करता रहा हूं। मेरे हज़रत शेख़ याकूब अली साहिब इर्फ़ानी[रज़ि०] के साथ बड़े गहरे संबंध थे और हम बहुत लम्बे समय तक इकट्ठे रहते रहे। एक बार हज़रत इर्फ़ानी साहिब[रज़ि०] ने फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मुक़द्दमे के सिलसिले में गुरदासपुर गए हुए थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वहाँ से संदेश भेजा कि हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब और शेख़ याकूब अली साहिब तुरंत पहुंच जाएँ। अतः मैं और हज़रत मौलवी साहिब दो बजे दोपहर के बाद यक्के पर बैठकर बटाला की ओर चल पड़े। शेख़ साहिब ने मुझे कहा कि उस समय मेरे दिल में विचार आया कि हज़रत मौलवी साहिब कहा करते हैं कि, ख़ुदा तआला का मेरे साथ वादा है कि मैं यदि कहीं जंगल बियाबान में भी हूं तब भी ख़ुदा तआला मुझे भोजन पहुंचाएगा और मैं कभी भूखा नहीं रहूँगा। आज हम कुसमय चले हैं पता लग जाएगा कि रात को उन के भोजन का क्या प्रबंध होता है।

बटाला में स्थानीय जमाअत की ओर से एक मकान बतौर मेहमान खाना हुआ करता था। उसमें हम दोनों चले गए हज़रत मौलवी साहिब वहां एक चारपाई पर लेट गए और पुस्तक पढ़ने लग गए। उस समय शाम के छः बजे के

लगभग समय होगा। अचानक एक अजनबी व्यक्ति आया और कहने लगा- मैं ने सुना है कि आज मौलवी नूरुद्दीन साहिब यहां आए हुए हैं, वह कहां हैं? मैंने कहा वह यह लेटे हुए हैं। कहने लगा- हुज़ूर! मेरी एक विनती है आज शाम की दावत मेरे यहां स्वीकार कीजिए। मैं रेलवे में ठेकेदारी करता हूं और मेरी बैलिस्ट ट्रेन खड़ी हुई है और मैंने अमृतसर जाना है। मेरा नौकर हुज़ूर के लिए खाना ले आएगा। हज़रत मौलवी साहिब ने फ़रमाया बहुत अच्छा। अतः शाम के समय उसका नौकर बड़ा तकल्लुफ पूर्ण खाना लेकर उपस्थित हुआ और हम दोनों ने पेट भर कर खा लिया। शेख साहिब कहने लगे मेरे दिल में विचार आया कि इन की बात तो सही हो गई और इन्हें ख़ुदा ने वास्तव में खाना भिजवा दिया।

चूंकि गाड़ी रात दस बजे के बाद चलती थी। मैंने हज़रत मौलवी साहिब से कहा कि अँधेरा हो रहा है फिर मज़दूर नहीं मिलेगा। हम किसी मज़दूर को बुला लेते हैं और स्टेशन पर पहुंच जाते हैं। वहाँ वेटिंग रूम में हम आराम कर लेंगे। हज़रत मौलवी साहिब ने फ़रमाया बहुत अच्छा। तो मैंने एक मज़दूर बुलाया------ और वह हम दोनों के बिस्तर लेकर स्टेशन पर पहुंच गया। चूंकि गाड़ी रात के दस बजे के बाद आती थी। मैंने आप का बिस्तर खोल दिया ताकि हज़रत मौलवी साहिब आराम कर लें। जब मैंने बिस्तर खोला तो अल्लाह तआला इस बात का गवाह है कि उसके अन्दर से एक कागज़ में लिपटे हुए दो

पराठे निकले जिन के साथ क़ीमा रखा हुआ था। मैं बड़ा हैरान हुआ और मैंने दिल में कहा लो भई वह खाना भी हमने खा लिया और यह ख़ुदा की ओर से और खाना भी आ गया, क्योंकि उस खाने का हमें सर्वथा ज्ञान नहीं था।

मैंने हज़रत मौलवी साहिब से कहा कि हुज़ूर जब हम क़ादियान से चले थे तो चूंकि अचानक और कुसमय चले थे। मैंने दिल में सोचा कि आज हम देखेंगे कि मौलवी साहिब को खाना कहां से आता है। तो पहले आप की दावत हो गई। और अब ये पराठे बिस्तर से भी निकल आए हैं। हज़रत मौलवी साहिब ने फ़रमाया-

शेख़ साहिब! अल्लाह तआला को आज़माया न करो और ख़ुदा से डरो। उस का मेरे साथ विशेष मामला है।"

(हयात-ए-नूर अध्याय-4, लेखक आदरणीय अब्दुल कादिर साहिब, सौदागर मल, पृष्ठ-273 से 275)

आक़ा के आदेश का पालन करने में बिना किसी तैयारी के देहली के लिए निकल पड़े

जनाब शेख़ अब्दुल क़ादिर साहिब फ़रमाते हैं-

22 अक्टूबर 1905ई० को हज़रत अक़्दस उम्मुल मोमिनीन[रज़ि०] को आप के सज्जनों और परिजनों से मिलने के लिए देहली ले गए। अभी देहली पहुंचे थोड़े ही दिन हुए थे कि हज़रत मीर नासिर नवाब साहिब[रज़ि०] बीमार हो गए। इस पर हुज़ूर को ख़याल आया कि यदि मौलवी नूरुद्दीन साहिब को भी देहली बुला लिया जाए तो अच्छा होगा। अतः हज़रत

मौलवी साहिब को तार भिजवाया गया। जिस में तार लिखने वाले ने immediate अर्थात् अविलम्ब शब्द लिख दिए। जब यह तार क़ादियान पहुंचा तो हज़रत मौलवी साहिब अपने चिकित्सालय में बैठे हुए थे। इस विचार से कि आदेश के पालन करने में देर न हो उसी हालत में तुरंत चल पड़े। न घर गए, न लिबास बदला, न बिस्तर लिया। और मज़ेदार बात यह कि रेल का किराया भी पास न था। घर वालों को पता चला तो उन्होंने पीछे से एक आदमी के हाथ कम्बल तो भिजवा दिया परन्तु ख़र्च भिजवाने का उन्हें भी ख़्याल न आया। और संभव है कि घर में इतना रुपया भी न हो। तब आप बटाला पहुंचे तो एक अमीर हिन्दू रईस ने जो मानो आपकी प्रतीक्षा ही कर रहा था कहा कि मेरी पत्नी बीमार है मेहरबानी करके उसे देखकर नुस्खा लिख दीजिए। फ़रमाया मैंने इस गाड़ी पर देहली जाना है। उस रईस ने कहा। मैं अपनी पत्नी को यहाँ ही ले आता हूं। तो फिर वह ले आया। आपने उसे देखकर नुस्खा लिख दिया। वह हिन्दू चुपके से देहली का टिकट खरीद लाया और एक उचित धन राशि बतौर भेंट भी प्रस्तुत की। और इस प्रकार से आप देहली पहुंच कर हज़रत अक़्दस की सेवा में उपस्थित हो गए।

(हयात-ए-नूर अध्याय-4 पृष्ठ-285)

खजूर ने आश्चर्यजनक तौर पर चमत्कारपूर्ण प्रभाव दिखाया

जनाब अब्दुल माजिद साहिब ताहिर एडिशनल वकील अत्तब्शीर लन्दन वर्णन करते हैं-

हज़रत चौधरी हाकिम दीन साहिब की वर्णन की हुई एक घटना

प्रस्तुत करता हूं। चौधरी हाकिम दीन साहिब[रज़ि०] क़ादियान में बोर्डिंग हाउस में एक साधारण सेवक थे। आप के पहले बच्चे के जन्म के समय आपकी पत्नी की तकलीफ बहुत बढ़ गई। आप वर्णन करते हैं कि उस हालत में कोई अन्य उपाय न पाकर मैं रात ग्यारह बजे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम[रज़ि०] के घर पहुंचा और चौकीदार से कहा कि क्या मैं इस समय हुज़ूर से मिल सकता हूं? चौकीदार ने नहीं में उत्तर दिया। परन्तु हुज़ूर ने मेरी आवाज़ सुन ली और मुझे अन्दर बुला लिया। मैंने पत्नी की तकलीफ़ का ज़िक्र किया। आपने खजूर पर दुआ पढ़ कर मुझे दी और फ़रमाया यह जाकर अपनी पत्नी को खिला दो और जब बच्चा हो जाए तो मुझे भी सूचना दे दें।

हज़रत हाकिम दीन साहिब[रज़ि०] फ़रमाते हैं कि मैंने वह खजूर अपनी पत्नी को खिला दी। उस खजूर ने आश्चर्यजनक तौर पर चमत्कारपूर्ण प्रभाव किया। और थोड़ी देर बाद बच्ची का जन्म हो गया।

हज़रत हाकिम दीन साहिब कहते हैं कि मैंने रात के समय हुज़ूर को जगाना उचित नहीं समझा कि आप सो रहे होंगे। जब सुबह अज़ान के समय उपस्थित हुआ और समस्त हाल सुनाया तो हुज़ूर ने फ़रमाया- बच्ची पैदा होने के बाद मियाँ बीवी तो आराम से सो रहे। यदि मुझे भी सूचना दे दी जाती तो मैं भी आराम कर लेता। मैं पूरी रात तुम्हारी पत्नी के लिए दुआ करता रहा हूं।

यह घटना वर्णन करते हुए हाकिम दीन साहिब बे इख़्तियार रो पड़े और कहने लगे कहां चपरासी हाकिम दीन और कहां महान नूरुद्दीन।

(अलफ़ज़्ल इंटरनेशनल 25 सितम्बर 2015 से
1 अक्टूबर 2015ई०, पृष्ठ-14 से उद्धत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि॰]

आप का पूरा नाम मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब है। आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बड़े सुपुत्र हैं। 12 जनवरी 1889 ई. को पैदा हुए। 13 मार्च 1914 को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम के स्वर्गवास के पश्चात अगले दिन 14 मार्च 1914 ई. को जमाअत अहमदिया के दूसरे ख़लीफ़ा निर्वाचित हुए। उस समय आप की आयु 25 वर्ष थी।

7, 8 नवम्बर 1965ई॰ की मध्य रात्रि आप का स्वर्गवास हुआ। 52 वर्ष आप ख़िलाफ़त के महान पद पर कार्यरत रहे। और जमाअत अहमदिया को दुनिया के किनारों तक पहुंचाया।

आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मौऊद सुपुत्र (प्रतिज्ञान सुपुत्र) थे। वैसे तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की समस्त सन्तान अल्लाह तआला की ख़ुशखबरियों से हुई परन्तु हज़रत मुस्लिह मौऊद के बारे में अल्लाह तआला ने आप अलैहिस्सलाम को विशेष ख़ुशखबरियां दीं। वे ख़ुशख़बरियां जमाअत अहमदिया में भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस भविष्यवाणी में अल्लाह तआला ने आप[रज़ि॰] की महान विशेषताएं वर्णन की हैं। अल्लाह तआला ने आप के बारे में यहां तक फ़रमाया कि आप का आना जैसे स्वयं ख़ुदा का आना है। अतः फ़रमाया-

مَظۡهَرُ الۡحَقِّ وَالعَلَاءِ كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَآءِ

आप अल्लाह तआला के वह निशान थे जिसे अल्लाह ने दुनिया

की समस्त क़ौमों पर समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए उतारा। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह॰] आप के बारे में फ़रमाते हैं-

> "आप उन विशेष लोगों में थे जो सदियों में ही नहीं अपितु हज़ारों वर्षों में कभी एक बार मानवता के क्षितिज पर उदय होते हैं और जिनकी रौशनी केवल एक नस्ल को नहीं अपितु बीसियों इन्सानी नस्लों को अपने प्रकाश-प्रसारण द्वारा प्रकाशमान करती रहती है।"

(सवानिह फ़ज़्ले उमर जिल्द-1 पृष्ठ-4)

बचपन से ही आप बहुत नेक, पवित्र, संयमी और साहिबे रोया (स्वप्न) और कश्फ़ थे। अल्लाह और उसके रसूल तथा इस्लाम से प्रेम रखने वाले थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अत्यन्त अपवित्र संगत का आप[रज़ि॰] पर विशेष प्रभाव पड़ा। नमाज़ से ऐसा प्रेम था कि लम्बी-लम्बी नमाज़ें पढ़ते और सज्दों में बहुत रोते और गिड़गिड़ाते।

हज़रत मुस्लिह मौऊद[रज़ि॰] के ख़ुदा से संबंध की कुछ ईमान वर्धक घटनाएँ निम्नलिखित हैं-

उस समय मैं ग्यारह वर्ष का था

बचपन से ही आप को ख़ुदा के अस्तित्व के मौजूद होने पर विश्वास प्राप्त हो गया। यह घटना निस्सन्देह आश्चर्यजनक है कि जिस आयु को बच्चे केवल खेल-कूद में गुज़ार देते हैं उस आयु में आप ख़ुदा की जिज्ञासा और उसके अस्तित्व की तलाश तथा सबूत में सोच-विचार करते हैं। न केवल सोच-विचार करते हैं अपितु

सकारात्मक परिणाम पर पहुंच कर अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त करते हैं। आप फ़रमाते हैं-

"जब मैं ग्यारह वर्ष का हुआ और 1900 ई. ने दुनिया में क़दम रखा तो मेरे दिल में यह विचार पैदा हुआ कि मैं ख़ुदा तआला पर क्यों ईमान लाता हूं, उसके अस्तित्व का क्या सबूत है? मैं रात के समय देर तक इस समस्या पर सोचता रहा अंत में दस-ग्यारह बजे मेरे दिल ने फ़ैसला किया कि हां एक ख़ुदा है। वह घड़ी मेरे लिए कैसी ख़ुशी की घड़ी थी। जिस प्रकार एक बच्चे को उसकी मां मिल जाए तो उसे ख़ुशी होती है इसी प्रकार मुझे ख़ुशी थी कि मेरा पैदा करने वाला मुझे मिल गया। सुना हुआ ईमान ज्ञान के ईमान से परिवर्तित हो गया। मैं अपने जामे में फूला नहीं समाता था। मैंने उसी समय अल्लाह तआला से दुआ की और एक लम्बे समय तक करता रहा कि हे मेरे ख़ुदा! मुझे तेरे अस्तित्व के बारे में कभी सन्देह पैदा न हो। उस समय मैं ग्यारह वर्ष का था---------परन्तु आज भी उस दुआ को कद्र की निगाह से देखता हूं। मैं आज भी यही कहता हूं "हे मेरे ख़ुदा तेरे अस्तित्व के बारे में मुझे कभी सन्देह पैदा न हो। हां उस समय मैं बच्चा था। अब मुझे अधिक अनुभव है। अब मैं इतना अतिरिक्त करता हूं कि हे ख़ुदाया मुझे तेरे अस्तित्व के बारे में अटल विश्वास पैदा हो।

जब मेरे दिल में विचारों की वे मौजें पैदा होना आरंभ

हुईं जिनका मैंने ऊपर ज़िक्र किया है तो एक दिन ज़ुहा या सूर्योदय के पश्चात मैंने वूज़ू किया और वह जुब्बा इस कारण से नहीं कि सुन्दर है अपितु इस कारण से कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का है और बरकत वाला है। यह पहला अहसास मेरे दिल में ख़ुदा के भेजे हुए के मुक़द्दस होने का था" पहन लिया। तब मैंने उस कोठरी का जिसमें मैं रहता था दरवाज़ा बंद कर लिया और एक कपड़ा बिछा कर नमाज़ पढ़ना शुरू की और मैं उसमें ख़ूब रोया, ख़ूब रोया, ख़ूब रोया और इक़रार किया कि अब नमाज़ कभी नहीं छोड़ूँगा। इस ग्यारह वर्ष की आयु में मुझ में क्या संकल्प था! इस इक़रार के बाद मैंने कभी नमाज़ नहीं छोड़ी। यद्यपि इस नमाज़ के बाद कई वर्ष बचपन के भी शेष थे। मेरा वह संकल्प मेरे आज के इरादों को शर्माता है।"

(सवानिह फ़ज़्ले उमर जिल्द-1 पृष्ठ-96,97)

आप फ़र्श पर सज्दे में पड़े हुए हैं

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] फ़रमाते हैं कि हम आप[रज़ि०] के बारे में आप के बचपन के दो बुज़ुर्ग उस्तादों के बिचारों का वर्णन करते हैं। जीवनी के अध्ययन का यह भी एक पहलू है कि उस्ताद की आंख से शागिर्द को देखा जाए। हज़रत मौलवी शेर अली साहिब[रज़ि०] जो आप के अंग्रेज़ी के उस्ताद थे और मदरसे के अतिरिक्त आप को घर पर भी पढ़ाते थे अपनी राय व्यक्त करते हुए लिखते हैं-

"हज़रत अमीरुलमोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय अय्यदहुल्लाह के विद्यार्थी होने की एक घटना लिखता हूं। इस से भी आपकी हार्दिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है। एक और दिन कुछ वर्षा हो रही थी परन्तु अधिक न थी। बन्दा निर्धारित समय पर हुज़ूर की सेवा में उपस्थित हुआ। सीढ़ियों का दरवाज़ा खटखटाया। हुज़ूर ने दरवाज़ा खोला बंदा अन्दर आकर बरामदे में एक कुर्सी पर बैठ गया। आप कमरे में चले गए। मैंने समझा पुस्तक लेकर बाहर बरामदे में आएँगे। परन्तु जब आप के बाहर आने में देर हो गई तो मैंने अन्दर की ओर देखा तो क्या देखता हूं कि आप फ़र्श पर सज्दे में पड़े हुए हैं। मैंने सोचा कि आज वर्षा के कारण शायद आप समझते थे कि मैं उपस्थित नहीं हूँगा और जब मैं आ गया हूं तो आप के दिल में ख़ाकसार के लिए दुआ की तहरीक हुई है और आप ख़ाकसार के लिए दुआ कर रहे हैं। आप बहुत देर तक सज्दे में पड़े रहे और दुआ करते रहे।"

(सवानिह फ़ज़ले उमर जिल्द-1 पृष्ठ-116)

सज्दे में बहुत रो रहे थे

नमाज़ में विनय, रोना, गिड़गिड़ाना अल्लाह तआला से विशेष प्रेम-संबंध के अतिरिक्त संभव नहीं। अल्लाह तआला की आप पर विशेष कृपा थी कि जो बात किसी को जवानी तथा कुछ को बुढ़ापे और कुछ को समस्त आयु में प्राप्त नहीं होती वह बात आप को बचपन से ही

प्राप्त थी। हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक साहिब भी जो आप के बचपन के उस्तादों में से थे अपनी राय को इन शब्दों में अभिव्यक्त करते हैं-

"चूंकि ख़ाकसार ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत 1890ई० के अन्त में कर ली थी और उस समय से हमेशा आने-जाने का सिलसिला निरंतर जारी रहा। मैं हज़रत दृढ़ संकल्प बशीरुद्दीन महमूद अहमद अय्यदहुल्लाह तआला को उन के बचपन से देख रहा हूं कि किस प्रकार हमेशा उनकी आदत शर्म, सुशीलता, सच्चाई और धर्म की ओर ध्यान देने की थी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के धार्मिक कार्यों में बचपन से ही उन को रूचि थी। नमाज़ों में प्राय: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ जामिअ मस्जिद में जाते और ख़ुत्बा सुनते। एक बार मुझे याद है जब आप की आयु दस वर्ष के लगभग होगी। आप मस्जिद अक़्सा में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ नमाज़ में खड़े थे और फिर सज्दे में बहुत रो रहे थे। बचपन से ही आप को स्वाभाविक तौर पर अल्लाह के साथ और उसके रसूलों के साथ प्रेम का विशेष संबंध था।

(सवानिह फ़ज़्ले उमर जिल्द-1 पृष्ठ-117)

रोना गिड़गिड़ाना और विलाप की विचित्र अवस्था

बचपन से ही आप का इबादत का शौक तहज्जुद की आदत और मस्जिदों में रोना-गिड़गिड़ाना का चित्रण करते हुए सय्यिदिना

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] ने एक बहुत ईमान वर्धक घटना अपनी पुस्तक सवानिह फ़ज़्ले उमर में दर्ज की है। आप फ़रमाते हैं-

"बचपन से ही आप को ख़ुदा की इबादत का शौक पैदा हुआ और छोटी आयु ही में आप आधी रात की इबादतों के अभ्यस्त हो गए। बहुत सी रिवायतों से पता चलता है कि आप पांच समय की नमाज़ों के अतिरिक्त तहज्जुद की नमाज़ भी नियमित रूप से अदा करते थे। और नमाज़ की अदायगी केवल रस्मी और ज़ाहिरी न थी अपितु बड़ी विनय और नम्रता तथा जलन और पिघलन की चरितार्थ हुआ करती थी।

एक बच्चे या नौजवान का नमाज़ों में रोना और सज्दों में देर तक पड़े रहना निस्सन्देह बड़ों के लिए आश्चर्य का कारण है विशेष तौर पर उस समय जबकि ऐसे बच्चे को कोई भौतिक आघात न पहुंचा हो और चिंता का कोई दूसरा कारण भी दिखाई न दे यह आश्चर्य और भी बढ़ जाता है और दिल में प्रशन उठता है कि इस बन्दे पर क्या बीती है जो रातों को छुप-छुप कर उठता और बिलख-बिलख कर अपने रब्ब के सामने रोते हुए अपने मासूम आंसूओं से सज्दाहगाह को तर कर देता है!

यही आश्चर्य शेख़ ग़ुलाम अहमद साहिब वाइज़ के दिल में भी पैदा हुआ जो एक नव मुस्लिम थे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर इस्लाम में दाख़िल हुए थे और निष्कपटता तथा ईमान में ऐसी उन्नति की कि बड़े इबादत करने वाले, संयमी और साहिबे कश्फ़-व-इल्हाम बुज़ुर्गों में उन की गणना होती है। आप फ़रमाया करते थे कि-

एक बार मैंने यह इरादा किया कि आज की रात मस्जिद मुबारक में गुज़ारूंगा और अकेले में अपने मौला से जो चाहूँगा मांगूंगा। परन्तु जब में मस्जिद में पहुंचा तो क्या देखता हूं कि कोई व्यक्ति सज्दे में पड़ा हुआ है और गिड़गिड़ा कर दुआ कर रहा है। उसके इस गिड़गिड़ाने के कारण मैं नमाज़ भी न पढ़ सका और उस व्यक्ति की दुआ का असर मुझ पर भी छा गया और मैं भी दुआ में तन्मय हो गया और मैंने दुआ की कि हे मेरे मा'बूद! यह व्यक्ति तेरे सामने जो कुछ भी मांग रहा है वह इसे दे दे और मैं खड़ा-खड़ा थक गया कि यह व्यक्ति सिर उठाए तो मालूम करूं कि कौन है। मैं नहीं कह सकता कि मुझ से पहले वह कितनी देर से आए हुए थे परन्तु जब आप ने सिर उठाया तो क्या देखता हूं कि हज़रत मियाँ महमूद अहमद साहिब हैं। मैंने अस्सलामो अलैकुम कहा और हाथ मिलाया और पूछा मियाँ! आज अल्लाह तआला से क्या कुछ ले लिया? तो आप ने फ़रमाया कि मैंने तो यही माँगा है कि हे मेरे मा'बूद! मुझे मेरी आँखों से इस्लाम को ज़िन्दा करके दिखा और यह कह कर आप अन्दर चले गए।"

(सवानिह फ़ज़्ले उमर जिल्द-1 पृष्ठ-150,151)

स्वप्न-इल्हाम और ख़ुदा के दर्शन

बचपन से ही अल्लाह तआला का आप से एक विशेष संबंध था। यही कारण था कि आप को बचपन से ही से बड़ी प्रचुरता से

सच्चे स्वप्न आने लगे। बचपन में आप को इल्हाम भी हुआ और बचपन से ही आपने ख़ुदा के दर्शन करने का सम्मान पाया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] फ़रमाते हैं-

हज़रत सय्यद सर्वर शाह साहिब जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक महामना सहाबी और प्रकाण्ड विद्वान थे और जिन के ज्ञान और कृपा की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी और हज़रत साहिबज़ादा साहिब के उस्तादों में से थे वर्णन करते हैं-

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि०] मुझ से पढ़ा करते थे। तो एक दिन मैंने कहा कि मियाँ! आपके पिता श्री को तो प्रचुरता से इल्हाम होते हैं क्या आप को भी इल्हाम होता है और स्वप्न इत्यादि आते हैं? तो मियाँ साहिब ने फ़रमाया कि मौलवी साहिब! स्वप्न तो बहुत आते हैं और एक स्वप्न तो मैं प्रतिदिन देखता हूं और ज्यों ही मैं तकिए पर सिर रखता हूं उस समय से लेकर प्रातः उठने तक यह दृश्य देखता हूं कि एक फ़ौज है जिसे मैं कमाण्ड कर रहा हूं। और कभी ऐसा देखता हूं कि समुद्रों से गुज़र कर आगे जा कर दुश्मन का मुक़ाबला कर रहे हैं तथा कई बार ऐसा हुआ है कि यदि मैंने पार गुज़रने के लिए कोई चीज़ नहीं पाई तो सरकंडे इत्यादि से नौका बना कर उसके द्वारा पार होकर आक्रमणकारी हो गया हूं।

मैंने जिस समय यह स्वप्न आप से सुना उसी समय से मेरे दिल में यह बात गड़ी हुई है कि यह व्यक्ति किसी समय निस्सन्देह जमाअत का प्रतिनिधित्व करेगा और मैंने इसी कारण से क्लास में बैठकर आपको पढ़ाना छोड़ दिया। आप को अपनी कुर्सी पर बिठाता और स्वयं आप के स्थान पर बैठकर आप को पढ़ाता और मैंने स्वप्न

सुनकर आप से यह भी कह दिया था कि मियाँ! आप बड़े होकर मुझे भुला न दें और मुझ पर भी दया-दृष्टि रखें।

बचपन में आप के इल्हाम के बारे में आप के साथ खेले हुए एक पुराने दोस्त वर्णन करते हैं-

शायद यह बात किसी दूसरे स्थान पर प्रकाशित रिकार्ड में आ चुकी हो परन्तु इसकी चर्चा आवश्यक समझता हूं कि आपको बचपन के युग में जबकि वह मदरसा तालीमुल इस्लाम में मेरे साथ पढ़ते थे आपने ज़िक्र किया कि उनको यह आयत इल्हाम हुई है-

جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ

और यह भी फ़रमाया कि उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में कह दिया था कि यह-यह इल्हाम मुझे हुआ है-

आपको नई आयु ही की अवस्था में अल्लाह तआला को देखने का सम्मान प्राप्त हुआ। अतः मस्जिद अहमदिया लन्दन के निर्माण के लिए चंदे की तहरीक करते हुए जुम्अः के एक ख़ुत्बे के दौरान इस ख़ुदाई रोयत (देखने) की चर्चा करते हुए आप फ़रमाते हैं-

"मुझे आज तक तीन अहम मामलों में ख़ुदा तआला की रोयत हुई है। सर्वप्रथम उस समय कि अभी मेरा बचपन का युग था। उस समय मेरा ध्यान धर्म के सीखने और धर्म की सेवा की ओर फेरा गया। उस समय मुझे ख़ुदा नज़र आया और मुझे हश्र-व-नश्र का सम्पूर्ण दृश्य दिखाया गया। यह मेरे जीवन में बहुत बड़ा इंक़िलाब था।"

मालूम होता है कि स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी यह अहसास था कि इस बच्चे के साथ ख़ुदा तआला का

विशेष संबंध इस छोटी आयु के युग में ही शुरू हो चुका है। अत: स्वयं हज़रत मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब वर्णन करते हैं-

"जिन दिनों क्लार्क का मुक़द्दमा था हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने औरों को दुआ के लिए कहा और मुझे भी कहा कि दुआ और इस्तिखार: करो। मैंने उस समय स्वप्न में देखा कि हमारे घर के चारों ओर पहरे लगे हुए हैं। मैं अन्दर गया जहां सीढ़ियां हैं वहाँ एक तहखाना होता था। मैंने देखा कि वहाँ हज़रत साहिब को खड़ा करके आगे उपले चुन दिए गए हैं और उन पर मिट्टी का तेल डालकर कोशिश की जा रही है की आग लगा दें। परन्तु जब दियासिलाई से आग लगाते हैं तो आग नहीं लगती। वे बार-बार आग लगाने की कोशिश करते हैं परन्तु सफल नहीं होते। मैं इस से बहुत घबराया। परन्तु मैंने जब उस दरवाज़े की चौखट की ओर देखा तो वहाँ लिखा था कि-

जो ख़ुदा के बन्दे होते हैं उनको कोई आग नहीं जला सकती।"

(सवानिह फ़ज़्ले उमर जिल्द-1 पृष्ठ-152 से 154)

अल्लाह तआला के समर्थन-व-सहायता की एक रुचिकर घटना

जनाब मौलवी अब्दुर्रहमान साहिब अन्वर को विभिन्न हैसियतों में आप के साथ लम्बा समय कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह अपने लम्बे अवलोकन और बार-बार के अनुभवों का ख़ुलासा

वर्णन करते हुए कहते हैं-

> यह एक वास्तविकता है कि हुज़ूर यद्यपि सामान्य इन्सान थे परन्तु हुज़ूर के कार्यों को देखने के बाद हर व्यक्ति यह स्वीकार करने के लिए विवश हो जाता है कि इस विशेष इन्सान के साथ अल्लाह तआला का बहुत ही विशेष संबंध है और उसकी विशेष सहायता उसके साथ है। अतः बार-बार देखा गया है कि हुज़ूर को किसी ऐसी चीज़ की आवश्यकता महसूस हुई है जो सामान्य परिस्थितियों में उसकी प्राप्ति लगभग असंभव होती थी तो फिर अल्लाह तआला की कृपा से उसकी प्राप्ति के सामान हो जाया करते थे। जैसे अल्लाह तआला के फ़रिश्ते हुज़ूर की इच्छा की पूर्ति में लग जाया करते थे।

(अलफ़ुर्कान फ़ज़्ले उमर न. दिसम्बर जनवरी 1966, पृष्ठ-43)

ख़ुदा की इस सहायता के असंख्य उदाहरणों में से एक उदाहरण निम्नलिखित है। हज़रत फ़ज़्ले उमर फ़रमाते हैं-

कुछ वर्ष हुए मुझे एक मकान के निर्माण के लिए रुपयों की आवश्यकता हुई। मैंने अनुमान कराया तो मकान के लिए उस समय की कुछ आवश्यकताओं के लिए दस हज़ार रुपयों की आवश्यकता थी। मैंने सोचा कि जायदाद का कोई भाग बेच दूँ या किसी से कर्ज़ लूं। इतने में एक दोस्त का पत्र आया कि मैं छः हज़ार रुपए भेजता हूं। इसके बाद चार हज़ार रुपए शेष रह गया। एक तहसीलदार दोस्त ने लिखा कि मैंने स्वप्न देखा है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पधारे हैं और फ़रमाते हैं कि हमें दस हज़ार रुपए की आवश्यकता

थी। उसमें से छः हज़ार रुपए उपलब्ध हो गए, शेष चार हज़ार तुम भेज दो। मुझे तो इसका कुछ मतलब समझ नहीं आया। यदि आप को कोई व्यक्तिगत आवश्यकता या सिलसिले के लिए हो तो मेरे पास चार हज़ार रुपया जमा है मैं वह भेज दूँ। मैंने उन्हें लिखा कि वास्तविक स्थिति तो ऐसी ही है बिल्कुल इसी प्रकार हुआ है। जैसे आवश्यकता मुझे थी परन्तु अल्लाह तआला ने मेरे मुंह से कहलवाने की बजाए उस दोस्त को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुंह से कहलवा दिया। न उसे जानकारी थी कि मुझे दस हज़ार रुपए की आवश्यकता है और यह कि उसमें से किसी ने छः हज़ार भेज दिया है और अब केवल चार हज़ार शेष है। और न मुझे जानकारी थी कि उसके पास रुपया है परन्तु अल्लाह तआला ने स्वयं ही सब प्रबंध कर दिया। तो कभी ऐसे अवसर ख़ुदा तआला स्वयं ही उपलब्ध कर देता है। उसके विशेष बन्दों के लिए यह व्यवहार सामान्य होता है। और सामान्य बन्दों के लिए बहुत कम। परन्तु सब ही के लिए वास्तविक सहायता अल्लाह तआला की ओर से होती है।

(अलफ़ज़्ल 11 जुलाई 1939 पृष्ठ-4)

(सवानिह फ़ज़्ले उमर जिल्द-5 पृष्ठ-63,64)

ख़्वाजा ख़िज़्र हमारी दावत कीजिए

ख़ुदा से संबंध की एक रुचिकर घटना नीचे लिखी जाती है-

सय्यदिना हज़रत मुस्लिह मौऊद[रज़ि॰] वर्णन करते हैं कि-

"एक बार मैं नौका में बैठा दरिया की सैर कर रहा था और भाई अब्दुर्रहीम साहिब मेरे साथ थे। मेरे लड़के

नासिर अहमद ने बचपन की दृष्टि से कहा कि अब्बाजान यदि इस समय हमारे पास कोई मछली भी होती तो बड़ा मज़ा आता। उस समय सहसा मेरे दिल में एक ख़्याल पैदा हुआ। लोग तो ख़्वाजा ख़िज्र से कुछ और कामना मांगते हैं परन्तु मैं यह समझा करता हूं कि ख़िज्र एक फ़रिश्ता है जिसके कब्ज़े में अल्लाह तआला दरिया रखे हुए हैं। जब नासिर अहमद ने यह बात कही तो मैंने कहा-ख़्वाजा ख़िज्र हम आप के इलाके में से गुज़र रहे हैं हमारी दावत कीजिए और हमें खाने के लिए कोई मछली दीजिए। ज्यों ही मैंने यह वाक्य कहा भाई जी कहने लगे आप ने यह क्या कह दिया कि ख़्वाजा ख़िज्र हमारी दावत करें। इस से तो बच्चे की बुद्धि मारी जाएगी परन्तु अभी भाई जी का यह वाक्य समाप्त ही हुआ था कि अचानक एक बड़ी सी मछली कूद कर हमारी नांव में आ गिरी। मैंने कहा लीजिए भाई जी दावत का सामान आ गया वह हैरान हो गए यह क्या हो गया कि इधर मेरी जीभ से यह निकला कि ख़्वाजा ख़िज्र हम आप के इलाके से गुज़र रहे हैं हमारी दावत कीजिए और उधर उन्होंने यह कहा कि आप क्या कहते हैं ख़्वाजा ख़िज्र भी कहीं दावत किया करते हैं कि अचानक एक बड़ी सी मछली हमारी नांव में आ पड़ी और मैंने कहा भाई जी लीजिए मछली आ गई। फिर हमने वह मछली पका कर तबर्रुक (प्रसाद) के तौर पर सब साथियों को थोड़ी-थोड़ी चखाई कि यह हमारे

ख़ुदा की ओर से अतिथि सत्कार हुआ है।"

(अलफ़ज़्ल 22 मई 1960, पृष्ठ-4,5) (सवानिह फ़ज़्ले उमर जिल्द-5,पृष्ठ-98)

जो ख़ुदा वहाँ है वही यहाँ है

स्वानिह फ़ज़्ले उमर जिल्द 5 पृष्ठ 360 पर जनाब अब्दुल बासित शाहिद साहिब लिखते हैं-

"1953 ई. में जब पंजाब में फ़साद हुए, अहमदियत का बहुत विरोध किया गया। अहमदियों के घरों को आगें लगाई गईं और इस प्रकार की अफवाहें सुनने में आईं कि कहीं आप पर भी हाथ न डाला जाए और गिरफ़्तार न कर लिया जाए। अतः उन दिनों में क़स्रे ख़िलाफ़त की तलाशी भी ली गई। परन्तु आप की तबियत में लेशमात्र भी घबराहट न थी। आराम से अपने काम जारी थे। जो लोग आप से प्रेम करते थे उन्होंने मशवरा दिया कि आप कुछ दिनों के लिए बाहर चले जाएँ, अपितु घबराकर कराची के कुछ ज़िम्मेदार दोस्त आप को लेने के लिए भी आ गए कि आप वहाँ चलें। कुछ दिन में यह उपद्रव समाप्त हो जाएगा। आपने उन दोस्तों का सहानुभूतिपूर्ण मशवरा सुना। थोड़ी देर के लिए अन्दर आए और आकर दुआ शुरू कर दी दुआ समाप्त करके बाहर निकल आए और जा कर उन दोस्तों से कहा कि मैं जाने के लिए कदापि तैयार नहीं। जो ख़ुदा वहाँ है वही यहां है। अल्लाह तआला मेरी यहीं रक्षा करेगा और जो मुझ पर हाथ डालने की

कोशिश करेगा वह ख़ुदा तआला के अज़ाब और गिरफ़्त से डरे। अतः कुछ ही दिन में देश में इन्क़िलाब आ गया। जो विरोध में उठे थे झाग की तरह बैठ गए और जो उनके लीडर थे वह ख़ुदा की गिरफ़्त में आ गए।"

(सवानिह फ़ज़्ले उमर जिल्द-5 पृष्ठ-360)

हे मेरे ख़ुदा तू मुझे एक रुपया दिला

अल्लाह तआला का अपने जिस बन्दे से विशेष संबंध हो वह उसकी इच्छा को विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी पूरा कर देता है। आप[रज़ि॰] के ख़ुदा से संबंध की एक घटना नीचे लिखी जाती है। आप ने अल्लाह से गर्व करते हुए दिल में एक इच्छा की और अल्लाह ने उसे पूरा कर दिया।

आप[रज़ि॰] फ़रमाते हैं-

मैंने एक बार जिस प्रकार ख़ुदा से लाड़ प्यार करते हैं उस से गर्व करते हुए दुआ की। वह जवानी के दिन थे और हम एक ऐसे स्थान से गुज़र रहे थे जहां इस दुआ के स्वीकार होने की कोई स्थिति न थी। परन्तु ख़ुदा के प्रेम के जोश में उस पर गर्व करते हुए मैंने कहा हे मेरे ख़ुदा तू मुझे एक रुपया दिला। मैं उस समय जालंधर और होशियारपुर की ओर गया हुआ था और कास गढ़ से वापस आ रहा था कि इस सफ़र में एक ऐसे इलाके से गुज़रते हुए जहां कोई अहमदी न था। मेरे दिल में यह विचार पैदा हुआ। शायद अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत

प्रकट करना चाहता है कि जंगल में से गुज़रते हुए मेरे दिल से यह दुआ निकली। हाजी ग़ुलाम अहमद साहिब और चौधरी अब्दुस्सलाम साहिब मेरे साथ थे। इतने में चलते-चलते एक गांव आ गया और हम ने देखा कि उस गांव के दो चार आदमी बाहर एक मकान के आगे खड़े हैं। हाजी साहिब और चौधरी अब्दुस्सलाम साहिब उनको देखते ही मेरे दाए-बाएँ हो गए और कहने लगे। इस गांव के लोग अहमदियत के कट्टर विरोधी हैं। यदि कोई अहमदी इनके गांव में से गुज़रे तो ये लोग उसे मारा-पीटा करते हैं। आप बीच में हो जाएँ ताकि ये लोग आपको कोई हानि न पहुंचा सकें। इतने में उनमें से एक व्यक्ति ने जब मुझे देखा तो मेरी ओर दौड़ पड़ा। उन्होंने समझा कि शायद आक्रमण करने के लिए आया है परन्तु जब वह मेरे निकट पहुंचा तो उसने सलाम किया और हाथ बढ़ा कर एक रुपया प्रस्तुत किया कि यह आप की भेंट है। गांव से बाहर निकल कर वे दोस्त हैरान होकर कहने लगे हमें तो डर था कि यह व्यक्ति आप पर आक्रमण न कर दे परन्तु उसने तो भेंट प्रस्तुत कर दी। मैं उस समय उनकी बात से यह समझा कि अल्लाह तआला ने मेरे दिल में यह विचार संभवतः इसलिए पैदा किया था कि वह अपनी क़ुदरत को प्रकट करना चाहता और बताना चाहता था कि लोगों के दिल मेरे अधिकार में हैं। तो जब अल्लाह तआला की ओर से रिज़्क (अन्न) आता है तो

ऐसी-ऐसी जगहों से आता है कि इन्सान को उसका भ्रम और कल्पना भी नहीं होती।

(सवानिह फ़ज़्ले उमर जिल्द-5 पृष्ठ-97)

क़रीब था कि मैं मर जाता

नमाज़ का प्रेम ख़ुदा से संबंध का एक बहुत बड़ा प्रमाण है। ख़ुदा से जितना अधिक संबंध होगा नमाज़ का प्रेम भी उतना ही अधिक होगा। इस पहलू से आप के ख़ुदा से संबंध की एक घटना नीचे दर्ज की जाती है-

हज़रत मुस्लिह मौऊद[रज़ि॰] फ़रमाते हैं-

"मुझे याद है कुछ वर्ष हुए। मैं एक बार दफ़्तर से उठा तो मग़रिब के क़रीब जबकि सूर्य ज़र्द हो चुका था मुझे यह भ्रम हो गया कि आज मुझे काम में व्यस्त रहने के कारण अस्त्र की नमाज़ पढ़ना याद नहीं रहा। जब यह विचार मेरे दिल में आया तो अचानक मेरा सिर चक्कर खा गया और क़रीब था कि इस ग़म की तीव्रता के कारण मैं उस समय गिर कर मर जाता कि तुरन्त मुझे अल्लाह तआला की कृपा से याद आ गया कि अमुक व्यक्ति ने मुझे नमाज़ के समय आकर आवाज़ दी थी उस समय मैं नमाज़ पढ़ रहा था। तो मैं नमाज़ पढ़ चुका हूं परन्तु यदि मुझे यह बात याद न आती तो उस समय मुझ पर इस ग़म के कारण जो हालत एक सेकण्ड में ही छा गई वह ऐसी थी कि मैं समझता था कि अब इस आघात के

कारण मेरी जान निकल जाएगी। मेरा सिर एकदम चकरा गया और क़रीब था कि मैं ज़मीन पर गिर कर मर जाता।"

(सवानिह फ़ज़्ले उमर जिल्द-5 पृष्ठ-61)

वह शीघ्र ही उन पर कृपा करेगा

हज़रत सय्यिदा मेहर आपा[रज़ि॰] वर्णन करती हैं-

1953 ई. के फ़सादों का समय था। केवल अहमदियत से दुश्मनी के कारण हज़रत मियाँ नासिर अहमद साहिब (ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय[रह॰]) और मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब[रज़ि॰] को कैद कर लिया गया। गर्मियों के दिन थे। इशा के समय हम दैनिक नियम के अनुसार सहन में इकट्ठे बैठकर रात का खाना खा रहे थे। इस अवसर पर मेरे मुंह से अनायास निकल गया, पता नहीं! मियाँ नासिर अहमद और मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब का इस गर्मी में क्या हाल होगा? ख़ुदा मालूम उन्हें जेल में कोई सुविधा भी उपलब्ध है या नहीं। इस पर हज़रत मुस्लिह मौऊद[रज़ि॰] ने उत्तर देते हुए फ़रमाया-

"अल्लाह तआला उन पर रहम करे। वे केवल इस अपराध पर क़ैद किए गए हैं कि उनका कोई अपराध नहीं। इसलिए मुझे अपने ख़ुदा पर पूर्ण विश्वास और ईमान है कि वह शीघ्र ही उन पर फ़ज़ल (कृपा) करेगा।"

तत्पश्चात मैंने देखा कि आप के चेहरे का रंग बदल गया और आप इशा की नमाज़ के लिए खड़े हो गए। मैं रोने-गिड़गिड़ाने का वह दृश्य भूल नहीं सकती जो उस समय मेरी आँखों ने देखा। उस रोने में तड़प और बेचैनी

भी थी उसमें ईमान और पूर्ण विश्वास का भी प्रदर्शन था यही दृश्य फिर मैंने तहज्जुद के समय देखा। उस समय हज़रत मुस्लिह मौऊद बुलंद आवाज़ से अत्यन्त विनय और आर्दतापूर्वक दुआएं मांग रहे थे।

तो जब दिन चढ़ा और डाक का समय हुआ तो पहला तार जो मिला वह यह ख़ुशख़बरी लिए हुए था कि हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब और मियाँ नासिर अहमद साहिब छूट गए हैं। कितनी जल्दी मेरे ख़ुदा ने मुझे दुआ के स्वीकार होने का चमत्कार दिखाया।

(अलफ़ज़्ल इंटरनेशनल 25 सितम्बर 2015ई० से 1 अक्टूबर 2015ई०, पृष्ठ-14 से उद्धत)

हज़रत हाफ़िज़ मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय रहमहुल्लाह तआला

हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय[रह०] सय्यिदिना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पोते और हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय के सुपुत्र हैं। आप 9 नवम्बर 1965 ई. को ख़लीफ़ा निर्वाचित हुए। 8,9 जून 1982 की मध्य रात्रि को आप का स्वर्गवास हुआ। आप न्यूनाधिक साढ़े सोलह वर्ष ख़िलाफ़त के पद पर आसीन रहे। इस अवधि में आप ने अफ्रीका, अमरीका, कनाडा और यूरोप के दौरे किए और जमाअत को बहुत सुदृढ़ और मज़बूत किया और इस्लाम अहमदियत का दुनिया के किनारों तक प्रचार किया। विशेष तौर पर आप ने यूरोप के अनेकों दौरे किए और इस्लाम का बहुत प्रचार-प्रसार किया, और जमाअत के लोगों की प्रभावी रंग में तर्बियत करते हुए ख़ुदा, रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और ख़िलाफ़त के प्रेम को सुदृढ किया। 9 अक्टूबर 1980 को आपने स्पेन के शहर करतुबा में मस्जिद बशारत की आधार शिला रखी। 744 वर्ष के पश्चात स्पेन में निर्मित होने वाली यह पहली मस्जिद थी। आप के साढ़े सोलह साला ख़िलाफ़त काल में बहुत से महान कार्य हुए। इसी बीच जमाअत पर कठिन समय भी आया परन्तु हर कठिन समय का आप ने मर्दों की तरह मुकाबला किया और जमाअत को ढारस बंधाई।

अल्लाह तआला ने सय्यिदिना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ख़ुशख़बरी दी थी-

اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ نَافِلَةً لَّكَ

अर्थात् हम तुझे पोते की बशारत देते हैं। इस बशारत (खुशखबरी) के चरितार्थ थे। हज़रत मुस्लिह मौऊद[रज़ि०] को भी अल्लाह तआला ने आप के बारे में ख़ुशख़बरी दी थी। अतः आप[रज़ि०] फ़रमाते हैं-

> "मुझे भी ख़ुदा ने ख़ुशख़बरी दी है कि मैं तुझे ऐसा लड़का दूँगा जो धर्म का नासिर (सहायक) होगा और इस्लाम की सेवा पर कटिबद्ध होगा।"

(अलफ़ज़्ल 8 अप्रैल 1915 ई.)

अतः अल्लाह तआला ने जैसा कि ख़ुशख़बरी दी थी उसके अनुसार आप जवानी से ही इस्लाम की सेवा पर कटिबद्ध हो गए। अपना जीवन इस्लाम के लिए समर्पित कर दिया और एक ही समय में कई ज़िम्मेदारियाँ अदा करते और कई-कई सेवाएं सम्पन्न करते रहे। यह कहना सर्वथा उचित होगा कि जवानी से लेकर मृत्यु तक आप का हर पल इस्लाम की सेवा में गुज़रा।

आप के ख़ुदा से संबंध की कुछ घटनाएँ नीचे वर्णन की जाती हैं-

हम आप को मसीहा स्वीकार कर लेंगे

सय्यिदिना हज़रत मुस्लिह मौऊद[रज़ि०] जैसे महान पिता की अत्यन्त पवित्र और आध्यात्मिक (रूहानी) मुहब्बत में पोषण पाने के परिणामस्वरुप आप बचपन से ही नेक और संयमी थे और धर्म और इस्लाम की सेवा की भावना को लेकर बड़े हुए। इस्लाम की सेवा की जो भावना तथा ख़ुदा से संबंध के जो विचार आप के सीने में बचपन से ही मौजें मारते थे जवानी में इन शब्दों में ढलकर बाहर निकले -

"दुनिया के काम बेशक करता रहूँगा मैं भी
लेकिन मैं जान और दिल से उस यार का रहूँगा।"

यह शेर आप का ख़ुदा से प्रेम और संबंध का पता देता है जो केवल 19 वर्ष की आयु में आप की मुबारक जीभ से निकला। आगे चलकर आप के इर्फ़ान (अध्यात्मज्ञान) की क्या अवस्था होगी उसका सही चित्रण करना हमारे बस की बात नहीं इसी नज़्म में आगे चल कर आप फ़रमाते हैं-

"चमकूंगा मैं फ़लक पर जैसे हो कोई तारा
भूलों को रह पै लाए ऐसी मैं शमा हूँगा
आलम को मैं मुअत्तर कर दूंगा उस महक से
ख़ुशबू से जिसकी हरदम मदहोश मैं रहूँगा
अख़्लाक़ में मैं अफज़ल, इल्मो हुनर में आ'ला
अहमद की रह पै चल कर बदरुद्दुजा बनूँगा
सारे उलूम का हां मंबअ है ज़ात जिसकी
उस से मैं इल्म लेकर दुनिया को आगे दूंगा।"

(हयाते नासिर, लेखक महमूद मुजीब असग़र, पृष्ठ-58,59)

इन शे'रों के पढ़ने से मालूम होता है कि जवानी से ही मानव जाति की सेवा और उन का अपने स्त्रष्टा और मालिक की ओर मार्ग-दर्शन की अग्नि आप के सीने में सुलग रही थी। नीचे एक रुचिकर घटना दर्ज की जाती है जिस से जवानी के युग से ही आप के ख़ुदा से संबंध पर ज़बरदस्त प्रकाश पड़ता है।

"जब क़ुदरत-ए-सानिया (दूसरी) का तीसरा प्रकटन हुआ और हुज़ूर ने ख़िलाफ़त का लिबास पहना तो उन्हीं

दिनों प्रोफ़ेसर डाक्टर नासिर अहमद खान पर्वाज़ी का फैसलाबाद की एक सभा में जाना हुआ जहां हुज़ूर के एक क्लास फैलो भी बिराजमान थे। संभवतः नवाबजादा मियां हामिद अहमद खान के परिजनों में से थे और ग़ैर अहमदी थे। डाक्टर पर्वाज़ी साहिब से मिले तो कहने लगे भाई मुबारक हो आप को नया लीडर ख़ूब मिला है। हम इकट्ठे पढ़ते थे। और हम उन्हें कहा करते थे कि आप के दादा जान का तो हमें पता नहीं परन्तु यदि आप नुबुव्वत का दावा कर दें तो हम आप को मसीहा स्वीकार कर लेंगे। ख़ाकसार कहता है कि यह केवल नौजवान वाला मज़ाक नहीं था। हुज़ूर के संयम और पवित्रता का ऐसा ही प्रभाव मिलने वालों पर हुआ करता था।"

(हयाते नासिर पृष्ठ-66,67)

मुझे दुनिया की ओर कोई अभिलाषा नहीं

उर्दू में जवानी दीवानी का मुहावरा प्रसिद्ध है। अर्थात् जवानी में इन्सान से ग़लतियां और भूलें हो जाती हैं परन्तु आप की जवानी अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत, इस्लाम और मानव जाति की सेवा की भावना से ओतप्रोत थी। वास्तव में आप "दर जवानी तौबः कर्दन शेवए पैग़म्बरी" के चरितार्थ थे। जवानी में जबकि सांसारिक उमंगें बहुत अंगड़ाइयां लेती हैं आप का दिल केवल इस्लाम की सेवा की भावना से भरा हुआ था। आप का संयम और पवित्रता तथा पवित्र जवानी की बहुत से लोगों ने गवाही दी है। दो और घटनाएँ नीचे दर्ज

की जाती हैं-

आप अपनी स्टूडेंट लाइफ में अपने ख़ानदान के दूसरे नौजवानों साहिबज़ादा मिर्ज़ा मुज़फ्फ़र अहमद साहिब इत्यादि के साथ इंग्लैण्ड के डेविनशायर इलाके की एक अंग्रेज़ी स्त्री के फार्म में छुट्टियां गुज़ारने के लिए जाया करते थे। आप के ख़िलाफ़त के काल में भूतपूर्व इमाम मस्जिद फ़ज़्ल लन्दन जनाब बशीर अहमद रफ़ीक साहिब के पूछने पर उस वृद्ध स्त्री ने बताया-

"वह सामने कमरा है जिसमें वह हमेशा ठहरा करते थे और सुबह-सुबह जब मैं उनके कमरे के आगे से गुज़रती तो एक अदभुत भिनभिनाहट की मंत्रमुग्ध करने वाली आवाज़ आया करती जो मैं कभी खड़े होकर कुछ मिनट सुना करती। एक दिन मैं ने नासिर से पूछा कि तुम सुबह सवेरे क्या पढ़ते रहते हो जिसमें कभी अनुपस्थिति नहीं होती तो नासिर ने बताया कि वह अपनी मुक़द्दस किताब पवित्र क़ुर्आन की तिलावत करते हैं-

इसी स्त्री ने यह भी कहा कि एक शाम खाने पर जब हुज़ूर रहमहुल्लाह और दूसरे साहिबज़ादे मौजूद थे यह ज़िक्र चल पड़ा कि भविष्य में उनके क्या इरादे हैं। प्रत्येक ने बताया कि वे क्या करना चाहते हैं और किस पेशे को ग्रहण करने का इरादा रखते हैं। जब हुज़ूर रहमहुल्लाह की बारी आई तो आप ने फ़रमाया कि मैं इस्लाम की सेवा करने का इरादा रखता हूं और अपना जीवन इस उद्देश्य के लिए समर्पित करने का सकंल्प किए बैठा

हूं। मुझे और कोई इच्छा नहीं और न ही मुझे दुनिया की ओर कोई चाहत है।"

(हयाते नासिर पृष्ठ-104,105)

मुझे मालूम है कौन ख़लीफ़ा होंगे

मुकर्रम बशीर अहमद साहिब रफ़ीक भूतपूर्व इमाम मस्जिद लन्दन लिखते हैं-

"1965 में जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि॰] का निधन हुआ तो मैं मस्जिद फ़ज़्ल लन्दन का इमाम था। सिलसिले के मर्कज़ से हज़ारों मील दूर हम सब अहमदी बर्तानिया मर्कज़ की ओर से किसी ख़बर की ओर कान लगाए बैठे दुआओं में व्यस्त थे और इस बात की बहुत बेचैनी से प्रतीक्षा हो रही थी कि तीसरी ख़िलाफ़त के तख़्त पर कौन बैठता है। इस अवस्था में जब जमाअत के बहुत सारे लोग मिशन हॉउस लन्दन में जमा थे। हमारे अंग्रेज़ मुसलमान अहमदी भाई स्वर्गीय मिस्टर बिलाल नटल मेरे पास आए और कहा कि मुझे मालूम है कि कौन ख़िलाफ़त पर शोभायमान होगा। मिस्टर नटल ने एक तस्वीर मेरे हाथ में देते हुए बड़े भावुक रूप में भर्राई हुई आवाज़ में कहा कि हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा नासिर अहमद की तस्वीर है जो उन्होंने लन्दन की मस्जिद के बाग़ में खिंचवाई थी और मुझे दी थी। मैं उन दिनों से जब हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब आक्सफ़ोर्ड के

विद्यार्थी थे उनको जानता हूं। उनके बहुत क़रीब रहा हूं और ख़ुदा का संयम,सदाचरण और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इश्क की जो झलक मैंने उनमें देखी वह मुझे इस दृढ़ विश्वास पर स्थापित करती है कि इस समय इस महा प्रतापी पद के वही पात्र हैं। और जमाअत निस्सन्देह इस अमानत को उनके ही सुपुर्द करेगी। मिस्टर बिलाल नटल (स्वर्गीय) की मौजूदगी में ही मर्कज़ से तार द्वारा यह सूचना मिली कि हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब तीसरी ख़िलाफ़त के महाप्रतापी पद पर आसीन हो गए हैं। और इस प्रकार एक अंग्रेज़ नव मुस्लिम की दूरदर्शी दृष्टि ने जवानी में ही इस अमूल्य मोती को पहचान लिया था। जिस से अल्लाह तआला ने भविष्य में महान कार्य लेने थे और हुज़ूर की पवित्रता, ख़ुदा से भय, अल्लाह का संयम और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उनको गवाह ठहराने का सम्मान प्रदान किया।"

(हयाते नासिर पृष्ठ-103,104)

सिलसिले की ग़ुलामी को समस्त सम्मानों से प्रतिष्ठित समझता हूं

इस्लाम की सेवा को अपने लिए सबसे प्रतिष्ठित समझना और उसकी सेवा के लिए अपने जीवन को समर्पित कर देना और उसके बिना अपने जीवन को मात्र बेकार और व्यर्थ समझना ऐसे विचार केवल

उस मनुष्य के हो सकते हैं जिस का अल्लाह और उसके रसूल से गहरा संबंध हो। आप का एक पत्र पढ़ने से संबंध रखता है जो आप ने अपने पिता मुकर्रम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि०] की सेवा में लिखा। पत्र का एक भाग नीचे प्रस्तुत किया जाता है- आप लिखते हैं।

"सय्यिदी!

अस्स्लामो अलैकुम व रह्मतुल्लाहि व बरकातुहू

एक ओर हुज़ूर के ख़ुत्बे मुनाफ़िकों (कपटाचारियों) के बारे में नज़र से गुज़रे। दूसरी ओर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का वक्तव्य पढ़ने का संयोग हुआ। कहीं आप फ़रमाते हैं कि मेरी नज़र उन ग़रीबों पर है जो न बी.ए. बनना चाहते हों और न एम.ए. अपितु नेक इन्सान और धर्म का सेवक। दिल पर बहुत गहरा प्रभाव हुआ -----हुज़ूर की सेवा में निवेदन करता हूं कि यदि हुज़ूर उचित समझें तो बन्दा हमेशा की तरह अब भी तुरन्त सिलसिले की सेवा के लिए उपस्थित है। बी.ए. और एम.ए. बनने का मुझे कभी भी शौक नहीं हुआ और ख़ुदा तआला गवाह है। यद्यपि इसकी अभिव्यक्ति पहले न हो सकी और यद्यपि कुछ अन्य विचारों ने इसकी ओर विवश किया। यद्यपि समर्पित हूं परन्तु फिर दोबारा स्वयं को हुज़ूर के सामने प्रस्तुत करता हूं। बन्दा इसी समय से अहमदियत की सेवा के लिए उपस्थित है और सिलसिले की ग़ुलामी को समस्त सम्मानों से प्रतिष्ठित समझता हूं और सिलसिले की सेवा से पृथक रहते हुए अपने जीवन को ख़ाली और बेकार पाता

हूं। वमा तौफ़ीकी इल्लाह बिल्लाह।"

फ़कत ख़ाकसार-मिर्ज़ा नासिर अहमद

हज़रत मुस्लिह मौऊद को इस पत्र से जो आराम और ख़ुशी पहुंची उसकी अभिव्यक्ति आप ने एक पत्र में की जिस का एक भाग यहाँ नक़ल किया जाता है-

"प्यारे नासिर अहमद

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू

अल्लाह तआला तुम्हारे इरादे में बरकत डाले। मैं स्वयं इस बारे में तीव्र अहसास के बावजूद कुछ कहना पसंद नहीं करता था और अल्लाह तआला से दुआ करता था कि वह स्वयं ही तुम को नेक इरादा की तौफ़ीक दे क्योंकि मेरे नज़दीक मेरी तहरीक पर तुम्हारे इरादे को बदलना तुम्हारे सवाब (पुण्य) को नष्ट कर देता। इसलिए अलहम्दुलिल्लाह तुम्हारा दिल इस ओर आकृष्ट हुआ।"

(हयाते नासिर पृष्ठ-107,108)

शेरवानी जैसे घूम गई

अल्लाह तआला की विशेष सहायता और समर्थन की एक रुचिकर घटना को नीचे दर्ज किया जाता है। इस से आप[रह०] के ख़ुदा से संबंध पर विशेष प्रकाश पड़ता है-

1979-1980 के युग की बात है कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय[रह०] ने इस्लामाबाद में मग़रिब और इशा की नमाज़ों के बाद मज्लिस-ए-इरफ़ान में अपनी गिरफ़्तारी का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि

उस समय आप लाहौर में थे। साहिबज़ादा मिर्ज़ा लुक़मान अहमद पैदा होने वाले थे और आप अपनी बेगम सय्यदा मंसूर बेगम साहिबा को हस्पताल में दाख़िल करवा कर आए। तहज्जुद की नमाज़ पढ़कर तकिए पर सिर रखा ही था कि इल्हाम द्वारा बताया गया कि गिरफ़्तारी होने वाली है और इस से कुछ ही क्षणों के बाद मिलिट्री आ गई और उस ने तलाशी लेना चाही। आप ने फ़रमाया कि जब वे आप की शेरवानी की जेबों में हाथ डालने लगे जो अलमारी में खूँटी के साथ लटक रही थी तो उसकी एक जेब में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब[रज़ि॰] का एक पत्र था जिसमें यद्यपि कोई ऐसी बात नहीं थी। जिस से कोई ख़तरा संलग्न होता, परन्तु आप पसन्द नहीं करते थे कि वह पत्र तलाशी लेने वाला अफ़सर पढ़े। जब तलाशी लेने वाले अफ़सर ने एक जेब की तलाशी ली और अपना हाथ दूसरी जेब में डालना चाहा जिसके अन्दर पत्र था तो शेरवानी जैसे घूम गई और उसका हाथ फिर पहली जेब में चला गया और इस प्रकार दो तीन बार हुआ और अल्लाह तआला की हिकमत से वह पत्र उनके हाथ न लगा। जो फौजी अफ़सर आप को पकड़ने आए उनको आप ने फ़रमाया "मुझे तो आप के आने का पता था मैं तो प्रतीक्षा कर रहा था आप ने देर कर दी।"

(हयाते नासिर पृष्ठ-171,172)

क़ैद के समय में एक चमत्कार

स्वयं सय्यिदिना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय[रह॰] ने औरतों को संबोधित करते हुए जल्सा सालाना 1969 ई. के अवसर पर फ़रमाया-

"मैंने कई बार बताया है कि जब एक अवसर पर

अत्याचार करते हुए हमें भी क़ैद में भेज दिया गया। गर्मियों के दिन थे और मुझे पहली रात उस तंग कोठरी में रखा गया जिसमें हवा का कोई गुज़र नहीं था और इस प्रकार की कोठरियों में उन लोगों को रखा जाता है जिन्हें अगले दिन फांसी पर लटकाया जाना हो। ज़मीन पर सोता था, ओढ़ने के लिए एक पुराना कम्बल था और सिर के नीचे रखने के लिए अपनी अचकन थी। बड़ा कष्ट था। मैंने उस समय दुआ की कि हे मेरे रब्ब! मैं अत्याचार करके, चोरी करके, किसी की कोई चीज़ मारकर या हड़प करके या कोई और गुनाह करके इस कोठरी में नहीं पहुंचा। मैं इस जगह इसलिए भेजा गया हूं कि जहां तक मेरा संबंध है मैं समझता हूं कि मैं तेरे नाम को बुलंद करने वाला था। मैं उस जमाअत में शामिल था जो तूने इसलिए स्थापित की है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रेम दिलों में पैदा किया जाए। मेरे रब्ब! मुझे यहां आने से कोई शिकायत नहीं। मैं कोई शिक्वः नहीं करता, मैं ख़ुश हूं कि तू ने मुझे क़ुर्बानी का एक अवसर दिया है और मेरी इस तकलीफ़ की मेरी अपनी दृष्टि में भी कोई वास्तविकता और क़द्र नहीं है, परन्तु यह भी एक हकीकत है कि मैं उस जगह जहां हवा का गुज़र नहीं सो नहीं सकूंगा। मैं यह दुआ कर रहा था और मेरी आंखें बंद थीं। मैं बिना अतिश्योक्ति आप को बताता हूं कि मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मेरे नज़दीक एक एयर

कंडिशनर लगा हुआ है और उससे एक बहुत ठंडी हवा निकल कर पड़नी शुरू हुई और मैं सो गया।

(हयाते नासिर पृष्ठ-173)

जा यहां से चली जा

1954 ई. की बात है सय्यिदिना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि०] के निर्देश पर आप तालीमुल इस्लाम कालेज रब्वाह के निर्माण की पूर्ण निगरानी कर रहे थे। तेज़ धूप और अत्यन्त गर्मी के दिन थे, परन्तु आप थे कि मौसम की सख़्ती से लापरवाह अपने आक़ा के आदेश का पालन करने में रात-दिन एक किए बैठे थे। इस बीच एक ईमान में वृद्धि करने वाली घटना प्रकट हुई जिस से आप के ख़ुदा से संबंध पर प्रकाश पड़ता है। चौधरी मुहम्मद अली साहिब प्रिंसिपल तालीमुल इस्लाम कालेज रब्वाह लिखते हैं-

"अल्लाह तआला के फ़ज़्लों और उपकारों के भी विचित्र-विचित्र चमत्कार देखे। जब हॉल का लिन्टल (LINTEL) पड़ने वाला था और बहुत बड़ी मात्रा में सीमेन्ट और मसाला भिगोकर तैयार किया जा चुका था तो काला बादल उठा और घिरकर छा गया। आपने हाथ उठा कर बादल की ओर इशारा किया और फ़रमाया जिस का अर्थ यह था यह ग़रीब जमाअत की ख़र्च की हुई राशि है। यदि तू बरसा तो यह राशि नष्ट हो जाएगी। जा यहां से चला जा। वास्तव में आप की अल्लाह से यह एक रंग में फ़र्याद थी जो स्वीकार हुई और जिस प्रकार

बादल आया था उसी प्रकार चला गया।"

(हयाते नासिर पृष्ठ-189)

अल्लाह ने मेरा सन्देह दूर करना था

आप[रह०] की तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने की घटना साहिबज़ादी अमतुश्शकूर साहिबा वर्णन करती हैं-

"मैं प्राय: सोचा करती कि अधिकतर लोग अपने तहज्जुद इत्यादि पढ़ने का ज़िक्र करते हैं। अब्बा ने कभी नहीं किया न ही मैंने कभी पढ़ते देखा। अल्लाह तआला ने मेरा सन्देह दूर करना था। इसलिए एक बार मेरी आंख खुली आधी रात के समय बहुत प्यास लग रही थी पाने पीने जाने के लिए अब्बा के कमरे से गुज़रना पड़ा वहाँ देखा कि अब्बा नफ़्ल पढ़ रहे हैं। पानी पीकर वापस आई तो सलाम फेर चुके थे हल्की रोशनी में मैंने देखा कि चेहरे पर शर्मिन्दगी के लक्षण थे जैसे मैंने कोई चोरी पकड़ ली हो।"

(हयाते नासिर पृष्ठ-217,218)

अल्लाह से प्रेम

आप की दूसरी पत्नी सय्यिदा ताहिरा सिद्दीक़ा नासिर साहिबा फ़रमाती हैं-

हुज़ूर (हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय[रह०]) का अपने रब्ब के साथ संबंध वास्तव में अपने अन्दर कितनी गहराई और विशालता

रखता था। इसका विवरण तो न मैं जानती हूं और न ही वर्णन करने की शक्ति रखती हूं। परन्तु आज भी मेरे कानों में अपने भाषणों और ख़ुत्बों में आप का अनेकों बार कहा हुआ एक शब्द मधुरता घोलता है। किस प्रेम से आप "रब्ब" का शब्द अदा किया करते थे। और अदायगी की उस शैली में ही बहुत कुछ आ जाता था। आप के जीवन का उद्देश्य और आप के दिल की तड़प केवल यही थी कि दुनिया में "तौहीद ख़ालिस" (शुद्ध एकेश्वरवाद) की स्थापना हो और सम्पूर्ण संसार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के झंडे तले जमा हो जाए। तो अपने रब्ब के पास ही याचना करते हैं-

"हे मेरे अल्लाह! हमारे प्यारे रब्ब! तू ऐसा कर कि तेरे ये कमज़ोर और ग़रीब बन्दे तेरे लिए मानव जाति के दिल जीत लें और तेरे क़दमों में उन्हें ला डालें। ऐसा कर कि सदैव के लिए दुनिया के हर घर और उन घरों में बसने वाले हर दिल से **ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह** की आवाज़ और दुनिया की हर जीभ से अल्लाहु अकबर का नारा बुलंद होता रहे।"

(जल्सा सालाना की दुआएं पृष्ठ-18)

फिर अल्लाह तआला के हुज़ूर अर्ज़ करते हैं -

"हे हमारे रहमान! इन्हीं हाथों को अपनी रहमत (दया) से "यदे बैज़ा" कर दे। तेरा सौन्दर्य और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्दरता दुनिया पर चमके और तेरा प्रताप और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की श्रेष्ठता दुनिया पर प्रकट हो। इस्लाम और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घमण्डी दुश्मन

का सिर झुका दे और शर्मिंदा कर दे।"

आप जब नमाज़ अदा कर रहे होते तो उस समय आप के चेहरे पर अत्यन्त आर्द्रता की अवस्था होती। मैंने कई बार नमाज़ पढ़ते हुए आप के चेहरे को ध्यानपूर्वक देखा आप के माथे पर पड़ने वाली लकीरों से महसूस होता कि आप ने अपना पूरा ध्यान इस ओर किया हुआ है और चेहरे से वास्तव में ऐसे लग रहा होता जैसे आप रो रहे हों।

(हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद अज़ सय्यिदा ताहिरा सिद्दीक़ा नासिर, पृष्ठ-163)

दुआ की स्वीकारिता का चमत्कार

आपरह० के ख़िलाफ़त काल में सम्पूर्ण जमाअत ने दुआ की स्वीकारिता के असंख्य प्रदर्शन देखे हैं उनमें से कुछ तो विभिन्न निबंधों में लिखे जा चुके हैं परन्तु बहुत से ऐसे हैं जो कि केवल मस्तिष्कों में सुरक्षित हैं।

एक दिन आपरह० अपने कमरे में अपने बिस्तर पर बैठे हुए थे फ़रमाया-

"देखो अल्लाह तआला की मुझ पर कितनी कृपा (फ़ज़्ल) है। मैं तो उसका निराश्रय बन्दा हूं परन्तु मैं मुंह से निकाल देता हूं कि बेटा होगा और वह बेटा दे देता है।"

यह बात कहते हुए आप का लहजा, आप की आवाज़, आपके चेहरे का प्रभाव आज भी नज़रों के सामने है। अत्यन्त विनयपूर्ण आचरण और अपने रब्ब के प्रेम में डूबा हुआ चेहरा था।

अतः बार-बार ऐसा हुआ कि आपने बच्चे के लिए केवल लड़के का ही नाम बताया और लड़का ही हुआ या फिर बच्ची का नाम दिया तो बच्ची ही पैदा हुई। ये घटनाएँ तो बहुत हैं। बहुत से घरों में जहां वर्षों से सन्तान नहीं हो रही थी आप की दुआओं को स्वीकार करते हुए अल्लाह तआला ने शादी के कई-कई वर्ष बाद बच्चे प्रदान किए। अफ्रीका की एक औरत के यहां शादी के चालीस वर्ष बाद जबकि वह सन्तान पैदा करने की आयु से गुज़र चुकी थी आप की दुआ की बरकत से सन्तान हुई।

बहुत से रोगियों को अल्लाह तआला ने आप की दुआ की बरकत से चमत्कार के रंग में शिफ़ा दी। केवल एक अविश्नीय घटना प्रस्तुत है-

मौलवी अब्दुल करीम साहिब काठगढ़ी शाहिद मुरब्बी सिलसिला आलिया अहमदिया Multiple Myeloma जैसी घातक बीमारी (केन्सर का एक प्रकार) में ग्रस्त हो गए। बीमारी बिल्कुल अन्तिम सीमाओं तक पहुँच चुकी थी और बेहोशी छाई थी। डाक्टर ला इलाज ठहरा चुके थे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय की सेवा में दुआ के लिए निवेदन किया गया। आप ने सन्देश भिजवाया कि-

"सुच्ची बूटी सुबह-शाम दी जाए और हस्पताल में रहने दिया जाए। विशेष दुआएं की जा रही हैं।"

अतः मुर्दों को ज़िन्दा करने वाले मोजज़ा के पात्र हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस रूहानी जानशीन (उत्तराधिकारी) की दुआओं की बरकत से वास्तव में एक मुर्दा ज़िन्दा हुआ और फिर उन मौलवी साहिब को अल्लाह तआला ने पन्द्रह सोलह वर्ष अतिरिक्त

जीवन प्रदान किया।

सन 1976 ई. में आप घोड़े से गिर गए कमर के तीन मुहरों में फ्रेक्चर था फ़रमाया-

"डाक्टरों ने मुझे कहा कि अब आप कभी भी उकडूं नहीं बैठ सकेंगे। मैंने अल्लाह तआला से दुआ की। हे मेरे ख़ुदा! मेरी ज़िम्मेदारियाँ ऐसी हैं तु मुझे शिफ़ा दे।"

तीन माह तक आप बिस्तर पर रहे और इसके बाद चमत्कार के तौर पर अल्लाह तआला ने शिफ़ा दी और आप पहले की तरह अपनी ज़िम्मेदारियाँ अदा करते रहे।

अल्हम्दुलिल्लाह अला ज़ालिक

(हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमर अज़ सय्यिदा ताहिरा सिद्दीक़ा नासिर पृष्ठ-167,168)

उस (ख़ुदा तआला) के यहां कोई बात अनहोनी नहीं

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय[रह०] फ़रमाते हैं-

रब्वाह में मुझे एक व्यक्ति का पत्र मिला कि उसके दो रिश्तेदारों को मृत्यु दण्ड का फैसला हुआ है और असल अपराधी तो बच गया है। परन्तु हम जो अपराधी नहीं उन्हें दण्ड मिल रहा है। हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट ने भी मृत्यु दण्ड का फैसला यथावत रखा है। प्रत्यक्ष में बचने का कोई उपाय नहीं है। अब हम रहम की अपील कर रहे हैं। हमारे लिए दुआ करें।

अत: मैंने उन्हें लिखा कि मैं दुआ करूंगा ख़ुदा तआला बड़ा ही शक्तिमान और दयालु है उसके यहां कोई बात अनहोनी नहीं। निराश न हों। कुछ दिनों के बाद मुझे उन का पत्र मिला कि ख़ुदा तआला

के फ़ज़्ल से अदालत ने उन्हें इस अपराध से बरी ठहरा दिया है।

(अलफ़ज़्ल इंटरनेशनल 25 सितम्बर 2015 से 1 अक्टूबर 2015 से उदधृत पृष्ठ-14)

कौन कहता है कि आराम नहीं आ सकता?

मुहम्मद अमीन ख़ालिद साहिब जर्मनी से वर्णन करते हैं कि आज से पैंतालीस वर्ष पूर्व मेरे सीने की हड्डी में दर्द उठा। कई डाक्टरों से इलाज करवाया। हर प्रकार के टेस्ट करवाए गए परन्तु दर्द में कोई फ़र्क नहीं पड़ा। अन्ततः डाक्टर भी विवश हो गए और मुझे लाइलाज ठहरा दिया और कहा कि अब जो कुछ दिन जीवन के शेष रह गए हैं वे इसी कष्ट में गुज़ारो। इसी बीच 1980 में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय[रह०] हेम्बर्ग आए। ख़ाकसार स्वागत के लिए लाइन में खड़ा था। ख़ाकसार ने हाथ मिलाते हुए अपना कष्ट बता दिया और कहा कि डॉक्टरों ने लाइलाज ठहरा दिया है और कहा है कि अब मुझे इस कष्ट से मुक्ति नहीं मिल सकती।

इस पर हुज़ूर ने बड़े प्रतापपूर्ण अन्दाज़ में फ़रमाया-

"कौन कहता है कि आराम नहीं आ सकता? फिर हुज़ूर ने मेरी कमीज़ का एक बटन अपने मुबारक हाथ से खोला और मेरे सीने पर एक दायरा बनाया और फ़रमाया कि 'क्या यहाँ दर्द होता है?' मैंने कहा जी हुज़ूर! इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया- हम दुआ करेंगे इन्शाअल्लाह आराम आ जाएगा घबराएँ नहीं।"

अतः अमीन साहिब बताते हैं कि आज इस घटना को पैंतीस वर्ष हो चुके हैं और वह दिन और आज का दिन मेरी यह हालत है

कि जैसे यह कष्ट मुझे हुआ ही न था।

(अलफ़ज़्ल इंटरनेशनल 25 सितम्बर 2015 से 1 अक्टूबर 2015 पृष्ठ-15 से उदधृत)

अवश्य नर सन्तान प्रदान करेगा

मियाँ मुहम्मद असलम साहिब आफ पत्तोकी लिखते हैं-

1965 ई. में मेरी शादी हुई। शादी के बारह साल गुज़र गए परन्तु कोई सन्तान न हुई। समस्त रिश्तेदार ग़ैर अहमदी थे। समस्त रिश्तेदारों और गांव वालों ने यह कहना शुरू कर दिया कि "चूंकि क़ादियानी हो गया है इसलिए अब्तर (बेऔलाद) रहेगा।" मैंने हर प्रकार का इलाज कराया परन्तु सन्तान न हुई। इस बीच ख़ाकसार ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय[रह०] की सेवा में समस्त परिस्थितियां लिखकर दुआ का निवेदन किया। पत्र के उत्तर में हुज़ूर ने फ़रमाया-अल्लाह तआला आप को कभी बर्बाद नहीं करेगा और अवश्य नर सन्तान प्रदान करेगा। समय के ख़लीफ़ा की इस दुआ के बाद मेरे चार लड़के हुए। सब लोग हैरान थे कि इसकी औलाद किस प्रकार हो गई। हालांकि लेडी डॉक्टर ने कहा था कि इस औरत से औलाद होने का प्रश्न ही नहीं। अर्थात् डाक्टरी दृष्टि से यह औरत औलाद पैदा नहीं कर सकती। इस पर मैं लोगों को बताता कि यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का ज़िन्दा निशान है जो अल्लाह तआला ने ख़लीफ़तुल मसीह की दुआ की बरकत से दिया।

(अलफ़ज़्ल इंटरनेशनल 25 सितम्बर 2015 से 1 अक्टूबर 2015 पृष्ठ-15 से उदधृत)

हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ रह॰

हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थरह॰ 18 दिसम्बर 1928 ई. को क़ादियान दारुल अमान में पैदा हुए। आप को युग के इमाम मसीह-व-महदी अलैहिस्सलाम का पोता और मुस्लिह मौऊद ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीयरज़ि॰ का सुपुत्र होने का गर्व प्राप्त है। स्पष्ट है कि ऐसे महान दादा और ऐसे महान पिता के आचरण और गुणों को देखते, पढ़ते और सुनते हुए पोषण पाना संयम और पवित्रता, उत्तम शिक्षा, प्रशिक्षण तथा उच्चतम आचरण एवं गुणों की गारन्टी उपलब्ध कर देता है।

पिता हज़रत मुस्लिह मौऊदरज़ि॰ और मां हज़रत मरयम बेगम साहिबारज़ि॰ की उत्तम शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आप पर गहरा प्रभाव था। इसका निश्चित परिणाम था कि आप बचपन से ही संयमी और अल्लाह तआला के अस्तित्व पर विचार और चिंतन करने वाले थे।

आपने सांसारिक शिक्षा के अतिरिक्त जामिआ अहमदिया रब्वाह की शिक्षा भी पूर्ण की और शाहिद की डिग्री प्राप्त की। 10 जून 1982 को आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चौथे ख़लीफ़ा निर्वाचित हुए। जब आप छोटे थे उस समय ही आप के पिता श्री हज़रत मुस्लिह मौऊद को अल्लाह तआला ने इल्हाम द्वारा बता दिया था कि ताहिर बड़ा होकर ख़लीफ़ा बनेगा।

शिक्षा पूर्ण करते ही आप जमाअत की सेवा में व्यस्त हो गए।

बहुत से महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन रह कर सेवा की तौफ़ीक मिली। अल्लाह तआला ने आपको विशेष ज्ञान की योग्यता और भाषण तथा लेखन की महारत प्रदान की थी। ख़िलाफ़त से पूर्व आप की मज्लिस प्रश्न-व-उत्तर में लोग दूर-दूर से आकर सम्मिलित होते।

आप का न्यूनाधिक 21 वर्षीय ख़िलाफ़त का युग महान कारनामों से भरा पड़ा है जिसमें अल्लाह तआला ने बड़े-बड़े चमत्कार दिखाए, स्पष्ट रूप से असंभव नज़र आने वाली हालातों में अल्लाह तआला ने आपको सुरक्षापूर्वक लन्दन पहुँचाया। असलम क़ुरैशी जो एक षड्यंत्र के अन्तर्गत छुप गया था बाहर निकल कर मुल्लाओं को जो उसको बहका कर क़त्ल का आरोप ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह॰] पर लगा रहे थे और अत्याचारी ज़ियाउलहक़ को अपमानित और बदनाम किया। हुज़ूर के मुबाहले के परिणामस्वरुप बदनाम ज़माना और फ़िरऔन ज़माना डिक्टेटर सदर पाकिस्तान ज़ियाउलहक़ का ख़ुदा तआला ने विनाश किया। जिसने पाकिस्तान के अहमदियों पर अँधाधुंध अत्याचार किए थे। हुज़ूर ने वक़्फे नौ की अज़ीमुश्शान तहरीक को जारी किया, आलमी बैअत का प्रारंभ आपके ख़िलाफ़त काल में हुआ। एम.टी.ए. के अज़ीमुश्शान रूहानी दस्तरख़्वान के दाग़बेल आप ने डाली और उसे सुदृढ़ किया।

जैसा कि पहले भी ज़िक्र किया जा चुका है कि नमाज़ का प्रेम वास्तव में अल्लाह ही का प्रेम है। अल्लाह के समक्ष सज्दा करना उससे दुआएं करना और उस पर पूर्ण भरोसा होना यह ख़ुदा से संबंध का प्रमाण है। नीचे आप की दुआ की स्वीकारिता और नमाज़ से इश्क-व-मुहब्बत की घटनाएँ दर्ज की जाती हैं-

जिसकी दुआ स्वीकार होगी उसे दो गैलन पेट्रोल और कार मिलेगी

एक बार का ज़िक्र है हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि॰] अपने परिवार सहित (एक सफ़र से) क़ादियान वापस आ रहे थे। रास्ते में पता चला कि गाड़ी का पेट्रोल समाप्त होने को है। पेट्रोल के पैमाने की सुई शून्य के निशान तक पहुँच गई है। वास्तव में उन्हें चलते समय पेट्रोल लेना याद नहीं रहा था। अब आधा सफ़र हो चुका था और आधा शेष था तथा अभीष्ट मंज़िल अर्थात् क़ादियान तक रास्ते में दूर-दूर तक किसी पेट्रोल पम्प का अस्तित्व तक नहीं था। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि॰] बच्चों को संबोधित करके फ़रमाने लगे- बच्चो! आओ हम सब अल्लाह तआला के समक्ष दुआ करें कि हे अल्लाह! इस मुश्किल को रास्ते का रोग न बना और अपने विशेष अधिकार से हमें इसी प्रकार क़ादियान पहुंचा दे। मैं वादा करता हूं कि जिसकी दुआ भी स्वीकार हुई मैं उसे क़ादियान पहुँचकर दो गैलन पेट्रोल और कार के इस्तेमाल की अनुमति दे दूँगा।

हो सकता है यह बात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि॰] ने सरसरी तौर पर हमारी तर्बियत (प्रशिक्षण) के लिए कही हो। बहरहाल हुआ यह कि साहिबज़ादा ताहिर अहमद के भाई-बहनों ने तो इस ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया परन्तु अल्प आयु ताहिर अहमद बड़ी गंभीरता और एकाग्रचित्त होकर दुआ में व्यस्त रहे यहां तक कि इसी हालत में कार क़ादियान पहुंच गई। क़ादियान पहुँचे तो ताहिर अहमद सहसा पुकार उठे- "अब्बा जान मैं निरंतर दुआ करता रहा हूं मैं उस समय से दुआ करता चला आ रहा हूं जिस समय आप ने दुआ के

लिए कहा था।"

अतः हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि०] ने वादे के अनुसार दो गैलन पेट्रोल और कार के इस्तेमाल की अनुमति दे दी और ताहिर अहमद मज़े से सैर और तफ़रीह के लिए रवाना हो गए।

(एक मर्दे ख़ुदा पृष्ठ-77,78)

ख़ुदा की खोज और तलाश तथा संबंध

यह घटना उस समय की है जब अभी आप बच्चे थे इससे मालूम होता है कि बचपन से आप को दुआ से कितना लगाव था। अभी जवानी की दहलीज़ पर मुश्किल से क़दम रखा था कि अल्लाह की तलाश और जुस्तजू प्रश्न बन कर आपके दिल व दिमाग पर छा गई कि यदि अल्लाह तआला का अस्तित्व है और निस्सन्देह है तो उसका सबूत आप के अस्तित्व में मिलना चाहिए। अतः आप दिन रात दुआओं में लग गए। अल्लाह तआला ने आपकी दुआओं को स्वीकारिता से सम्मानित किया और स्वप्न के द्वारा अपने अस्तित्व का सबूत दिया।

आप फ़रमाते हैं-

"यह मेरे जीवन का कठिनतम दिन था एक बेचैनी और व्याकुलता की अवस्था थी। जो अन्दर ही अन्दर खाए जा रही थी। एक न दिखाई देने और न महसूस शक्ति पर ईमान लाना और उस पर अपने सम्पूर्ण जीवन की सरसरी और सोच विचार की इमारत निर्मित करना कोई आसन काम नहीं था। यह एक चेलेंज था जो सामने था। जिसने मुझे बड़े असमंजस में ग्रस्त कर दिया। एक विचित्र पीड़ा दायक अवस्था

थी जिससे में ग्रस्त था। मुझे विश्वास था कि सैद्धांतिक तौर पर तो ख़ुदा का अस्तित्व अनिवार्य था, परन्तु क्या वास्तव में भी वह मौजूद है? और यदि है तो क्या मुझे वह अपना चेहरा दिखाएगा?

कभी वह मस्जिद में जाकर घंटों इबादत में व्यस्त रहते और कभी अपने कमरे ही में सारी-सारी रात इबादत में गुज़ार देते। अतः आप फ़रमाते हैं-

"मैं ख़ुदा के हुज़ूर दुआ करता और कहता कि "हे ख़ुदा! यदि तू मौजूद है तो मुझे तेरी तलाश है तू मुझे बता कि तू है, कहीं ऐसा न हो कि मैं भटक जाऊँ। क्या मुझ पर इस गुमराही की ज़िम्मेदारी तो नहीं होगी? और फिर सोचता कि शायद हो भी। फिर मैं दुआ करता कि हे ख़ुदा! यह ज़िम्मेदारी मुझ पर तो लागू नहीं होनी चाहिए।"

पुस्तक "एक मर्दे ख़ुदा" के लेखक "आइन एडमसन" लिखते हैं-

फिर एक तीसरे पहर वह एक ऐसे रूहानी अनुभव से गुज़रे जिसके कारण ख़ुदा के अस्तित्व से संबंधित प्रश्न उन पर हमेशा के लिए हल हो गया वह स्वयं कहते हैं कि यदि उस अनुभव को कथित बातों की पद्धति से परखा जाए तो उसे ख़ुदा तआला के अस्तित्व का बहुत शक्तिशाली और ज़बरदस्त सबूत तो नहीं कहा जा सकता परन्तु उन्हें विश्वास है कि यह उत्तर था उस दुआ का जो उन्होंने की थी। फ़रमाते हैं-

"यह स्वप्न और जागने के बीच एक प्रकार की अर्ध ऊँघ की सी अवस्था थी मैंने देखा कि समस्त संसार ने सिकुड़ कर एक गेंद का रूप ग्रहण कर लिया है जिस पर दूर-दूर तक किसी प्राणी के कोई लक्षण दिखाई नहीं देते। न जीवन की चहल-पहल है न ही शहर

हैं न आबादियाँ। निष्कर्ष यह कि कुछ भी तो नहीं। केवल ज़मीन ही ज़मीन है। क्या देखता हूं कि अचानक ज़मीन का कण-कण कांपने लगा है और एक ज़न्नाटे से पुकार-पुकार कर कह रहा है हमारा ख़ुदा! हमारा ख़ुदा! एक-एक कण अपने अस्तित्व का मुख्य कारण की बुलंद आवाज़ से घोषणा कर रहा था।

"सम्पूर्ण कायनात (ब्रह्माण्ड) एक विचित्र प्रकार के प्रकाश से भर गई। एक-एक कण और एक-एक एटम ने एक सुर और ताल के साथ फैलना और सिकुडना शुरू किया। मैंने महसूस किया कि इन से साथ मैं भी ये शब्द दोहरा रहा हूं और कह रहा हूं हमारा ख़ुदा, हमारा ख़ुदा।"

पुस्तक के लेखक लिखते हैं कि अब वह पूर्ण जागने की अवस्था में वापस आ चुके थे परन्तु इस दृश्य को निरंतर देख रहे थे। इसके बाद उनके सब सन्देह हमेशा के लिए दूर हो गए।

(एक मर्दे ख़ुदा पृष्ठ-81 से 83)

ख़ुदाई इल्हाम और ख़ुदा से संबंध

जब स्वप्न के द्वारा अल्लाह तआला की हस्ती का सबूत आपको मिल गया और उसके बाद आप की दुआएं भी निरंतर स्वीकार होने लगीं तो अल्लाह तआला ने आपको अपना इल्हाम और कलाम प्रदान किया। इल्हाम अल्लाह तआला की हस्ती का ऐसा सबूत होता है कि उसके बाद अगर संपूर्ण संसार भी इन्कार कर दे तो इल्हाम पाने वाला ख़ुदा की हस्ती का कभी इन्कार नहीं कर सकता बल्कि वह उसकी मुहब्बत में निरंतर प्रगति करता चला जाता है।

आप फरमाते हैं:-

"वास्तव में जब मैं बचपन में भी दुआ करता था तो वह स्वीकार हो जाती थी परंतु कभी-कभी मैं यह भी सोचा करता कि कहीं इस एहसास में मेरे अपने दिमाग़ का कोई दख़ल न हो लेकिन जब मैंने हस्ती बारी तआला (ख़ुदा के अस्तित्व) के ऐसे सबूत अपनी आंखों से देख लिए जिन को रद्द नहीं किया जा सकता और मेरी विनम्रता पूर्ण दुआएं इस अधिकता से स्वीकार होने लगीं तो निस्संदेह यह बात मेरे लिए एक ठोस और जीवित सबूत के तौर पर खुलकर मेरे सामने आ गई। मुझे विश्वास है कि दुआ के स्वीकार होने के इन वृतांतों का संयोग से कदापि कोई संबंध नहीं था। यहां तक कि ख़ुदा तआला की हस्ती की सहायक रूपी गवाही फैलती और बढ़ती और मज़बूत से मज़बूत होती चली गई यहां तक कि वह समय भी आ पहुंचा जब ख़ुदा तआला ने अपनी कृपा से मुझे सीधे तौर पर अपने इल्हाम से सुशोभित किया।"

(एक मर्दे ख़ुदा पृष्ठ-84 से 85)

दुआ की स्वीकारिता और ख़ुदा से संबंध

दुआ की स्वीकारिता और ख़ुदा से संबंध का एक बहुत बड़ा प्रमाण होता है। और जब ख़ुदा किसी को अपना ख़लीफ़ा बना लेता है तो फिर उसकी दुआएं बड़ी प्रचुरता से स्वीकार करता है और इसका कारण यह होता है कि वह व्यक्ति ख़लीफ़ा बनने के बाद अपने ख़ुदा

से संबंध में बहुत आगे बढ़ जाता है। तो जितना संबंध बढ़ता जाता है उसकी दुआएं भी स्वीकारिता की श्रेणी को पहुंचती जाती हैं।

आप की दुआ की स्वीकारिता की कुछ घटनाएँ नीचे दर्ज की जाती हैं। आप फ़रमाते हैं-

दुआ करते समय यद्यपि इल्हाम से तो नहीं बताया जाता कि मेरी दुआ स्वीकार हो गई परन्तु पवित्र क़ुर्आन की कोई आयत अचानक मेरे दिल पर उतर जाती है जिसका बहुत गहरा सम्पर्क उस मामले से होता जिसके हल के लिए मैं दुआ कर रहा हूं। तो मैं समझ लेता हूं कि यह एक सन्देश है और इस बात की निशानी है कि मेरी दुआ स्वीकार हो गई है।

मैं जब दुआ करता हूं तो घटनाएँ एक क्रम और निरंतरता से प्रकट होना शुरू हो जाती हैं जिन्हें किसी प्रकार से भी संयोग नहीं ठहराया जा सकता, यहां तक कि किसी नास्तिक या इन्कारी के लिए भी इन्कार की कोई गुंजायश शेष नहीं रहती। मैं आप को एक छोटा सा उदाहरण देता हूं-

यह घटना उस समय सामने आई जब मैं अपनी बेगम और बच्चों के साथ यू.एस.ए. में सफर कर रहा था। मुझे आशंका थी कि एक नव आगन्तुक की हैसियत से कुछ शहरों में कहीं मार्ग न भूल जाऊँ।

इस संभावना को दृष्टिगत रखते हुए मैं दुआ में लग गया। अचानक मस्तिष्क में पवित्र क़ुर्आन की एक आयत कोंद गई। मुझे इत्मीनान हो गया कि अब न तो मार्ग भूलूंगा और न ही भूख-प्यास के कारण किसी प्रकार की परेशानी आएगी।

आधी रात के बाद कोई डेढ़ बजे के क़रीब हम शिकागो पहुँच गए। शिकागो एक विशाल और फैला हुआ शहर है और मीलों तक फैला हुआ है। बहुत संभव है कि एक सिरे से दूसरे सिरे तक उसकी लम्बाई 96 मील के क़रीब रही हो। हो सकता है यह अनुमान सही न हो परन्तु इस में कोई सन्देह नहीं कि शहर से एक सिरे से दूसरे सिरे तक फासले बहुत लम्बे हैं। संयोग की बात है कि मेरे पास शहर का नक्शा भी नहीं था। मैंने अपनी बेगम और बच्चों से कहा कि वे कार में ही इत्मीनान से सो जाएँ। मैं स्वयं गाड़ी चला रहा था। पहले कुछ बार सीधे हाथ मुड़ा और कुछ बार बाएँ हाथ और काफ़ी देर तक गाड़ी चलाता चला गया। मैंने एक पेट्रोल पम्प पर गाड़ी रोकी और वहाँ से मस्जिद अहमदिया में फ़ोन किया। पता चला कि मस्जिद अहमदिया दो एक गलियों पर क़रीब ही है।

इससे मिलती जुलती घटना नार्वे में भी सामने आई। हमने एक राह चलते व्यक्ति से अंग्रेज़ी भाषा में यह पूछा कि क्या आप जानते हैं कि हमारे मेज़बान कहां रहते हैं। उसने बड़े इत्मीनान से उत्तर दिया हां, निस्सन्देह वे तो मेरे पड़ोसी हैं और साथ वाले मकान में रहते हैं।

हॉलैंड में भी ऐसा ही अनुभव हुआ हमने वहाँ कुछ बच्चों से पूछा "बच्चो क्या बता सकते हो कि "मस्जिद अहमदिया" कहां है? वे बोले "मस्जिद अहमदिया" वाह यह कोई बात है मस्जिद तो क़रीब ही है। आइए हमारे साथ आइए।"

ऐसी घटनाएं बार-बार और एक निरंतरता के साथ हुईं और इस ढंग से हुईं हैं कि मेरे लिए यह कहना असंभव हो गया है कि मैं इन्हें मात्र संयोग या घटना कह कर टाल दूँ।

दुआ के बारे में सय्यिदिना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] फ़रमाते हैं-

"दिन हो या रात दुआ तो हमारी रूह का भोजन है। जिस प्रकार जीवन के लिए शरीर को आक्सीजन की आवश्यकता होती है इसी प्रकार रूह भी दुआ के बिना ज़िन्दा नहीं रह सकती।"

(एक मर्दे ख़ुदा पृष्ठ-348 से 351)

आप[रह०] फ़रमाते हैं-

मुझे याद है घाना में एक चीफ़ को मेरे हाथ सच को स्वीकार करने की सामर्थ्य मिली। इससे पूर्व वह धर्म की दृष्टि से ईसाई थे। नर सन्तान की हस्रत दिल में लिए फिरते थे। दो बार उनकी पत्नी का गर्भपात हो चुका था और अब वह निराश हो चुके थे। उन्होंने मुझे दुआ के लिए कहा। कहने लगे कि दुआ करें कि ख़ुदा तआला मुझे बेटा दे और मेरी पत्नी भी स्वस्थ और कुशलता से रहे। मैंने चीफ़ और उसकी पत्नी के लिए बड़े विनय और दर्द से दुआ की और उन्हें लिखा कि अल्लाह तआला मेरी और उनकी दुआओं को अवश्य स्वीकारिता से सम्मानित करेगा। कुछ समय के पश्चात उनकी ओर से सूचना मिली कि ख़ुदा तआला ने दुआएं सुन ली हैं और उन्हें एक स्वस्थ बेटा दिया है।"

आप[रह०] फ़रमाते हैं-

"जब भी कोई मुश्किल सामने आए तो आप ख़ुदा

के सामने दुआ में लग जाएँ। यदि आप दुआ करने को अपनी आदत बना लें तो हर मुश्किल के समय आप को आश्चर्यजनक तौर पर ख़ुदा की सहायता मिलेगी। और यह वह बात है जो मेरी सम्पूर्ण आयु का अनुभव है। अब जबकि मैं बुढ़ापे की आयु को पहुँच गया हूं तो मैं यह बताता हूं कि जब भी आवश्यकता पड़ी और मैंने ख़ुदा के समस्त दुआ की तो मैं कभी असफ़ल नहीं हुआ। अल्लाह तआला ने हमेशा मेरी दुआ स्वीकार की।"

(अलफ़ज़्ल 5 अगस्त 1999 ई.)

नमाज़ की अनिवार्यता और ख़ुदा से संबंध

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] के प्राइवेट सेक्रेटरी मुकर्रम मुनीर अहमद जावेद साहिब लिखते हैं-

आप को नमाज़ से इतना इश्क था कि सामान्य आदमी उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता। आप बीमारी में कमज़ोरी के बावजूद खड़े होकर नमाज़ अदा करते रहे। अन्तिम बीमारी में अत्यधिक कमज़ोरी के बावजूद आप जिस प्रकार सहारा लेकर और छोटे-छोटे क़दम उठाते हुए बुयूतुज़्ज़िक्र (मस्जिद) में नमाज़ पढ़ने के लिए आते उसे तो जमाअत कभी भुला नहीं सकती। आप कभी भी नमाज़ को कज़ा नहीं होने देते थे।

हुज़ूर "हज़र" में होते और मौसम चाहे सर्द होता या गर्म, वर्षा हो रही होती या बर्फ़बारी का दृश्य होता तो आप किसी भी प्रकार की परवाह किए बिना हमेशा खान-ए-ख़ुदा में जाकर नमाज़ अदा किया

करते थे। सफरों में नमाज़ पढ़ने का हाल भी सुन लें। नार्वे के एक सफ़र के बीच हमने अत्यन्त सर्दी में पानी के जहाज़ के खुले डैक पर भी आप के पीछे नमाज़ अदा की हुई है, और इसी प्रकार प्रचंड गर्मी और मच्छरों के आक्रमण के समय अलास्का में भी नमाज़ पढ़ी हुई है। यूरोप के सफरों में सड़क के किनारे उचित स्थान देख कर नमाज़ों के लिए रुकने का निर्देश हमेशा जारी रहा। आप कभी नमाज़ को कज़ा नहीं होने देते थे। आप का जीवन तो

قُرَّةُ عَيْنِيْ فِي الصَّلٰوةِ

का नमूना था कि मेरी आँखों की ठण्डक नमाज़ में है।

(माहनामा तहरीक जदीद सय्यिदिना ताहिर नम्बर, पृष्ठ-56)

आप की इबादते इलाही और नमाज़ के शौक़ की एक रुचिकर घटना नीचे दर्ज की जाती है। आप फ़रमाते हैं-

मुझे वह क्षण बहुत प्यारा लगता है कि एक बार लन्दन में New Year's Day के अवसर पर सामने आया अर्थात अगले दिन नया वर्ष चढ़ने वाला था और ईद का दृश्य था। रात के बारह बजे सारे लोग ट्रेफाल्गर स्क्वायर (Trafalgar Square) में एकत्र होकर दुनिया की निर्लाज्जत्ताओं में व्यस्त हो जाते हैं। क्योंकि जब रात के बारह बजते हैं तो फिर वे यह समझते हैं कि अब कोई सभ्यता संबंधी रोक नहीं, कोई धार्मिक रोक नहीं, हर प्रकार की आज़ादी है। उस समय संयोग से वह रात बोस्टन स्टेशन पर आई। मुझे विचार आया जैसा कि हर अहमदी करता है इसमें मेरा कोई विशेष पृथक स्थान नहीं था। अधिकतर अहमदी अल्लाह की कृपा से हर वर्ष का नया दिन इस प्रकार शुरू करते हैं कि रात के बारह बजे इबादत करते हैं। मुझे भी अवसर मिला। मैं भी वहाँ

खड़ा हो गया। अखबार के कागज़ बिछाए और दो नफ़िल पढ़ने लगा। कुछ देर के बाद मुझे यूं महसूस हुआ कि कोई व्यक्ति मेरे पास आकर खड़ा हो गया है और फिर नमाज़ अभी मैंने समाप्त नहीं की थी कि मुझे सिक्योरिटी की आवाज़ आई। अतः नमाज़ से निवृत होने के बाद मैंने देखा कि वह एक बूढा अंग्रेज़ है जो बच्चों की तरह बिलख-बिलख कर रो रहा है। मैं घबरा गया। मैंने कहा पता नहीं यह समझा है मैं पागल हो गया हूं। इसलिए शायद बेचारा मेरी हमदर्दी में रो रहा है। मैंने उस से पूछा कि तुम्हें क्या हो गया है तो उसने कहा मुझे कुछ नहीं हुआ, मेरी क़ौम को कुछ हो गया है। समस्त क़ौम इस समय नए वर्ष की ख़ुशी में निर्लज्जता में व्यस्त है और एक आदमी ऐसा है जो अपने रब्ब को याद कर रहा है। इस चीज़ ने और इस तुलना में मेरे दिल पर इतना प्रभाव किया है कि मैं सहन नहीं कर सका, अतः वह बार-बार कहता था-

God Bless You God Bless You God Bless You God Bless You

(ख़ुदा तुम्हें बरकत दे, ख़ुदा तुम्हें बरकत दे, ख़ुदा तुम्हें बरकत दे, ख़ुदा तुम्हें बरकत दे)

(ख़ुत्बा जुम्अः 20 अगस्त 1982,
अलफ़ज़्ल रब्वाह 31 अक्टूबर 1983 में प्रकाशित)

आँखों की काया पलटनी आरंभ हुई

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] ने 20 जुलाई 1986 के ख़ुत्बा जुम्अः में वर्णन किया-

"ढाका के एक अहमदी दोस्त अपने एक दोस्त के

बारे में जो अहमदी नहीं लिखते हैं कि मैं उनको सिलसिले का लिट्रेचर भी देता रहा और कैसैटस भी सुनाता रहा जिस से धीरे-धीरे उनका दिल बदलने लगा। जमाअत के लिट्रेचर से संबद्धता पैदा हो गई और वह शौक़ से लिट्रेचर मांग कर पढ़ने लगे इस बीच उनकी आँखों को ऐसी बीमारी लग गई कि डाक्टरों ने यह कह दिया कि तुम्हारी आँखों की रोशनी जाती रहेगी और जहां तक सांसारिक विद्या का संबंध है हम कोई माध्यम नहीं पाते कि तुम्हारी आँखों की रोशनी को बचा सकें। इस का हाल जब उसके ग़ैर अहमदी दोस्तों को मालूम हुआ तो उन्होंने बुरा भला कहना आरंभ कर दिया और यह कहने लगे और पढ़ो अहमदियत की पुस्तकें। ये अहमदियत की पुस्तकें पढ़ कर तुम्हारी आँखों में जो जहन्नुम दाख़िल हो रहा है उसने तुम्हारी रोशनी को भस्म कर दिया है। यह उसका दण्ड है जो तुम्हें मिल रहा है। उन्होंने इसका ज़िक्र बड़ी बेक़रारी से अपने अहमदी दोस्त से किया उन्होंने कहा कि तुम बिल्कुल इत्मीनान से रहो तुम भी दुआ करो मैं भी दुआ करता हूं और अपने इमाम को भी दुआ के लिए लिखता हूं और फिर देखो अल्लाह किस प्रकार तुम पर फ़ज़ल उतारता है। अत: कहते हैं कि इस घटना के बाद कुछ दिन के अन्दर-अन्दर उनकी आँखों की काया पलटनी आरंभ हुई और देखते-देखते सब रोशनी वापस आ गई। जब दूसरी बार डॉक्टर को दिखाने गए तो डॉक्टर ने कहा

कि इस ख़तरनाक बीमारी का कोई भी निशान मैं शेष नहीं देखता।"

(परिशिष्ट माहनामा ख़ालिद रब्वाह जुलाई 1987 ई.)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क्या ही ख़ूब फ़रमाया है-

ग़ैर मुमकिन को यह मुमकिन में बदल देती है
ऐ मेरे फ़लसफ़ियो ज़ोरे दुआ देखो तो

युग के फ़िरऔन ज़ियाउलहक़ की असफ़लता, हुज़ूर कुशलतापूर्वक लन्दन पहुंच गए

फ़िरऔन-ए-ज़माना सदर पाकिस्तान जनरल ज़ियाउलहक़ ने अहमदियों के विरुद्ध 26 अप्रैल 1984 जुमेरात के दिन एक ऐसा आर्डिनेन्स पास किया जिससे अहमदियों की धार्मिक स्वतंत्रता छीन ली गई। अवज्ञा की स्थिति में कठोर दण्ड का क़ानून था।

ऐसी परिस्थितियां पैदा कर दी गईं कि पाकिस्तान में रहते हुए समय का ख़लीफ़ा अपना निर्धारित कर्तव्य किसी प्रकार से भी अदा नहीं कर सकता।

बात केवल यहां तक ही सीमित नहीं थी अपितु ज़ियाउलहक़ ने आप की गिरफ़्तारी का पूरा प्लान तैयार कर लिया था और आपकी गिरफ़्तारी किसी भी समय हो सकती थी। ऐसी परिस्थितियों में आप का पाकिस्तान से निकल जाना ही अच्छा था। वास्तव में यह ख़ुदाई तक़दीर थी। ज़ियाउलहक़ की असफलता और आप की हिजरत की घटना संक्षेप में नीचे दर्ज की जाती है-

उन दिनों जमाअत अहमदिया के मुख्यालय रब्वाह की कड़ी

निगरानी की जा रही थी। यह निगरानी जनरल ज़ियाउलहक़ के पांच विभिन्न ख़ुफ़िया संगठन कर रहे थे। रब्वाह आने जाने वाले समस्त मार्गों पर इन ख़ुफ़िया संगठनों के कार्यकर्ता हर समय मौजूद रहते थे। इन लोगों की पहचान कुछ मुश्किल भी नहीं थी। एक संगठन पाकिस्तान की थल सेना से संबंध रखता था। इस संगठन के कार्यकर्ताओं ने फ़कीरों का भेष बदला हुआ था। परन्तु मालूम होता है कि विश्व इतिहास में अकेले यही ऐसे फ़कीर रह गए थे जिन्होंने अपने फ़कीरों वाले लिबास के साथ मिलिट्री के विशेष प्रकार के भारी भरकम बूट भी पहन रखे थे।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] इस बात पर अड़े थे अपितु यह उनका सख़्त आदेश था कि उनकी रवानगी के बारी में किसी प्रकार की ग़लत बयानी या संदिग्ध बात से कदापि काम न लिया जाए और वह स्वयं न तो कोई भेष बदलेंगे और न ही किसी अन्य पासपोर्ट पर सफर करेंगे। यद्यपि जनरल ज़ियाउलहक़ के ख़ुफ़िया संगठन किसी सुधारणा (ख़ुशफ़हमी) का शिकार हो जाएं तो वे जानें और उन का काम।

(29 अप्रैल 1984 ई.) नमाज़ फ़ज्र के बाद प्रातः (हज़रत) ख़लीफ़ा चतुर्थ[रह०] की कार रब्वाह से रवाना होती हुई दिखाई दी। कार की पिछली सीट पर एक साहिब बिराजमान थे। वह (हज़रत) ख़लीफ़ा चतुर्थ[रह०] के नियमित लिबास में थे अर्थात् अचकन पहने हुए थे। उन्होंने पंजाबी ढंग की तुर्रेदार सफ़ेद पगड़ी जो सुनहरी कुले पर बंधी हुई थी पहन रखी थी। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] का दैनिक सुरक्षा दस्ता उनके साथ था एक कार उनकी कार के आगे

और दो कारें उनकी कार के पीछे चल रही थीं। उन कारों में उन का सुरक्षा दस्ता सवार था जिसके एक-एक व्यक्ति को ख़ुफ़िया संगठन ख़ूब जानते पहचानते थे। और उन में हर व्यक्ति अपनी-अपनी सीट पर बैठा हुआ साफ़ दिखाई दे रहा था।

राह चलते इक्का-दुक्का अहमदियों ने जब इस काफ़िले को रवाना होते हुए देखा तो यही समझा कि (हज़रत) ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह॰] दो सौ मील दूर इस्लामाबाद जा रहे हैं। रब्वाह की निगरानी पर नियुक्त पांच सरकारी ख़ुफ़िया संगठनों में से चार ख़ुफ़िया संगठनों का अनुमान भी यही था। उन संगठनों ने अपने उच्चाधिकारियों को रिपोर्ट भिजवाई कि (हज़रत) ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह॰] इस्लामाबाद जाने के लिए रब्वाह से रवाना हो गए हैं और उन के काफ़िले का दैनिक कार्यक्रम के अनुसार पीछा किया जा रहा है-------

परन्तु इस कार की पिछली सीट पर (हज़रत) ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह॰] नहीं अपितु उनके तीसरे बड़े भाई (साहिबज़ादा) डॉक्टर मिर्ज़ा मुनव्वर अहमद बैठे हुए थे। (साहिबज़ादा) मिर्ज़ा मुनव्वर अहमद के काफ़िले की रवानगी से बहुत पहले रात के दो बजे मुंह अँधेरे दो कारें रब्वाह से रवाना हो चुकी थीं। ये कारें पहले तो एक निचले रास्ते से लालियाँ पहुँची जो एक छोटा सा क़स्बा है। फिर वहाँ से ज़िले का मुख्यालय झंग और अंत में कराची जाने वाली शाहराह (राजमार्ग) पर कराची के लिए सफ़र पर चल पड़ीं। रब्वाह से कराची की यह दूरी 750 मील है। इन दो कारों में से पहली कार में (हज़रत) ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह॰] का विशेष सुरक्षा का दस्ता था जबकि दूसरी कार में (हज़रत) ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह॰] स्वयं बिराजमान थे।----

अगले दिन थल सेना के जासूस यूनिट की ओर से उच्चाधिकारियों को रिपोर्ट पहुँची कि (हज़रत) ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] को झंग की ओर जाती हुई एक कार में देखा गया है। संभव है वह कराची जा रहे हों। परन्तु इस रिपोर्ट की ओर कोई ध्यान न दिया गया। क्योंकि शेष चार विभागों की ओर से दी गई संयुक्त सूचना यह थी कि (हज़रत) ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] अपने सुरक्षा दस्ते के साथ इस्लामाबाद जा रहे हैं और रास्ते में उन्होंने अपने चचाज़ाद भाई के यहां रात गुज़ारी है।-------

यद्यपि उस समय तो इस बात की जानकारी नहीं हो सकी थी परन्तु कई माह बाद जाकर पता चला कि इस अवसर पर (हज़रत) ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] किस प्रकार गिरफ़्तार होते-होते बाल-बाल बच गए।

एअरपोर्ट के पासपोर्ट कंट्रोल के सामने जनरल ज़ियाउलहक़ का अपने हस्ताक्षरों से जारी किया हुआ एक आदेश पत्र पड़ा हुआ था। यह आदेश-पत्र देश के समस्त समुद्री और थल मार्गों और गुज़रगाहों तक पहुँच चुका था। आदेश-पत्र के शब्द ये थे-

"मिर्ज़ा नासिर अहमद को जो अपने आप को जमाअत अहमदिया का ख़लीफ़ा कहते हैं पाकिस्तान की ज़मीन छोड़ने की हरगिज़ इजाज़त नहीं।"

इसलिए कराची एयरपोर्ट पर जहाज़ की रवानगी में कुछ विलम्ब हुआ तो कुछ आश्चर्य की बात न थी। जनरल ज़िया का (हज़रत) ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय से अधिकतर वास्ता पड़ता रहा था। इसलिए उसने ग़लती से हुक्मनामः पर (हज़रत) मिर्ज़ा नासिर अहमद का नाम अपने हाथ से लिख दिया!

जनरल ज़ियाउलहक़ ने पाबंदी लगाई थी तो (हज़रत) ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय पर जो इस पाबंदी के लगने से दो वर्ष पूर्व स्वर्ग सिधार चुके थे।

(हज़रत) ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] के पासपोर्ट पर स्पष्टतापूर्वक लिखा हुआ था कि इन का नाम (हज़रत) मिर्ज़ा ताहिर अहमद है और यह कि वह विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के इमाम हैं।

एयरपोर्ट पर प्रतीक्षा की इन लम्बी घड़ियों के मध्य पासपोर्ट कंट्रोल आफ़िसर की व्यस्तता और भाग-दौड़ भी देखने योग्य थी। इस उलझन के हल के लिए इस्लामाबाद से निरंतर सम्पर्क किया जा रहा था। परन्तु वास्तविकता यह है कि इस गुत्थी को सुलझाने के लिए यदि कोई अधिकार रखने वाला अफ़सर मिलता भी तो किस प्रकार और वह भी सुबह के दो बजे। ड्यूटी पर उपस्थित स्टाफ़ ने उत्तर में यही कहा कि मालूम होता है कि यह कोई पुराना आदेश है जो शायद अब अवधि से गुज़र चुका है। बहरहाल प्रमाणित सूचना यही है कि (हज़रत) ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] रब्वाह से इस्लामाबाद जाने के लिए रवाना हो चुके हैं और अब इस्लामाबाद पहुँचने ही वाले हैं। अन्ततः जहाज़ को उड़ने की इजाज़त दे दी गई।

(30 अप्रैल को) आप साढ़े बारह बजे से थोड़ा पहले मस्जिद फ़ज़्ल लन्दन पहुंच गए। न्यूनाधिक तीन सौ अहमदी आप के स्वागत के लिए मौजूद थे जो आप के आने की ख़बर सुन कर खिंचे चले आए थे।

आप की हिजरत की सूचना पूरी दुनिया में फैल गई। जनरल ज़ियाउलहक़ तो यह ख़बर सुन कर गुस्से से पगला गया------

जनरल ज़ियाउलहक़ को विश्वास था कि वह जमाअत अहमदिया

का गला घोंट कर रख देगा। परन्तु यह सब कुछ उसकी कोशिश और इच्छा के विपरीत हुआ और उसने इस तहरीक को उन्नति करने और फलने-फूलने का एक अदभुत अवसर उपलब्ध कर दिया। लन्दन आज भी अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क और मेल-मिलाप के लिए एक अत्यन्त व्यस्त केन्द्रीय गुज़रगाह की हैसियत रखता है।

(एक मर्दे ख़ुदा पृष्ठ 292 से 306)

फ़िरऔन ज़माना ज़ियाउलहक़ की मौत और हुज़ूर का ख़ुदा से संबंध

बदनाम-ए-ज़माना डिक्टेटर जनरल ज़ियाउलहक़ ने जब अहमदियों पर अत्याचार और अन्याय को चरम तक पहुंचा दिया तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] ने उसे मुबाहले का चैलेन्ज दिया। हुज़ूर ने उसे संबोधित करके फ़रमाया कि यदि तुम अपना अत्याचार रोक दो तो हम समझेंगे कि तुमने मुबाहले से इन्कार कर दिया है। आप ने उसे ख़ुदा का भय दिलाया और अत्याचार को रोकने के लिए कहा। 12 अगस्त 1988 ई. के ख़ुत्बा जुम्अः में (हज़रत) ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] ने घोषणा की कि जनरल ज़ियाउलहक़ ने शब्दों, मायनों तथा क्रियात्मक किसी रूप में भी अहमदियों पर किए जाने वाले अत्याचारों पर शर्मिन्दगी व्यक्त नहीं की। अब मामला अल्लाह तआला के सुपुर्द है। हम उसकी क्रियात्मक गवाही के प्रतीक्षक हैं। आपने खुले शब्दों में घोषणा की-

"अब जनरल ज़ियाउलहक़ अल्लाह तआला की गिरफ़्त और उसके अज़ाब से बचकर नहीं जा सकता।"

17 अगस्त 1988 को जनरल ज़ियाउलहक़ एक अमरीकी टेंक का परीक्षात्मक अनुभव देखने बहावलपुर गए थे। तीसरे पहर साढ़े तीन बजे के क़रीब अपने विशेष जहाज़ C130 हरक्युलिस पर बैठकर वापस रवाना हुए। बहावलपुर से छः मील दूर दरिया के किनारे किसान खेतों में काम कर रहे थे। उन्होंने एक हवाई जहाज़ को हवा में डगमगाते हुए देखा जो लहरों की चपेट में फँसी समुद्री कश्ती की तरह हिचकोले खा रहा था। तीसरी कलाबाजी खाने के बाद जहाज़ सीधा पृथ्वी पर आ गिरा। गिरते ही रेतीली ज़मीन में धंस गया और एक धमाके के साथ शोलों की लपेट में आ गया। इकत्तीस के इकत्तीस आदमी जो जहाज़ में सफर कर रहे थे पल भर में मौत का निवाला बन गए।

(हज़रत) ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] ने दूसरे दिन अपने जुम्अः के ख़ुत्बे में फ़रमाया-

"ख़ुदा तआला ने फ़ैसला कर दिया।"

आपने तो जनरल ज़ियाउलहक़ को ख़ुदा तआला के प्रकोप और क्रोध से सावधान किया था परन्तु ज़ियाउलहक़ ने उस चेतावनी को ध्याननीय न समझा तो पृथ्वी और आकाश के मालिक की प्रकोपी चमकार ने उसके परखचे उड़ा दिए और उन जनरलों को भी तबाह-व-बर्बाद कर दिया जो सत्ता के इस अनुचित और बेधड़क इस्तेमाल में उसके सहयोगी थे।

(हज़रत) ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] ने अतिरिक्त फ़रमाया-

"इसके बावजूद किसी दुश्मन की मौत पर ख़ुशी भी नहीं होनी चाहिए।"

(एक मर्दे ख़ुदा पृष्ठ 377 से 384)

कैदियों की रिहाई के लिए विशेष दुआ

कैदियों की रिहाई की एक घटना प्रस्तुत है-

सक्खर और साहीवाल के कैदियों की रिहाई हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] विवशता की हालत में की जाने वाली दुआओं के परिणामस्वरुप हुई। हुज़ूर अन्वर 1991 के जल्सा सालाना क़ादियान पर पधारे। जब हुज़ूर अन्वर अपना दौरा पूर्ण करके वापस लन्दन आए तो यहां स्वागत करने वाले अहबाब को संबोधित करते हुए फ़रमाया-

मैं लन्दन वापस आने के लिए क़ादियान से देहली आ चुका था और 10 जनवरी का जुम्अः देहली में पढ़ाना था। फिर मैंने फ़ैसला किया कि Friday The 10th का जुम्अ है मुझे क़ादियान वापस जाकर यह जुम्अः पढ़ाना चाहिए और उसमें कैदियों की रिहाई के लिए विशेष दुआ करनी चाहिए। अतः मैं क़ादियान वापस गया और जुम्अः वहां पढ़ाया और असीरों (कैदियों) की रिहाई के लिए बहुत दुआ की। अगले दिन शनिवार के दिन अभी हम अमृतसर स्टेशन पर गाड़ी की प्रतीक्षा में बैठे थे कि मुझे ख़बर मिल गई कि सक्खर के कैदी रिहा हो गए हैं।

★फिर जब साहीवाल के क़ैदी 1994 में रिहा हुए और यह ख़बर यहाँ नमाज़ ज़ुहर से पूर्व हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] की सेवा में पहुंची हुज़ूर नमाज़ ज़ुहर पढ़ाने के लिए आए और नमाज़ ज़ुहर के बाद खड़े होकर अहबाब से सम्बोधित होकर फ़रमाया कि

"आज साहीवाल के क़ैदी दस साल बाद रिहा हो गए हैं।"

हुज़ूर ने फ़रमाया- मैंने इस रमज़ान में इन क़ैदियों के लिए विशेष दुआ की थी कि हे मेरे अल्लाह! अगला रमज़ान इन क़ैदियों

को जेल में न आए।"

अतः यह दुआ इतनी जल्दी और इस शान के साथ स्वीकार हुई कि इस दुआ के कुछ दिन बाद ही ये क़ैदी रिहा हो गए।

(अलफ़ज़्ल इंटरनेशनल 25 सितम्बर 2015 से
1 अक्टूबर 2015 पृष्ठ 14 से उदधृत)

दुआ की स्वीकारिता की अत्यन्त ईमानवर्धक घटना

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह.] ने अपने एक भाषण में दुआ की स्वीकारिता की अत्यन्त ईमानवर्धक घटना वर्णन की। हुज़ूर फ़रमाते हैं-

> मैं जब घाना पहुंचा तो वहाँ के एक चीफ नाना ओजिफ़ो साहिब जो ईसाई धर्म से संबंध रखते थे। वह पहली रात मुझे मिलने के लिए आए और नमाज़ के बाद मज्लिस में उन्होंने इस इच्छा को व्यक्त किया कि आप के हाथ पर बैअत करना चाहता हूं। जब मैंने मुरब्बी साहिब से कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि यह (चीफ) एक भ्रमपरस्त काहिन क़ौम से संबंध रखते हैं इनकी पत्नी का गर्भ हर वर्ष नष्ट हो जाता था वह ईसाई पादरियों और दम फूंकने वालों के पास गए। कोई लाभ न हुआ। जब हर ओर से निराश हो गए तो इमाम बहाब आदम साहिब के पास आए और कहा कि-

"मैं हूं तो ईसाई परन्तु मुझे ईसाइयत पर से दुआ का विश्वास समाप्त हो गया है। मैंने सुना है कि ख़ुदा आप लोगों की दुआएं

स्वीकार करता है। आप अपने इमाम को मेरी ओर से सब परिस्थितियां बता कर लिखें कि हमारे लिए दुआ करें अतः वहाब साहिब ने उन का पत्र मुझे भिजवाया मैंने उनको उत्तर लिखा कि आपको बच्चा प्राप्त होगा और बहुत ही सुन्दर और आयु पाने वाला बच्चा होगा। तो जब उनकी पत्नी को गर्भ हुआ तो डाक्टरों ने कहा कि न केवल यह बच्चा मर जाएगा अपितु पत्नी को भी ले मरेगा। इसलिए तुम इसका गर्भपात करा दो। उस चीफ़ ने कहा हरगिज़ नहीं। मुझे जमाअत अहमदिया के इमाम का पत्र आया है। न मेरी पत्नी को कुछ हानि पहुँचेगी और न मेरे बच्चे को हानि पहुँचेगी। फिर अल्लाह तआला ने उनको अत्यन्त सुन्दर स्वस्थ बच्चा प्रदान किया और उनकी बेगम साहिबा भी ठीक ठाक रहीं। दुआ की स्वीकारिता के इस निशान को देख कर उनकी इच्छा थी कि मेरे हाथ पर बैअत करें। इसलिए वह देर करते रहे।

(अलफ़ज़्ल इंटरनेशनल 25 सितम्बर 2015 से
1 अक्टूबर 2015 पृष्ठ 15 से उदधृत)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला की ईमानवर्धक घटनाएं

ख़िलाफ़त अहमदिया के पांचवें ताजदार और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पड़पोते और हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब के पोते और हज़रत मुस्लिह मौऊद के नवासे हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ हैं।

आप भी رَجُلٌ और رِجَالٌ مِنْ هٰؤُلاءِ के चरितार्थ और सय्यिदिना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निम्नलिखित प्रतिष्ठित कश्फों और इल्हामों के चरितार्थ और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई के प्रकाशमान निशान हैं-

(1)- "शरीफ़ अहमद को स्वप्न में देखा कि उसने पगड़ी बाँधी हुई है और दो आदमी पास खड़े हैं। मैंने शरीफ़ अहमद की ओर संकेत करके कहा कि-

वह बादशाह आया

दूसरे ने कहा कि अभी तो इसने क़ाज़ी बनना है

फ़रमाया क़ाज़ी हकम को भी कहते हैं। क़ाज़ी वह है जो सच की सहायता करे और झूठ का खण्डन करे।

(बद्र जिल्द-6 न.-11, दिनांक 10 जनवरी 1907, पृष्ठ-3)(तज़्किर: पृष्ठ-584)

(2)- और

اِنِّی مَعَکَ یَامَسْرُوْرُ

(तज़्किर:-पृष्ठ 630, बद्र जिल्द-6 न.-51, 19 दिसम्बर 1907 पृष्ठ-4,5)

अर्थात् हे मसरूर मैं तेरे साथ हूं। और "अब तू हमारे स्थान पर बैठ और हम चलते हैं।"

(बद्र जिल्द-6 न.-201, 10 जनवरी 1907 पृष्ठ-2, तज़्किर:- पृष्ठ-401)

आप के मुबारक दौर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ये इल्हाम भी अदभुत शान से पूरे हुए।

يدعون لك ابدال الشام و عباد الله العرب

अर्थात् तेरे लिए शाम के अब्दाल दुआ करते हैं और अरब के ख़ुदा के बन्दे दुआ करते हैं। और

يصلون عليك صلحاء العرب و ابدال الشام

अर्थात् अरब के सुलहा और शाम के अब्दाल तुझ पर दरूद भेजते हैं।

अल्लाह तआला ने अपनी तक़्दीर के अन्तर्गत अरब देशों में तब्लीग़ और अहमदियत के प्रसार के लिए आकाशीय दरवाज़े खोल दिए। इस बारे में ईमानवर्धक घटना दर्ज की जाती है-

"जनाब मुनीर महमूद साहिब वर्णन करते हैं कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ[रह०] ने एक बार अरबों के लिए अरबी भाषा में भाषण रिकार्ड कराने का भी इरादा किया परन्तु यह आदेश दिया कि मेरा विचार है कि अभी इस का समय नहीं आया। दूसरी ओर जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह को अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त के लिबास से गौरवान्वित किया तो हुज़ूर अन्वर ने फ़रमाया कि मेरे काल में अरबों में प्रचार के लिए मार्ग खुलेगा और अरबों में अहमदियत अन्दर दाख़िल होगी' --------अतः हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह के मुबारक काल में अब तक के पौने

आठ साल के बीच केवल अरबों में तब्लीग़ के हवाले से ख़ुदा तआला की तक़्दीर के अनुसार जो अहम् कार्य हुए----------यह स्पष्ट विजय और यह उन्नति बता रही है कि हुज़ूर अन्वर के ये शब्द "मेरे काल में अरबों में तबलीग़ के लिए मार्ग खुलेगा और अरबों में अहमदियत जारी होगी।" ख़ुदा तआला की ओर से ख़ुशखबरी थी जिसके पूरा होने के हम गवाह हैं।

(मसालिहुल अरब जिल्द-2 पृष्ठ-349 से 351)

प्रोग्राम "अलहुवारुलमुबाशिर" में 27 मई 2008 का दिन एक बहुत ही बरकत वाला दिन है। इस दिन सय्यिदिना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह स्वयं इस प्रोग्राम में आए और अपने मुबारक अस्तित्व से उसे बरकत और शोभायमान किया।

इसके बाद 8 जून 2008 के दिन इस माह के "अलहुवारुल मुबाशिर" का अन्तिम Episode था। हुज़ूर इस प्रोग्राम में आए और लगभग 16 मिनट तक रहे और अरबों को ख़िताब फ़रमाया।

हुज़ूर अन्वर के इस ख़िताब के बारे में एक ग़ैर जमाअत के दोस्त जनाब इमाद अब्दुल बदीअ साहिब मिस्र ने लिखा-

"मैं टी.वी. के आगे बहुत कम बैठता था परन्तु बीमारी के कारण मैं एक दिन बैठा विभिन्न चैनल बदल रहा था कि अचानक आप का यह चैनल मिल गया। मुझे एक खज़ाना मिल गया। यदि मेरी बीमारी न होती तो शायद इस खज़ाने से वंचित रहता। इस पर मैं ख़ुदा तआला का कृतज्ञ हूं क्योंकि मेरे मस्तिष्क में धर्म के बारे में बहुत से प्रश्न पैदा होते थे जिनका उत्तर मुझे कभी भी न आता था

और कोई मेरी तसल्ली न कराता था। ख़ुदा गवाह है कि यह चैनल और इसको चलाने वाले नेक लोग मेरे दर्द की दवा बन गए यहां तक कि मैं सख्त बीमारी की सब तकलीफ़ें भूल कर ख़लीफ़तुल महदी के प्रेम से मजबूर होकर इन्टरनेट कैफ़े गया हूं ताकि यह पत्र भेजूं। आप का चैनल इस दुनिया में आशा की एकमात्र किरण है। आप के पास मुहम्मदी वरदान का खज़ाना है।

जब हुज़ूर अन्वर "अलहुवारुल मुबाशिर" में आए तो उस दोस्त ने लिखा-

"इस बार जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह स्टूडियो में पधारे तो मैं अपनी भावनाओं को कंट्रोल नहीं कर सका और फूट-फूट कर रोना शुरू कर दिया। मुझे यों महसूस हुआ कि मैं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा की मज्लिस में मौजूद हूं और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक युग में हूं। मैं सब तकलीफ़ और दर्द भूल गया। आप के प्रोग्राम बहुत सुन्दर और चित्ताकर्षक हैं और ये अंधकारों को प्रकाशमान करने वाले हैं।

(मसालिहुल अरब जिल्द-2 पृष्ठ-431,432)

अतः सय्यिदिना हुज़ूर अन्वर के ख़िलाफ़त काल में अरबों में तबलीग़ रूहानी खज़ायन का अरबी अनुवाद अरबी में लाइव प्रोग्राम, एम.टी.ए. अल अरबिय्यः 3 का उद्घाटन और आप का अरबी में भाषण ये दो ईमानवर्धक घटनाएं हैं जो हमारे ईमानों में उन्नति का कारण और ख़िलाफ़त अहमदिया के ख़ुदा की ओर से होने के ज़िन्दा प्रकाशमान सबूत हैं। इस पर ख़ुदा की हर प्रकार की प्रशंसा।

दुआ के स्वीकार होने का एक ज़िन्दा और भुलाई न जाने वाली घटना

4 मई 2008 ई. वीरवार का दिन था। हुज़ूर अन्वर अय्यदहुल्लाह अपने फार ईस्ट देशों के दौरों के मध्य फ़िजी में थे। रात लगभग ढाई बजे का समय था कि रब्वाह, लन्दन और दुनिया के विभिन्न देशों से फ़ोन आने शुरू हो गए कि इस समय टी.वी. पर ख़बरें आ रही हैं। उनके अनुसार एक बहुत बड़ा सुनामी तूफ़ान फ़िजी के साथ वाले द्वीपों Tonga में आया है। और यह तूफ़ान शक्ति की दृष्टि से इंडोनेशिया वाले सुनामी से बड़ा है जिसने लाखों लोगों को डुबो दिया था तथा दुनिया के कई देशों में तबाही मचाई थी। जब TV ऑन किया तो यह ख़बरें आ रही थीं कि यह सुनामी निरंतर अपनी तीव्रता और प्रचंडता से बढ़ रहा है। और सुबह के समय नान्दी फ़िजी का पूरा इलाका डुबो देगा। प्रातः साढ़े चार बजे जब हुज़ूर अन्वर अय्यदहुल्लाह फ़ज्र की नमाज़ की अदायगी के लिए आए तो हुज़ूर अन्वर की सेवा में इस तूफ़ान के बारे में रिपोर्ट प्रस्तुत हुई और जो सन्देश कुशलता मालूम करने के लिए फोन पर पहुँच रहे थे उनके बारे में बताया गया। हुज़ूर अन्वर ने फ़ज्र नमाज़ पढ़ाई और बड़े लम्बे सज्दे किए और ख़ुदा के सामने उसकी स्तुति और प्रार्थना की। नमाज़ से निवृत होकर मसीह के ख़लीफ़ा ने जमाअत के लोगों को संबोधित करके फ़रमाया कि चिंता न करें अल्लाह तआला फ़ज़्ल (कृपा) करेगा, कुछ नहीं होगा।

इसके बाद हुज़ूर अन्वर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ पुनः वापस आए वापस आकर जब हमने TV ऑन किया

तो TV पर ये ख़बरें आना शुरू हो गईं कि इस सुनामी का ज़ोर टूट रहा है और धीरे-धीरे उसकी तीव्रता समाप्त हो रही है। फिर लगभग दो-ढाई घंटे के बाद ये खबरें आ गईं कि इस तूफ़ान का अस्तित्व ही मिट गया है। तो इस दुनिया ने अदभुत दृश्य देखा कि वह सुनामी जिसने अगले कुछ घंटों में लाखों लोगों को डुबोते हुए समस्त इलाके के अस्तित्व को मिटा देना था। समय के ख़लीफ़ा की दुआ से कुछ घंटों में स्वयं उसका अस्तित्व मिट गया। उस दिन फ़िजी के अख़बारों में ये खबरें लगाईं कि सुनामी का टल जाना किसी चमत्कार से कम नहीं---------यह चमत्कार समय के ख़लीफ़ा की दुआ से प्रकट हुआ। तो आज जहां जमाअत अहमदिया की उन्नति ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से सम्बद्ध है वहाँ दुनिया का अस्तित्व भी ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से सम्बद्ध कर दिया गया है।

आज जमाअत अहमदिया का हर व्यक्ति हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इन शब्दों पर सच्चाई का गवाह बन चुका है।"

ख़ुदा की क़सम आज मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा के समर्थन में एक और भाषा बोलते हुए हमने अपनी आँखों से देखा है और अपने कानों से सुना है। ख़लीफ़तुल मसीह के हाथ को मज़बूत करने के लिए एक और हाथ को चलते हुए समस्त संसार देख रहा है और संसार के बड़े-बड़े महलों ने वर्तमान समय की परिस्थितियों ने गवाही दी है कि इस मुबारक अस्तित्व के पीछे ख़ुदा तआला का हाथ है और यह ख़ुदा तआला से समर्थित अस्तित्व है। अत: आज लोग कितने सौभाग्यशाली कि प्रतिदिन अपनी आँखों से अपने प्यारे आक़ा हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाह के महान नेतृत्व में जमाअत

की उन्नति और विजयों के दृश्यों को प्रतिदिन देख रहे हैं। अत: उठें और अपनी हर भौतिक और आध्यात्मिक (रूहानी) उन्नति के लिए ख़िलाफ़त के क़दमों में अपना सिर रख दें। स्वयं को ख़लीफ़तुल मसीह के हाथ में ऐसे दे दें जैसे नहलाने वाले के हाथ में मय्यत (शव) होती है। इसी में हमारी सफलता की प्रत्याभूति है। अल्लाह तआला इसकी सामर्थ्य प्रदान करे।

(अहमदी गज़ट कनाडा मई 2015)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह जमाअत के लोगों को दुआ करने पर ज़ोर देते हुए फ़रमाते हैं-

"याद रखो कि वह सच्चे वादों वाला ख़ुदा है वह आज भी अपने प्यारे मसीह की इस प्यारी जमाअत पर हाथ रखे हुए हैं। वह हमें कभी नहीं छोड़ेगा और कभी नहीं छोड़ेगा और कभी नहीं छोड़ेगा।

वह आज भी अपने मसीह से किए हुए वादों को उसी प्रकार पूरा करता है जिस प्रकार वह पहली ख़िलाफ़तों में करता रहा है। वह आज भी उसी प्रकार दया-दृष्टि करेगा जैसा पहले करता रहा है और इंशाअल्लाह दया-दृष्टि करता रहेगा। अत: आवश्यकता है तो इस बात की कि कहीं कोई व्यक्ति अल्लाह तआला के आदेशों का पालन न करके स्वयं ठोकर न खा जाए, अपनी आख़िरत ख़राब न कर ले। अत: दुआएं करते हुए और उसकी ओर झुकते हुए तथा उसका फ़ज़ल मांगते हुए हमेशा उसकी चौखट पर पड़े रहें और इस मज़बूत कड़े को हाथ में डाले रखें तो फिर कोई भी आप का बाल बीका नहीं कर सकता। अल्लाह तआला सब को इसकी सामर्थ्य प्रदान करे।"

(खुतबात-ए-मसरूर जिल्द-2 पृष्ठ-354)

चमत्कार पूर्ण रंग में वर्षा रुकने की घटना

2004 ई. में अफ्रीका के दौरे के बीच जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह नाइजीरिया से बेनिन पहुँचे और मिशन हाउस में पदार्पण किया तो अस्त्र का समय था। शायद मूसलाधार वर्षा हो रही थी। नमाज़ के लिए सहन में मार्की लगाई गई थी जो चारों ओर से खुली थी और वर्षा के कारण वहाँ नमाज़ पढ़ना असंभव था अपितु खड़ा होना भी कठिन था। हुज़ूर बाहर आए और नमाज़ के बारे में पूछा। अमीर साहिब ने कहा कि इस समय तो तेज़ वर्षा है और नमाज़ के लिए बाहर मार्की लगाई हुई है। परन्तु वर्षा के कारण कठिनाई हो रही है।

हुज़ूर अन्वर ने आकाश की ओर नज़र उठाई और फ़रमाया- "दस मिनट के बाद नमाज़ पढेंगे।" इसके बाद हुज़ूर अन्दर चले गए। अभी दो-तीन मिनट ही गुज़रे थे कि एक दम वर्षा थम गई। आकाश साफ़ हो गया। देखते ही देखते धूप निकल आई और उसी मार्की के नीचे नमाज़ का प्रबंध हो गया। स्थानीय लोग इस निशान पर बहुत हैरान हुए कि यहां वर्षा शुरू हो जाए तो कई-कई घंटों जारी रहती है। हुज़ूर ने दस मिनट कहा तो यह तीन मिनट में ही समाप्त हो गई और न केवल समाप्त हुई अपितु बादल भी ग़ायब हो गए।

* इसी प्रकार कनाडा के दौरे के मध्य केलगिरी मस्जिद की आधार-शिला रखी जानी थी तो एक दिन पूर्व कनाडा के अमीर साहिब ने हुज़ूर अन्वर की सेवा में निवेदन किया कि मौसमी भविष्यवाणी के अनुसार कल यहाँ का मौसम बहुत ही ख़राब है। बड़ी तीव्र वर्षा है और तूफानी हवाएं हैं और कल प्रातः मस्जिद की आधार शिला

राखी जानी है। मेहमान भी आ रहे हैं। अमीर साहिब ने दुआ की दरख़्वास्त की।

इस पर हुज़ूर अन्वर अय्यदहुल्लाह ने कुछ देर विलम्ब किया और फिर फ़रमाया-

"जिस मस्जिद की आधारशिला हम रखने जा रहे हैं वह भी ख़ुदा का ही घर है और मौसम भी ख़ुदा के हाथ में है। इसलिए इसे ख़ुदा पर छोड़ दें। अल्लाह फ़ज़्ल करेगा।"

अतः अगले दिन प्रातः वर्षा का कोई नामोनिशान नहीं था। बड़ा रुचिकर मौसम था। आधारशिला स्थापित करने का आयोजन हुआ। लगभग दो घंटे का प्रोग्राम था। आयोजन से निवृत हो कर हुज़ूर अन्वर वापसी के लिए जब अपनी कार में बैठे तो कार का दरवाज़ा बंद होते ही अचानक तेज़ वर्षा शुरू हो गई और साथ ही तीव्र हवाएं चलने लगीं जो फिर निरंतर तीन-चार घंटे जारी रहीं।

यह एक निशान था जो हुज़ूर अन्वर की दुआ से वहाँ प्रकट हुआ और हर व्यक्ति का दिल इस निशान को देखकर अल्लाह तआला के सामने सज्दे में था।

(अलफ़ज़्ल इंटरनेशनल 25 सितम्बर 2015 से 1 अक्टूबर 2015 पृष्ठ-14)

यह कैसे हुआ? यह कोई नहीं जानता

अभी दो वर्ष पूर्व की घटना है कि एक अरब देश में हमारे एक बड़े निष्कपट नई बैअत करने वाले अहमदी दोस्त को पुलिस ने केवल इस अपराध में क़ैद कर लिया कि उसने अहमदियत स्वीकार की है। उन्हें भारी बेड़ियाँ डालकर जेल में फेंक दिया गया और ज़मानत

निरस्त कर दी गई तथा मेल-मिलाप बंद कर दिया गया। अत्यन्त अत्याचारपूर्ण व्यवहार किया गया। कोई स्थानीय वकील केस लेने के लिए तैयार न था। देखने में छूटने के समस्त सांसारिक रास्ते बंद दिखाई दे रहे थे। परन्तु हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह उनके रिहा होने के लिए निरंतर दुआएं कर रहे थे। एक दिन हुज़ूर ने फ़रमाया-

"इन्शा अल्लाह यह रिहा हो जाएँगे।"

एक ओर हुज़ूर की दुआ थी दूसरी ओर छूटने के समस्त संभावित रास्ते बंद थे।

हुज़ूर अन्वर की दुआ के स्वीकार होने का निशान इस प्रकार प्रकट हुआ कि इस अरब रियासत के प्रतिनिधि ने एक आयोजन के अवसर पर कुछ क़ैदियों की रिहाई की घोषणा की। तो इन रिहा होने वाले कैदियों में पहला नाम हमारे नई बैअत करने वाले अहमदी क़ैदी का था। यह कैसे हुआ? कोई नहीं जानता। परन्तु हम यह जानते हैं कि ख़लीफ़ा के होंठ से ये शब्द निकले थे कि यह इन्शा अल्लाह रिहा हो जाएँगे।

महान निशान महान निष्कपटता को चाहते हैं। इस अरब दोस्त के लिए समय के ख़लीफ़ा की दुआ की स्वीकारिता का यह निशान यों ही प्रकट नहीं हुआ अपितु उसका कारण उनका ख़लीफ़तुल मसीह से इखलास और वफ़ा का संबंध था। जब उन्हें जेल में डाला गया तो उन्हें बार-बार कहा गया कि अहमदियत से अलग हो जाओ तो छोड़ दिए जाओगे। परन्तु उसका उत्तर था- "मैं प्राण दे दूँगा किन्तु अहमदियत नहीं छोड़ूँगा।"

इस दोस्त ने जेल से ख़लीफ़तुल मसीह की सेवा में लिखा- "मेरे इलाक़े में नौ पहाड़ हैं और उस इलाक़े का दसवां पहाड़ मैं हूं। कोई तो उनकी यह निष्कपटता थी कि समय के ख़लीफ़ा की दुआ उनके पक्ष में स्वीकार हुई। और आकाश से ख़ुदा की तक़्दीर ने उस बादशाह के क़लम से सब से पहले उस नव अहमदी अरब का नाम लिखवा दिया और समस्त सांसारिक रास्ते बंद होने पर उस मासूम की रिहाई के आकाश से सामन पैदा कर दिए।

यदि बेटा हुआ तो अहमदी हो जाऊँगा

इस वर्ष (अर्थात् 2015) जल्सा सालाना जर्मनी में बलारिया के एक निष्कपट नए अहमदी दोस्त Etem साहिब अपने परिवार के साथ सम्मिलित हुए। आप ने कुछ वर्ष पूर्व ईसाइयत से इस्लाम स्वीकार किया था। परन्तु उनकी पत्नी ने बैअत नहीं की थी।

उनकी पत्नी का कहना था कि मेरी तीन बेटियाँ हैं यदि मुझे बेटा मिल जाए तो मैं भी अहमदी हो जाऊंगी। उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह की सेवा में दुआ के लिए लिखा। अगले वर्ष जब वह दोबारा जल्से में आईं तो सात माह की गर्भवती थीं। मुलाक़ात के बीच उन्होंने बच्चे के लिए नाम रखने का निवेदन किया तो हुज़ूर अन्वर ने केवल लड़के का नाम 'ज़ाहिद' प्रस्तावित किया।

जल्से से वापस जाकर उन्होंने मुबल्लिग़ से कहा कि डॉक्टर ने बताया है कि लड़की है। इसलिए हुज़ूर अन्वर की सेवा में दोबारा निवेदन करें कि लड़की का नाम रखें। इस पर मुबल्लिग़ ने कहा कि आप ने तो कहा था कि यदि बेटा हुआ तो अहमदी हो जाऊंगी और

हुज़ूर अन्वर ने भी केवल बेटे का नाम रखा है। इसलिए इन्शा अल्लाह बेटा ही होगा। डॉक्टर जो चाहे कहें, उनकी मशीनें जो चाहें प्रकट करें परन्तु अब आप का बेटा ही होगा। क्योंकि ख़लीफ़तुल मसीह ने बेटे का नाम रखा है। यह सुन कर कहने लगीं मैं तो पहले ही अहमदी हो चुकी हूं तो जब बच्चे का जन्म हुआ तो अल्लाह तआला ने उन्हें बेटा ही प्रदान किया। वह जल्से के अवसर पर उस बेटे को साथ लेकर आई थीं और लोगों को बता रही थीं कि "देखो यह समय के ख़लीफ़ा की दुआओं के स्वीकार होने का निशान है।"

(अलफ़ज़्ल इंटरनेशनल 25 सितम्बर 2015 से
1 अक्टूबर 2015 पृष्ठ-15,17)

घाना की ज़मीन से तेल निकलेगा

हुज़ूर अन्वर अय्यदहुल्लाह जब 2004 में घाना गए तो एक अवसर पर सफ़र के मध्य हुज़ूर ने घाना वालों को ख़ुशखबरी दी कि घाना की ज़मीन से तेल निकलेगा।

अत: जब 2008 में हुज़ूर अन्वर ख़िलाफ़त जुबली के अवसर पर दोबारा घाना गए तो घाना के शासन के प्रेसीडेंट ने मुलाक़ात के बीच हुज़ूर से कहा कि हुज़ूर की हमारे देश के लिए दुआएं स्वीकार हो रही हैं। हुज़ूर ने अपने पिछले दौरे के दौरान फ़रमाया था कि 'घाना की ज़मीन में तेल है और यहाँ से तेल' निकलेगा। हुज़ूर अन्वर की यह दुआ बड़ी ही शान से स्वीकार हुई और पिछले वर्ष घाना से तेल निकल आया।

अत: इस हवाले से घाना के प्रसिद्ध नेशनल अखबार DAILY GRAPHIC ने अपने 17 अप्रैल 2008 के पर्चे में प्रथम पृष्ठ पर

हुज़ूर अन्वर और घाना के प्रेसीडेंट की मुलाक़ात की रिपोर्ट प्रकाशित करते हुए लिखा-

'ख़लीफ़तुल मसीह ने अपने घाना के दौरे 2004 के समय घाना में तेल की खोज पर बड़े ज़ोरदार तरीक़े से अपने विश्वास को अभिव्यक्त किया था और यही विश्वास पिछले वर्ष वास्तविकता में बदल गया और घाना की ज़मीन से तेल निकल आया

(अलफ़ज़्ल इंटरनेशनल 25 सितम्बर 2015 से 1 अक्टूबर 2015 पृष्ठ-17)

हुज़ूर अन्वर का अल्लाह तआला पर भरोसा

हज़रत सय्यिदा अमतुस्सुबूह साहिबा पत्नी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह लिखती हैं-

"जब हम नए-नए टिमाले (उत्तरी घाना) गए थे अभी अधिक समय नहीं हुआ था। उन दिनों अस्पताल में डाक्टरों की हडताल थी। केवल 9 बजे से 5 बजे तक डॉक्टर आते थे। इस के अतिरिक्त शेष समयों में और शनिवार, इतवार को कोई मेडिकल स्टाफ़ मौजूद न होता था। अज़ीज़म वक़्क़ास सल्लमहुल्लाह अभी केवल दो दिन का था कि उसे तीव्र प्रकार का डायरिया हो गया। नई जगह और अस्पतालों का दोषपूर्ण प्रबंध, डाक्टरों की हडताल जैसी विचित्र परेशानी की अवस्था थी। इतने छोटे बच्चे की तकलीफ़ देखी नहीं जाती थी। अज़ीज़ा फरह सल्लमहल्लाह भी उस समय छोटी ही थी। उसके लिए मैं पाकिस्तान से एक दवाई लाई हुई थी जो काफ़ी STRONG होती है जिसे डॉक्टर इतने छोटे बच्चे के लिए कभी RECOMMEND नहीं करते। परन्तु इस समय हम बहुत परेशान और चिंतित थे। हुज़ूर अन्वर ने अल्लाह

पर भरोसा करते हुए दुआ करके अपने दाएँ हाथ की एक उंगली भर कर दो बार वही दवाई अज़ीज़म वक़्क़ास को जो उस समय डायरिया से निढाल, दूध इत्यादि बिल्कुल नहीं पी रहा था यह कह कर चटाई कि अल्लाह तआला की तक़्दीर क्या है हम नहीं जानते परन्तु यह अफ़सोस तो नहीं होगा कि इलाज नहीं किया। कुछ मिनट में तबियत संभल गई और अल्लाह तआला ने चमत्कार के रंग में उसे अच्छा कर दिया। अलहम्दुलिल्लाह।"

(हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह के हवाले से सम्पादक- अताउल अलीम समर, मुद्दसिर अहमद मुज़म्मिल मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया पाकिस्तान द्वारा प्रकाशित)

(चमत्कार) पहली बार LIVE देखा है

जनाब बशारत नवीद साहिब मुरब्बी सिलसिला मारीशस लिखते हैं-

"मारीशस में हुज़ूर अन्वर अय्यदहुल्लाह के आगमन के पहले दिन जब आप नमाज़ ज़ुहर और अस्र की अदायगी के लिए अपने निवास स्थान से बैतुज़्ज़िक्र (मस्जिद) जाने के लिए बाहर निकले और काफ़िला रवानगी के लिए तैयार हो गया तो ड्यूटी पर मौजूद ख़ुद्दाम ने इलेक्ट्रानिक मेन गेट को रिमोट की मदद से खोलना चाहा परन्तु हर प्रकार की कोशिश करने के बावजूद गेट न खुला। अंत में ख़ुद्दाम गेट तोड़ने के लिए कोशिश करने लगे। परन्तु उसमें भी असफ़ल रहे। हुज़ूर अन्वर गाड़ी से बाहर आए और फ़रमाया रिमोट मुझे दें और जैसे ही आप ने रिमोट का बटन दबाया गेट खुल गया।

इस अवसर पर मौजूद एक हिन्दू पुलिस स्क्वाड सहसा बोल उठा कि चमत्कारों के बारे में सुना तो था परन्तु आज अपनी आँखों के सामने पहली बार LIVE देखा है।

(तश्हीज़ुल अज़्हान सय्यिदिना मसरूर अय्यदहुल्लाह नंबर पृष्ठ 282 सम्पादक अताउल अलीम, मुदस्सिर अहमद मुज़म्मिल मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया पाकिस्तान द्वारा प्रकाशित)

अल्लाह तआला हमारे लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के महान ख़लीफ़ाओं की कथित ईमानवर्धक घटनाएं ईमान को बढ़ाने का कारण बनाए। हमारा भी अल्लाह तआला के पवित्र अस्तित्व से ज़िन्दा संबंध सुदृढ़ और यह संबंध दिन-प्रतिदिन मज़बूत होता चला जाए। अल्लाह तआला हमें हमेशा ख़िलाफ़त की व्यवस्था से संबद्ध रखते हुए अपनी प्रसन्नता प्राप्त करने की सामर्थ्य प्रदान करता चला जाए। आमीन।